विक्रम संवत् 2080 ▪ चैत्र/वैशाख मास(02) ▪ 01 अप्रैल 2023 ▪ मूल्य : 23 रु.

चरैवेति

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

आर.एन.आई. पंजीयन क्र.017261/69, डाक पंजीयन क्र. म.प्र./भोपाल/297/2021-23, पृष्ठ संख्या-44, प्रकाशन दिनांक प्रत्येक माह की 10 तारीख, पोस्टिंग प्रत्येक माह की 10 एवं 15 तारीख

मोदी जी ने विकासवाद को आगे बढ़ाया

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का भाजपा मुख्यालय में त्रिपुरा, नागालैंड और मेघालय के परिणामों पर विजय उत्सव में अभिनंदन किया गया।

भाजपा अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी ने विभिन्न देशों के विदेश नीति विशेषज्ञों, राजनेताओं और संसद सदस्यों के चुनिंदा समूह के साथ बातचीत की।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने मेघालय, शिलांग में नव निर्वाचित प्रदेश सरकार के शपथ ग्रहण समारोह में भाग लिया।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी नागालैंड, कोहिमा में नव निर्वाचित प्रदेश सरकार के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हुए।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी अगरतला, त्रिपुरा में श्री माणिक साहा जी के शपथ ग्रहण समारोह में शामिल हुए।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने राष्ट्रपति भवन में नागरिक अलंकरण समारोह में भाग लिया।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का कर्नाटक आगमन पर भव्य स्वागत किया गया।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने नए संसद भवन का निरीक्षण किया।

अनुक्रमणिका

संपादकीय ▶ संजय गोविन्द खोचे 04

- उत्साह का नववर्ष

कवर स्टोरी : ▶ 05

- मोदी जी ने विकासवाद को आगे बढ़ाया - जे पी नड्डा

07

21

■ **सुरक्षित और समृद्ध देश :** 07
भाजपा ही कर सकती है गरीब कल्याण के साथ देश को सुरक्षित, समृद्ध बनाने...

■ **जनता का बजट :** 09
समाज के हर वर्ग के कल्याण को ध्यान में रखा गया - शिवराज सिंह चौहान
मातृशक्ति को सशक्त, प्रदेश को आत्मनिर्भर बनाने वाला है प्रदेश का बजट...

■ **लाड़ली बहना योजना :** 13
बहनों का सम्मान बढ़ाने का महायज्ञ है, लाड़ली बहना योजना - शिवराज सिंह चौहान

■ **जीत का संकल्प :** 15
कांग्रेस का मतलब - करप्शन, कमीशन और डिवीजन...

■ **भाजपा स्थापना दिवस :** 17
संगठन को युगानुकूल सामर्थ्य देने वाला नेतृत्व

■ **चुनौतियों के पार :** 19
परीक्षा की कठिन घड़ी के तीन सालों में प्रदेश ने सभी दिशाओं में नए मापदण्ड...

■ **महिला सशक्तिकरण :** 21
महिलाओं का आर्थिक सशतकरण बजट का आधार

■ **बूथ विस्तारक अभियान :** 23
हर बूथ को डिजिटल व सशक्त बनाकर इतिहास रचेंगे पार्टी कार्यकर्ता...

■ **भारत का सामर्थ्य :** 25
भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था का भरोसा...

■ **कौशल सम्मान :** 28
पीएम विश्वकर्मा योजना से कारीगरों, शिल्पकारों की बड़ी मदद होगी...

■ **इंफ्रास्ट्रक्चर से पर्यटन :** 30
मिशन मोड में पर्यटन का विकास

■ **मन की बात :** 32
परमार्थ से संकोच नहीं

■ **जयंती :** 36
सामाजिक नवोत्थान के पुरोधा महात्मा ज्योतिबा फुले

■ **इतिहास के पन्नों से :** 37
ब्रिटिश शासन के खात्मे की शुरूआत हुई जलियाँवाला बाग से

■ **जयंती :** 38
शिवाजी ने कहा मेरा नहीं धर्म का राज्याभिषेक है

■ **जयंती :** 40
कट्टर देशभक्त डॉ. भीमराव अम्बेडकर

■ **विचार प्रवाह :** 41
समाज और विचारधारा

■ मुख्य व्रत-त्यौहार

1. कामदा एकादशी व्रत 2. मदन द्वादशी 3. प्रदोष व्रत 5. रेणुका चतुर्दशी, व्रत पूर्णिमा 6. स्नानदान पूर्णिमा, भ. हनुमान प्राकट्योत्सव 8. आसों दोज 9. गणेश चतुर्थी व्रत 16. वरूथिनी एकादशी व्रत 17. प्रदोष व्रत 18. शिव चतुर्दशी व्रत 19. श्राद्ध अमावस्या 20. स्नानदान, सतुवाई अमावस 21. चन्द्रदर्शन 22. अक्षय तृतीया 23. विनायकी चतुर्थी व्रत 27. गंगा सप्तमी 29. जानकी जयंती, सीता नवमी

■ मुख्य जयंती-दिवस

1. बैंक वार्षिक लेखाबंदी 5. गुरू हरकिशन पुण्यतिथि 6. धरती पूजा 7. विश्व स्वास्थ्य दिवस 11. गुरू तेगबहादुर जयंती 13. जलियाँवाला बाग दिवस 14. वैशाखी पर्व, भुंजिया दिवस, अग्नि निरोधक दिवस 16. प्रभु वल्लभाचार्य जयंती 22. विश्व पृथ्वी दिवस 24. सत्य सांई बाबा महाप्रयाण दिवस 25. विश्व मलेरिया जागरूकता दिवस 26. रामानुजाचार्य जयंती 29. संत भूरा भगत जयंती

वर्ष-55, अंक : 02, भोपाल, अप्रैल 2023

हमारे प्रेरणास्रोत
पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

बिना किसी उद्देश्य या दिशा के जिये गये नीरस जीवन का कोई मतलब नहीं है। जीवन में कुछ बड़ा प्राप्त करने के लिए आपको अपना सर्वस्व दांव पर लगा देना चाहिए और अपने विश्वास के बल पर छलांग लगानी चाहिए।

पं. दीनदयाल उपाध्याय

अध्यक्ष
अजय प्रताप सिंह

उपाध्यक्ष
प्रशांत हर्णे

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक
संजय गोविंद खोचे*

कोषाध्यक्ष
कैलाश सोनी

प्रभारी वैचारिकी
डॉ. दीपक विजयवर्गीय

सहायक सम्पादक
पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक
योगेन्द्रनाथ बरतरिया
मोबा. नं. 09425303801

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता
पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये
*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

उत्साह का नववर्ष

मध्य प्रदेश का बजट मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी के नेतृत्व में हर मायने में जनता का बजट है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के संकल्प की पूर्ती के लिए आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश के निर्माण में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी के नेतृत्व में यह बजट महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

मध्यप्रदेश भारतीय जनता पार्टी के लिए नव वर्ष उत्साह लेकर आया है। चैत्र की नवरात्र के पंचमी के दिन भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी ने प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान एवँ मध्यप्रदेश के ऊर्जावान पार्टी अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा और प्रदेश के शीर्षस्थ नेताओं की उपस्थिती में आधुनिक भाजपा प्रदेश कार्यालय के निर्माण का भारतीय संस्कृति और सनातन विचार धारा के अनुरूप भूमि-पूजन करके विधि-विधान से शिलान्यास किया। भारतीय जनता पार्टी का बनने वाला भोपाल में नया प्रदेश कार्यालय प्रदेश और देश की राजनीति को नई दशा और दिशा अवश्य ही दिखाएगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रधानमंत्री बनने के बाद भारतीय जनता पार्टी मिशन मोड में हर जिले में भारतीय जनता पार्टी का कार्यालय बना रही है। उसी का परिणाम है कि आज पूरे देश में 290 जिलों में भारतीय जनता पार्टी के कार्यालय भवन बन चुके हैं। कई जिलों में कार्यालय बनने के काम जोर-शोर से जारी हैं। इसी कड़ी में मध्यप्रदेश में भी नए प्रदेश कार्यालय भवन का भूमिपूजन व शिलान्यास राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी ने किया। भारतीय जनता पार्टी का कार्यालय भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं के लिए संस्कार का केन्द्र होता है। जहाँ आकर प्रत्येक कार्यकर्ता अपने से अनुभवी और ज्ञानवान लोगों से शिक्षा और मार्गदर्शन लेता है, सीखता है, पढ़ता है और पार्टी के लिए जीवन को लगा देने का संकल्प लेता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए मध्य प्रदेश का भोपाल में स्थित नया प्रदेश कार्यालय वर्ल्ड क्लास और अत्याधुनिक तकनीकि से भरपूर होगा। जिसमें चार बैठक कक्ष और अत्यंत वृहद आडिटोरियम होगा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आज की राजनैतिक संस्कृति में अभूतपूर्व बदलाव आया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में अब देश में विकासवाद की राजनीति का समय आ चुका है। अब भाई-भतीजावाद, परिवारवाद और जातिवाद गौण होते चले जा रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश में विकास आधारित राजनीति को ही ध्येय बना दिया है। जिसका मंत्र है **''सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास''**।

इसी का परिणाम है कि आज सारा देश प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में तेजी से आगे बढ़ रहा है। पर यह बात विरोधी दल के चिरयुवा राजनेता को गले नहीं उतरती। देश में तो वो अपने बचकाने बयानों से हँसीं के पात्र तो बनते ही रहते हैं। पर यह घोर निन्दा का विषय है कि वे विदेशों में जाकर भारत के प्रति अत्यंत नकारात्मक भाषा का प्रयोग करते हैं। देश में इसको लेकर गहन आक्रोश और रोष है। विरोधी दल के नेताओं को यह बात सदैव याद रखना चाहिए कि देश के बाहर भारत के गौरव को स्थापित करना उनका पहला नैतिक दायित्व है।

भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आज भारत में अति गरीबी की रेखा के नीचे रहने वालों की संख्या एक प्रतिशत से भी कम हो गई है। इसका कारण प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने राष्ट्र के निर्माण और विकास के लिए जो मजबूत और कड़े निर्णय लिए यह उसी का परिणाम है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने विश्व की सबसे बड़ी महामारी के समय देश की गरीब और साधन विहीन जनता को भरपूर सहायता प्रदान की। गरीबों को इकोनॉमिक पैकेज दिया गया। रेहड़ी वालों को आर्थिक सहयोग दिया गया और प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत देश की अस्सी करोड़ गरीब जनता को प्रति माह पर्याप्त मुफ्त अनाज उपलब्ध कराया गया, यह उसी का परिणाम है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत ने बड़ी तेजी से कुछ ही महिने में कोरोना के दो-दो स्वदेशी वैक्सीन बनाए। आज उसी का परिणाम है कि पूरे देश में कोरोना वैक्सीनेशन पूरे जोर-शोर से चला। जिसका फायदा सारे देशवासियों को मिला। इतना ही नहीं वैक्सीन मैत्री के तहत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत ने लगभग सौ से अधिक देशों को वैक्सीन पहुँचाई। जिसमें से लगभग अड़तालिस देशों को मुफ्त वैक्सीन दिया गया। आज देश में कोरोना के लगभग दो सौ बीस करोड़ से ज्यादा के वैक्सीन के डोज लग चुके हैं। इसी का परिणाम है कि इस विभीषिका का असर भारत में बहुत कम हुआ और आज भारत तेजी से आगे बढ़ रहा है। और यही बात विपक्षी नेताओं को न तो तब हजम हो रही थी जब वैक्सीनेशन का कार्यक्रम जोरों पर था, और न ही आज हजम हो रही है,इसी की बौखलाहट में यह गलत सोच के नेता भारत की छवि को देश व विदेश में बदनाम कर रहे हैं, पर वह यह भूल जाते हैं कि देश की जागृत जनता सब समझती है,उसका प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और भाजपा के प्रति अटूट प्रेम व विश्वास है। याद किजिए जब इसी वैक्सीन को लेकर कोरोना के समय इन नेताओं ने क्या-क्या गलत बयानी करी थी। इसी का परिणाम है कि जनता इन्हें हर जगह नकार रही है।

मध्य प्रदेश का बजट मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में हर मायने में जनता का बजट है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आत्मनिर्भर भारत के निर्माण के संकल्प की पूर्ती के लिए आत्मनिर्भर मध्य प्रदेश के निर्माण में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में यह बजट महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा और वैभवशाली, शक्तिशाली भारत के निर्माण में मध्य प्रदेश अपना पूर्ण योगदान देगा। इस बजट की उल्लेखनीय बात यह है कि इस बजट के लिए जनता से भी सुझाव आमंत्रित किये गये थे। जिसका समावेश इस बजट में है। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के नेतृत्व में मध्य प्रदेश में बहनों का सम्मान और ज्यादा बढ़ाने के लिए लाड़ली बहना योजना चलाई गयी है। निश्चित ही इसके बहुत सकारात्मक परिणाम आयेंगे। ▪

(संजय गोविन्द खोचे)
सम्पादक

मोदी जी ने विकासवाद को आगे बढ़ाया - जे पी नड्डा

भारत अब लेने वाला नहीं, देने वाला देश है

ब्रिटेन ने भारत पर दो सौ सालों तक राज किया, लेकिन आज भारत ब्रिटेन को पछाड़कर दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन गया है। कार उत्पादन में जापान को पछाड़कर भारत अब तीसरे स्थान पर पहुंच गया है।

कुछ समय से राजनैतिक दलों का डिस्कोर्स बदला है। पहले राजनैतिक दल लोक लुभावने वादे कर भूल जाते थे। वादा खिलाफी करना नेतृत्व और पार्टियों का कल्चर था। लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आने के बाद भारत का राजनैतिक कल्चर बदला है। संस्कृति और राजनैतिक डिस्कोर्स बदला है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के कारण विकास की राजनीति आगे बढ़ी है। पहले भाई भतीजावाद, परिवारवाद और जातिवाद का कल्चर था। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने विकासवाद को आगे बढ़ाया। जिसका मंत्र सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास है। प्रधानमंत्री जी ने सबको साथ लेकर एक दिशा में चलने का काम किया है। प्रबुद्धजन समाज को प्रभावित करते है। आपके सपोर्ट से भारतीय जनता पार्टी को ताकत मिलती है।

मोदी जी ने मजबूती के साथ फैसले लिए

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी कोरोना महामारी के दौरान कठोर निर्णय लेते हुए देश की गरीब-वंचित जनता को एक बहुत बड़ा इकोनॉमिक पैकेज दिया। इस पैकेज के तहत 20 हजार करोड़ रुपये से अधिक की राशि एमएसएमई सेक्टर को दिया गया। साथ ही, 1 लाख करोड़ रुपये से अधिक की राशि कृषि आधारभूत संरचना के विकास के लिए दिया गया। उस दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने नीतिगत योजना बनाकर रेहड़ी-सब्जी वालों को आर्थिक सहयोग प्रदान किया। इसके अतिरिक्त, प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के माध्यम से देश की 80 करोड़ गरीब जनता को प्रति माह मुफ्त पांच किलो चावल, पांच किलो गेहूं और एक किलो दाल उपलब्ध कराये गए ताकि कोई भी व्यक्ति भूखा न सोए। इसका परिणाम यह रहा कि आईएमएफ की रिर्पोट के अनुसार भारत में अति गरीबी रेखा से नीचे रहने वालों की संख्या एक प्रतिशत से भी कम हो गयी है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्र के विकास के लिए मजबूती के साथ कड़े फैसले लिए, जिसके सुखद परिणाम भी हम सबके सामने है।

पिछले नौ सालों में बदलाव आया

देश में टिटनेस की दवा आने में 20 साल, स्माल पॉक्स की दवा आने में 25 साल, पल्स पोलियो को राष्ट्रीय कार्यक्रम बनाने में 28 साल, टीबी की दवा आने में 30 साल और जापानी इंस्फेलाइटीस की दवा आने में 100 साल लग गए। लेकिन देश में कोरोना महामारी का संकेत जनवरी 2020 में दिखा और प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अप्रैल 2020 में एक टास्क फोर्स गठित कर दिया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में नौ महीने के भीतर भारत में कोरोना निरोधक दो-दो स्वदेशी वैक्सीन विकसित हुए। वैक्सीन मैत्री के तहत 100 देशों को भारतीय वैक्सीन पहुंचाई गयी, जिसमें 48 देशों को मुफ्त वैक्सीन दिया गया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में पिछले नौ सालों में सबसे महत्वपूर्ण बदलाव यह आया है कि भारत अब लेने वाला नहीं, बल्कि देने वाला देश बन गया है। कोविड-19 निरोधक वैक्सीन का टीकाकरण जहाँ अमेरिका में 76 प्रतिशत और यूरोप में 67 प्रतिशत ही रहा वहीं भारत में यह टीकाकरण शत प्रतिशत रहा। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने देश की 130 करोड़ जनता को मुफ्त 220 करोड़ डोज देकर सुरक्षा कवच प्रदान किया। लेकिन ऐसे विकट समय में कांग्रेस के नेताओं ने वैक्सीन को लेकर जनता को गुमराह करने का काम किया।

भारत पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बना

ब्रिटेन ने भारत पर दो सौ सालों तक राज किया, लेकिन आज भारत ब्रिटेन को पछाड़कर दुनिया

की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन गया है। कार उत्पादन में जापान को पछाड़कर भारत अब तीसरे स्थान पर पहुंच गया है। 2014 में भारत में उपयोग होने वाले मोबाइल का 92 प्रतिशत चीन से आता था। आज भारत में उपयोग होने वाले 97 प्रतिशत मोबाईल देश में ही निर्मित हो रहे हैं। नए एप्पल पर मेड इन इंडिया लिखा जा रहा है। स्टील उत्पादन में भारत अब चौथे स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंच गया है। फार्मास्युटिकल में भारत दुनिया की फार्मेसी बन गया है क्योंकि दो सौ देशों को सबसे सस्ती और कारगर दवा आपूर्ति कर रहा है। भारत से इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात 70 हजार करोड़ रुपये तक पहुँच गया है। 2014 में भारत एक लाख करोड़ रुपये का इलेक्ट्रॉनिक्स वस्तुओं का उत्पादन करता था, आज भारत 6 लाख करोड़ रुपये के इलेक्ट्रॉनिक्स वस्तुओं का उत्पादन कर रहा है। 2014 से पूर्व, देश में 800 करोड़ रुपये का खिलौना उत्पादन होता था, लेकिन आज 2,600 करोड़ रुपये का खिलौना उत्पादन हो रहा है। भारत अब खिलौने का आयात करने की जगह निर्यात कर रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लोकल फॉर वोकल के माध्यम से भी खिलौना उत्पादन को प्रोत्साहित किया गया है।

भाजपा की सरकार प्रो-एक्टिव एवं प्रो-रिस्पौंसिबल सरकार है

भारतीय जनता पार्टी की सरकार का विजन अन्त्योदय है। सरकार की सभी नीतियां और योजनायें मजदूरों, गरीबों, महिलाओं, युवाओं और किसानों को ध्यान में रखकर बनायी जाती हैं। प्रदेश में शिवराज जी के नेतृत्व में सरकार केन्द्र के विजन को आगे बढ़ाने का काम कर रही है। डबल इंजन की सरकार प्रदेश में विकास के नए आयाम लिख रही है। अमृतकाल के बजट में मध्यप्रदेश को सौगात मिली है। रेलवे बजट में मध्यप्रदेश के 33 प्रोजेक्ट पर काम चल रहा है। वहीं एकलव्य विद्यालयों का लाभ भी मध्यप्रदेश को मिलेगा। आम बजट में अगर कोई राज्य अव्वल आता है तो वह मध्यप्रदेश है। मध्यप्रदेश सरकार ने 1 लाख 24 हजार युवाओं के लिए सरकारी नौकरियां निकाली है, जिसके लिए बधाई की पात्र है। प्रदेश की यूथ पॉलिसी, स्टार्टअप पॉलिसी भी आ चुकी है। गेहूं उत्पादन में मध्यप्रदेश अव्वल है। वहीं लाड़ली लक्ष्मी बहना योजना के माध्यम से बहनों को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में काम हो रहा है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार एक प्रो-एक्टिव एवं प्रो-रिस्पौंसिबल सरकार है। ▪

भाजयुमो युवा चौपालों से नव मतदाताओं को जोड़े - विष्णु दत्त शर्मा

भारतीय जनता युवा मोर्चा भविष्य की भारतीय जनता पार्टी है। पार्टी की रीति-नीति से युवाओं को जोड़ने और सरकार की युवा नीति बूथ के यूथ तक पहुंचाने की जिम्मेदारी मोर्चा कार्यकर्ताओं की है। सभी कार्यकर्ताओं को आगामी चुनावों को ध्यान में रखते हुए अपने जिलों के सभी बूथों को सशक्त कर भाजपा की महाविजय को सुनिश्चित करना है।

भाजपा के सुशासन और कांग्रेस के कुशासन से युवाओं को करायें अवगत

युवा मोर्चा कार्यकर्ता नव मतदाताओं के बीच जाकर उनसे सतत संवाद और संपर्क बनायें। उन्हें भारतीय जनता पार्टी सरकार की नीतियों, योजनाओं और विकास कार्यों से भी अवगत कराना चाहिए क्योंकि उन नव मतदाताओं ने कांग्रेस काल के दुरावस्था का दौर नहीं देखा है। भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र और राज्य सरकार ने युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में कई कार्यक्रम चलायें है। मोर्चा पार्टी की रीढ़ है। मोर्चा मिशन 2023 और 2024 की दृष्टि से यूथ कनेक्ट कार्यक्रम में हर पंचायत पर युवा चौपाल के माध्यम से बूथ के हर नवमतदाता को पार्टी से जोड़े और उन्हें कांग्रेस के कुशासन और भाजपा के सुशासन से भी अवगत कराएं।

विचार और नेतृत्व पर आक्रमण करने वालों को सत्य और तथ्य से जबाव दें -हितानंद

भाजपा सरकार ने अपने कार्य से सभी क्षेत्रों में जनता का विश्वास अर्जित किया है। लगातार युवाओं

के सशक्तिकरण के लिए भी केन्द्र और प्रदेश सरकार कार्य कर रही है। प्रदेश सरकार ने युवा नीति भी लागू कर दी है। युवा मोर्चा कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी है कि युवा नीति प्रदेश के सभी युवाओं तक पहुंचे।

- आगामी युवा चौपाल अभियान के माध्यम से मोर्चा कार्यकर्ता विभिन्न क्षेत्रों के युवाओं के बीच पहुंचकर उन्हें पार्टी से जोड़ें।
- हमारे विचार, परिवार और नेतृत्व पर आक्रमण करने वालों को हमें सत्य और तथ्य के माध्यम से जवाब देने में देरी नहीं करनी है।
- प्रवास में तेजी लाकर आने वाले समय में संगठन के विस्तार हेतु, अपने विचारों को अधिक से लोगों तक पहुंचाने का कार्य करें। ▪

भाजपा ही कर सकती है गरीब कल्याण के साथ देश को सुरक्षित, समृद्ध बनाने का काम-अमित शाह

छिंदवाड़ा उन स्वतंत्रता सेनानियों की भूमि है, जिन्होंने रोलेट एक्ट के विरोध, असहयोग आंदोलन, झंडा सत्याग्रह, जंगल सत्याग्रह, भारत छोड़ो आंदोलनों में भाग लेकर आजादी की लड़ाई को धार दी थी।

जल, जंगल और जमीन के लिए अंग्रेजों से लोहा लेने वाले बादल भोई और सभी स्वतंत्रता सेनानियों को प्रणाम। छिंदवाड़ा जनजातीय और पिछड़ा वर्ग बहुल जिला है, लेकिन देश की सत्ता में लंबे समय तक रहने वाली कांग्रेस ने इन वर्गों के सम्मान की कभी चिंता नहीं की।

कांग्रेस ने जिस धारा 370 को वर्षों तक लटकाए रखा, हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 5 अगस्त, 2019 को उसे एक झटके में हटा दिया और भारत माता का मुकुटमणि कश्मीर हमेशा के लिए भारत से जुड़ गया। कांग्रेस के जमाने में पाकिस्तान से आतंकी आते थे और हमारे जवानों के सिर काटकर ले जाते थे। मोदी जी की सरकार ने सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक करके आतंकवादियों को उनके घर में घुसकर मारा। देश के विभिन्न हिस्सों से वामपंथी उग्रवाद आज समाप्ति की ओर है। देश को सुरक्षित और समृद्ध बनाने के साथ-साथ गरीब कल्याण के काम सिर्फ भाजपा कर सकती है।

कांग्रेस ने आदिवासियों, दलितों, पिछड़ों के लिए कुछ नहीं किया

छिंदवाड़ा उन स्वतंत्रता सेनानियों की भूमि है, जिन्होंने रोलेट एक्ट के विरोध, असहयोग आंदोलन, झंडा सत्याग्रह, जंगल सत्याग्रह, भारत छोड़ो आंदोलनों में भाग लेकर आजादी की लड़ाई को धार दी थी। जल, जंगल और जमीन के लिए अंग्रेजों से लोहा लेने वाले बादल भोई और सभी स्वतंत्रता सेनानियों को प्रणाम। छिंदवाड़ा जनजातीय और पिछड़ा वर्ग बहुल जिला है, लेकिन देश की सत्ता में लंबे समय तक रहने वाली कांग्रेस ने इन वर्गों के सम्मान की कभी चिंता नहीं की। भगवान बिरसा मुंडा की जयंती 15 नवंबर को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने की शुरुआत प्रधानमंत्री श्री मोदी की सरकार ने की। 2014 में भाजपा की सरकार बनते ही प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने यह स्पष्ट कर दिया था कि हमारी सरकार गरीबों, पिछड़ों, आदिवासियों और दलितों की सरकार है। सत्ता में आते ही मोदी सरकार ने पिछड़ा वर्ग आयोग को संवैधानिक दर्जा दिया। मोदी सरकार ने ही एक गरीब आदिवासी परिवार की बेटी बहन द्रौपदी मुर्मू को महामहिम द्रौपदी मुर्मू बनाया। भाजपा की प्रदेश सरकार ने आदिवासी भाइयों को अधिकार देने के लिए देश में सबसे पहले पेसा कानून लागू किया है।

कांग्रेस ने सिर्फ नारा दिया, गरीबों का जीवन बदल रही मोदी सरकार

कांग्रेस ने सिर्फ गरीबी हटाओ का नारा दिया, गरीबी हटाने के लिए कुछ नहीं किया। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की सरकार अपनी योजनाओं के जरिये देश के 80 करोड़ लोगों के जीवन में परिवर्तन ला रही है। मोदी सरकार ने 60 करोड़ जनधन खाते खोले हैं, जिनमें विभिन्न योजनाओं की राशि सीधे तौर पर भेजी जा रही है। 13 करोड़ परिवारों को गैस सिलेंडर दिये हैं। 10 करोड़ घरों में शौचालय बनवाए हैं, 3 करोड़ गरीब परिवारों को पक्के घर दिये हैं। 60 करोड़ लोगों के पांच लाख रुपये तक के इलाज का खर्च मोदी सरकार उठा रही है। मोदी सरकार करोड़ों गरीबों को पांच किलो अनाज मुफ्त दे रही है और कोरोना संकट के दौरान 130 करोड़ लोगों को मुफ्त टीके लगवाए हैं।

प्रधानमंत्री मोदी जी की सरकार ने छिंदवाड़ा-नागपुर और छिंदवाड़ा-मंडला रेल लाइन के दोहरीकरण के लिए भी प्रावधान किए हैं।

विकास में कसर नहीं रहने देगी भाजपा

भाजपा की सरकारों ने छिंदवाड़ा के विकास में कोई कसर नहीं छोड़ी है। भाजपा की सरकार ने जिले के लिए 3400 करोड़ रुपये का बजट दिया है। माछा गोरा डेम से जिले में 1.26 लाख हेक्टेयर भूमि पर सिंचाई की जाएगी। सर्वसुविधायुक्त अस्पताल के लिए 800 करोड़ का प्रावधान किया है। प्रधानमंत्री सड़क योजना में 100 करोड़ रुपये और नेशनल हाईवे की मरम्मत के लिए 412 करोड़ रुपये जिले को दिये हैं। प्रधानमंत्री मोदी जी की सरकार ने छिंदवाड़ा-नागपुर और छिंदवाड़ा-मंडला रेल लाइन के दोहरीकरण के लिए भी प्रावधान किए हैं।

सभी सीटें जीतकर भाजपा का परचम फहराएंगे, इतिहास बनाएंगे: विष्णुदत्त शर्मा

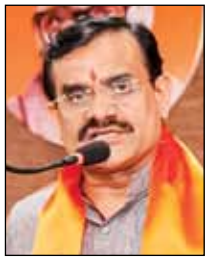

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी दुनिया का सबसे बड़ा राजनैतिक दल बना है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश के 16 राज्यों में भाजपा की सरकारें जनता की सेवा के काम कर रही है। इसके पीछे श्री अमित शाह की रणनीति है। उन्होंने देश में भारतीय जनता पार्टी का परचम फहराया है। यहां से महाविजय के महासंकल्प का शुभारंभ होगा। छिंदवाड़ा किसी व्यक्ति का गढ़ नहीं है बल्कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की जनकल्याणकारी योजनाओं के हितग्राहियों का गढ़ है। यहां 12 लाख आयुष्मान कार्ड धारी मौजूद है। सभी श्री अमित शाह के नेतृत्व में संकल्प लें कि छिंदवाड़ा की सातों विधानसभा सीटें और लोकसभा सीट जीतकर भाजपा का परचम फहरायेंगे और इतिहास बनायेंगे। ▪

51 प्रतिशत से अधिक वोट का संकल्प लें कार्यकर्ता : विष्णुदत्त शर्मा

जनता ने विश्वास किया है और जनता के विश्वास पर खरा उतरना होगा और संगठन के दम पर समाज के बीच सरकारों की योजनाओ को पहुंचाना है। सरकार गरीबों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने का कार्य कर रही ही और समाज में इसके सार्थक परिणाम हमें देखने को मिल रहा है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी कहते हैं एन्टी इनकम्बेंसी उनके लिए होती जो कार्य नही करते और जो जनता के लिये कार्य करते है। उनके लिये प्रो इनकम्बेंसी होती है और यही मध्यप्रदेश में होगा। विजय ऐतिहासिक होगी। क्योंकि सरकार ने जनता के लिए लगातार कार्य किया है। बूथ पर तैनात प्रत्येक कार्यकर्ता संगठन कार्य करते हुए सरकार की उपलब्धियों को जनता तक पहुंचाएं। हर बूथ पर 51 प्रतिशत से अधिक वोट लाने का संकल्प लें।

हम सौभाग्यशाली है कि देश ही नही दुनिया का सबसे सक्षम नेतृत्व हमारे पास है। जिनके लिए तो अब हमारे पड़ोसी देश के नागरिक भी यह कहने लगे है कि हमें भी मोदी जी जैसा प्रधानमंत्री चाहिए। कार्यकर्ता के रूप में हमारे पास बहुत बड़ी ताकत है। जिसके आधार पर हम संगठन के इस मजबूत तंत्र के साथ देश के अंदर आगे बढ़ रहे है। सतना के कार्यक्रम में गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने कहा था कि मध्यप्रदेश में दो तिहाई बहुमत से सरकार बनेगी। कार्यकर्ताओं की मेहनत के बल पर 200 पार के नारे को मिलकर साकार रुप देंगे और प्रदेश में पुनः सरकार बनाएंगे।

जनता ने विश्वास किया है और जनता के विश्वास पर खरा उतरना होगा और संगठन के दम पर समाज के बीच सरकारों की योजनाओं को पहुंचाना है। सरकार गरीबों के जीवन स्तर को ऊंचा उठाने का कार्य कर रही ही और समाज में इसके सार्थक परिणाम हमें देखने को मिल रहा है। देश में मध्यप्रदेश का संगठन सबसे अच्छा है, संगठन और यहां का कार्यकर्ता पूरी ताकत से अपना कार्य करता है। कार्यकर्ताओं का उत्साह और उमंग भाजपा के संगठन को ताकत देगा और कार्यकर्ताओं का यह उत्साह चुनाव में शक्ति देगा।

बूथ विस्तारक अभियान को पूरे देश मे सराहना मिली। जिस तरह प्रत्येक बूथ को डिजिटल बनाने का कार्य किया उससे मध्यप्रदेश आईडियल राज्य बना है। बूथ विस्तारक अभियान पार्ट 2 में भी उसी तरह कार्य करते हुए हमें अभियान को सफल बनाते हुए शक्ति केंद्र को ताकत देना है। बूथ विस्तारक योजना पार्ट 2 में मुख्यमंत्री, प्रदेश अध्यक्ष, शासन के मंत्री, सांसद, विधायक, प्रदेश के पदाधिकारी के साथ सभी कार्यकर्ता, जनप्रतिनिधि बूथों में जाएंगे। हर बूथ पर संगठन को खड़ा करना होगा। ▪

समाज के हर वर्ग के कल्याण को ध्यान में रखा गया - शिवराज सिंह चौहान

सही मायने में सर्वसमावेशी-सर्वस्पर्शी और जनता का बजट

मध्य प्रदेश का वित्तीय वर्ष 2023-24 का बजट समाज के हर वर्ग के कल्याण का बजट है। गरीब-कल्याण हमारा संकल्प है। माँ, बहन और बेटी के उत्थान के लिए हम प्रतिबद्ध हैं। किसानों की आय बढ़ाना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। इन सब बिन्दुओं का ध्यान इस बजट में रखा गया है।

यह सर्वसमावेशी और सर्वस्पर्शी बजट, सही मायने में जनता का बजट है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के आत्म-निर्भर भारत के निर्माण के संकल्प की पूर्ति के लिए आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश के निर्माण में यह बजट महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा और प्रधानमंत्री के सपनों के अनुरूप एक वैभवशाली, गौरवशाली, सम्पन्न, समृद्ध और शक्तिशाली भारत के निर्माण में मध्यप्रदेश अपना अमूल्य योगदान देगा। ये अमृत काल में विकास और समृद्धि के अमृत की वर्षा का बजट है।

बजट के लिए जनता की ओर से भी सुझाव आमंत्रित किए गए थे, जिसमें 4 हजार से अधिक सुझाव आए। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने जनता की जिन्दगी बदलने का संकल्प लिया है। यह उस संकल्प को पूरा करने का बजट है, इससे नई आशा और विश्वास जागेगा।

महिला-कल्याण की दिशा में ऐतिहासिक कदम है बजट

संतुलित बजट में अधो-संरचना के लिए 56 हजार 256 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है, जो पिछले बजट से 15 प्रतिशत अधिक है। साथ ही जन-कल्याण तथा महिलाओं की बेहतरी पर केन्द्रित प्रावधान भी बजट में निहित हैं। माँ-बहन, बेटी की बेहतरी के लिए एक लाख 02 हजार 976 करोड़ रूपए का प्रावधान महिला-कल्याण की दिशा में यह ऐतिहासिक कदम है। लाड़ली लक्ष्मी, कन्या विवाह निकाह, प्रसूति सहायता, गाँव की बेटी योजना और महिला स्व-सहायता समूहों को बैंक से ऋण उपलब्ध कराने की व्यवस्था के साथ ऋण का ब्याज भरने के लिए भी प्रावधान किया गया है।

प्रदेश का वित्तीय वर्ष 2023-24 का बजट समाज के हर वर्ग के कल्याण का बजट है। गरीब-कल्याण हमारा संकल्प है। माँ, बहन और बेटी के उत्थान के लिए हम प्रतिबद्ध हैं।

किसानों की आय बढ़ाना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। इन सब बिन्दुओं का ध्यान इस बजट में रखा गया है। यह सर्वसमावेशी और सर्वस्पर्शी बजट, सही मायने में जनता का बजट है।

ग्वालियर, जबलपुर, सागर और रीवा में बड़े स्किल सेंटर्स युवाओं के कौशल उन्नयन में सहायक होंगे

बजट में मुख्यमंत्री कौशल एप्रेंटिसशिप योजना के लिए 1000 करोड़ रूपए के प्रावधान से एक लाख युवाओं को लाभ मिलेगा। रोजगार के लिए एक लाख से अधिक पदों पर भर्ती की प्रक्रिया जारी है। साथ ही स्व-रोजगार की मुख्यमंत्री युवा उद्यम क्रांति योजना में पर्याप्त प्रावधान किया गया है। युवाओं के कौशल उन्नयन के लिए भोपाल में संत रविदास ग्लोबल स्किल पार्क बनाया जा रहा है। ग्वालियर, जबलपुर, सागर और रीवा में भी बड़े स्किल सेंटर्स स्थापित किए जाएंगे। प्रदेश में मुख्यमंत्री बालिका स्कूटी योजना आरंभ की जा रही है। शासकीय शाला में 12वीं कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली बालिका को राज्य सरकार की ओर से ई-स्कूटी प्रदान की जाएगी।

बजट से खेती को लाभ का धंधा बनाने में मिलेगी मदद

किसानों और कृषि के लिए 53 हजार 964

करोड़ रूपए का प्रावधान बजट में किया गया है। डिफॉल्टर किसानों का सहकारी समितियों का ब्याज राज्य शासन द्वारा भरने के लिए ढाई हजार करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है। प्रधानमंत्री श्री मोदी की ओर से किसानों को 6 हजार तथा राज्य शासन की ओर से 4 हजार रूपए का अनुदान उपलब्ध कराया जा रहा है। मुख्यमंत्री किसान-कल्याण योजना में 3 हजार 200 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है। जीरो प्रतिशत ब्याज पर ऋण उपलब्ध कराने के लिए अलग प्रावधान किया गया है। फसल बीमा योजना के लिए 2 हजार करोड़, बिजली बिलों पर सब्सिडी के लिए 13 हजार करोड़ तथा किसानों के लिए संचालित अन्य सभी योजनाओं में पर्याप्त प्रावधान किया गया है। इससे खेती को लाभ का धंधा बनाने में मदद मिलेगी।

अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग, घुमंतु, विमुक्त, अर्धघुमंतु समुदायों के लिए विशेष प्रावधान

जनजातीय कल्याण के लिए 36 हजार 950 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है, जो पिछले साल से 37 प्रतिशत अधिक है। इसमें सिकल सेल मिशन के लिए 50 करोड़ रूपए का प्रावधान भी किया गया है। अनुसूचित जनजाति के लिए भी 26 हजार 87 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है। पिछड़ा वर्ग, घुमंतु, विमुक्त, अर्धघुमंतु समुदाय के लिए बजट में विशेष रूप से प्रावधान किया गया है।

शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए बजट में विशेष व्यवस्था

शिक्षा पर 38 हजार 375 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है, जो पिछले साल से 5 हजार 532 करोड़ रूपए अधिक है। उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा के लिए सीएम राइज स्कूलों के लिए प्रावधान और पीएमश्री योजना के राज्यांश के लिए 277 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है। इससे शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने में मदद मिलेगी।

खेल का बजट तीन गुना बढ़ाया

प्रदेश के खिलाड़ी खेल मैदान में बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। खेलो इंडिया यूथ गेम्स में मध्यप्रदेश देश में तीसरे नंबर पर रहा है। खेल बजट तीन गुना बढ़ा कर, 738 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया।

शिक्षा पर 38 हजार 375 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है, जो पिछले साल से 5 हजार 532 करोड़ रूपए अधिक है।

उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा के लिए सीएम राइज स्कूलों के लिए प्रावधान और पीएमश्री योजना के राज्यांश के लिए 277 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है। इससे शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने में मदद मिलेगी।

नए मेडिकल कॉलेज भवनों के लिए पर्याप्त राशि की व्यवस्था

स्वास्थ्य के क्षेत्र में और बेहतर सुविधाओं के लिए 16 हजार 55 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है। इसमें से आयुष्मान भारत के लिए 953 करोड़ रूपए और नए मेडिकल कॉलेज भवनों के निर्माण के लिए भी पर्याप्त राशि दी गई है।

सड़क, सिंचाई और बिजली के लिए विशेष व्यवस्था

सड़कों के लिए 10 हजार 182 करोड़ रूपए का प्रावधान किया है, जिसमें पुलों के निर्माण और संधारण की राशि भी शामिल हैं। सिंचाई क्षमता हमें 65 लाख हेक्टेयर तक ले जानी है, इसके लिए 11 हजार 49 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है। बिजली की अधो-संरचना को ठीक करने के लिए 18 हजार 302 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है।

हर गरीब को पक्की छत उपलब्ध करा कर उसका घर का सपना पूरा करना हमारा उद्देश्य

बजट में गाँवों के विकास, ग्रामोदय और नगरोदय के लिए पर्याप्त प्रावधान किया गया है। ग्रामीण विकास के लिए 24 हजार 443 करोड़ रूपए और प्रधानमंत्री आवास के लिए 08 हजार करोड़ रूपए का प्रावधान है। हमारा उद्देश्य हर गरीब को पक्की छत उपलब्ध करा कर उसके घर के सपने को पूरा करना है। नगरों के लिए 14 हजार 882 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है। ग्रामीण अधो-संरचना के लिए 3 हजार 83 करोड़ रूपए का प्रावधान है।

राज्य शासन की अभिनव पहल सिद्ध होंगे सोशल इम्पेक्ट बॉण्ड

राज्य शासन ने अभिनव पहल करते हुए सोशल इम्पेक्ट बॉण्ड जारी करने का निर्णय लिया है। महिलाएँ, बहने, बच्चे, वरिष्ठ नागरिक, दिव्यांगजन, निराश्रित और कल्याणी बहनों के लिए संस्थागत व्यवस्था बनाई जाएगी। इनके लिए रोजगार के अवसर सृजित करने की व्यवस्था के साथ महिला प्रशिक्षण केन्द्रों, नशा मुक्ति केन्द्रों, मानसिक दिव्यांगजन कल्याण, पुनर्वास केन्द्रों की स्थापना की जाएगी। इस दिशा में सामाजिक महत्व के क्षेत्र में राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कार्यरत प्रतिष्ठित सामाजिक संगठनों के साथ मिल कर कार्य करने के लिए लगभग 1000 करोड़ रूपए के सोशल इम्पेक्ट बॉण्ड जारी किए जाएंगे। इसके लिए 100 करोड़ रूपए आउटकम फंड निर्मित किया गया है।

अधो-संरचना और जन-कल्याण के साथ ही जीवन मूल्यों, परम्पराओं,संस्कृति के संरक्षण और प्रोत्साहन में सहायक होगा यह बजट

अधो-संरचना और जन-कल्याण के साथ ही जीवन मूल्यों, परम्पराओं, संस्कृति को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध है। इस क्रम में सागर में संत रविदास जी का स्मारक, ओरछा में श्री रामराजा लोक, चित्रकूट में दिव्य वनवासी रामलोक और सलकनपुर में देवी महालोक जैसी परियोजनाओं के लिए भी लगभग 358 करोड़ रूपए का प्रावधान किया गया है। भारत भवन में कला ग्राम, रामपायली में डॉ. हेडगेवार का संग्रहालय, ग्वालियर में हिन्दी भवन तथा पूर्व प्रधानमंत्री स्व. श्री अटल बिहारी वाजपेयी के स्मारक का प्रावधान किया गया है। तीर्थ-यात्रा अब वायुयान से भी होगी। इसके लिए आवश्यक प्रावधान किया गया है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के भारत को 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थ-व्यवस्था बनाने के संकल्प की पूर्ति के लिए मध्यप्रदेश को 550 बिलियन डॉलर की अर्थ-व्यवस्था बनाने में इस बजट का महत्वपूर्ण योगदान होगा। ▪

मातृशक्ति को सशक्त, प्रदेश को आत्मनिर्भर बनाने वाला है प्रदेश का बजट-विष्णुदत्त शर्मा

प्रदेश की भाजपा सरकार ने वर्षों पहले बेटियों को सशक्त बनाने के लिए जो प्रयास शुरू किए थे, उनके सुखद परिणाम आज प्रदेश में बदलते लिंगानुपात के रूप में दिखाई दे रहे हैं। मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान की सरकार ने विधानसभा में जो बजट प्रस्तुत किया है, उसमें बेटियों, बहनों और समूची मातृशक्ति को सशक्त बनाने के लिए प्रावधान हैं। बजट में युवाओं, बुजुर्गों, किसानों, विद्यार्थियों समेत हर वर्ग के लिए प्रावधान किए गए हैं और यह बजट मध्यप्रदेश को विभिन्न क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनाने वाला, लोगों की जिंदगी बदलने के अभियान को गति देने वाला बजट है। सर्वसमावेशी और सर्वव्यापी बजट के लिए मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान एवं वित्त मंत्री श्री जगदीश देवड़ा को धन्यवाद।

मातृशक्ति को सशक्त बनाने लाड़ली बहना योजना लाई शिवराज सरकार

प्रदेश में शिवराज सरकार द्वारा शुरू की लाड़ली लक्ष्मी योजना सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बन गई है। कभी जिन बेटियों को अभिशाप समझा जाता था, अब वो वरदान बन गई है। इस योजना के कारण मध्यप्रदेश में लिंगानुपात के आंकड़ों में सुखद बदलाव आ रहे हैं। बहनों को और सशक्त बनाने के लिए प्रदेश सरकार अब लाड़ली बहना योजना लेकर आई है। 5 मार्च को इस योजना की लांचिंग के साथ ही प्रदेश की करोड़ों बहनों को 1000 रुपये प्रतिमाह मिलना शुरू हो जाएंगे। इस योजना के लिए शिवराज सरकार ने 8000 करोड़ का प्रावधान किया है।

सरकार ने 12 वीं की टॉपर छात्राओं के लिए ई-स्कूटी योजना शुरू करने की घोषणा की है, वहीं बहनों के स्व सहायता समूहों के लिए 660 करोड़ का प्रावधान किया है। यही नहीं, बल्कि पिछड़ी जाति की महिलाओं के लिए अलग से 300 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

प्रदेश में शिवराज सरकार द्वारा शुरू की लाड़ली लक्ष्मी योजना सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बन गई है। कभी जिन बेटियों को अभिशाप समझा जाता था, अब वो वरदान बन गई है। इस योजना के कारण मध्यप्रदेश में लिंगानुपात के आंकड़ों में सुखद बदलाव आ रहे हैं।

इसके अलावा वृद्धावस्था एवं विधवा पेंशन, कन्या विवाह योजना तथा महिला स्वरोजगार के लिए भी बजटीय प्रावधान किए गए हैं।

कांग्रेस ने जिन किसानों को छला, उन्हें सहारा देगी सरकार

कांग्रेस की कमलनाथ सरकार ने कर्ज माफी के नाम पर किसानों को छला था। उनके इस छल-कपट के कारण प्रदेश के कई किसान डिफाल्टर हो गए थे। उनके सिर पर कर्ज का बोझ बढ़ता जा रहा था। ऐसे किसानों को प्रदेश की शिवराज सरकार सहारा देगी और ऐसे किसानों को नॉन डिफाल्टर श्रेणी में लाने के लिए सरकार ने बजट में 2500 करोड़ का प्रावधान किया है। इसके अलावा मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना के तहत 3900 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

हर वर्ग, हर समाज का रखा ध्यान

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान की सरकार का नया बजट सर्वसमावेशी और सर्वव्यापी है, जिसमें हर समाज और वर्ग का ध्यान रखा गया है। बजट में जनजातीय क्षेत्रों में चलाए जा रहे सिकल सेल एनीमिया मिशन के लिए 50 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। वहीं, इन क्षेत्रों में स्वरोजगार तथा जनजातीय कल्याण के लिए भी प्रावधान किए गए हैं। गरीबों का सहारा बनी संबल योजना को कमलनाथ सरकार ने बंद कर दिया था। मुख्यमंत्री बनते ही श्री शिवराज सिंह चौहान ने इस योजना को दोबारा शुरू किया और इस योजना के लिए बजट में 600 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। प

प्रदेश सरकार ने शिक्षा के लिए 38,375 करोड़ रुपये और खेलों के विकास के लिए 738 करोड़ रुपये का प्रावधान किया है। युवाओं के लिए एक लाख नौकरियां उपलब्ध कराने की बात सरकार ने बजट प्रावधान में शामिल की है। जन स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए प्रदेश सरकार ने आयुष्मान भारत योजना के लिए 953 करोड़ रुपये तथा स्वास्थ्य विभाग की अन्य योजना के लिए 16 हजार करोड़ से अधिक के प्रावधान किए हैं।

कमलनाथ सरकार प्रदेश के अन्य मेडिकल कॉलेजों के लिए आवंटित बजट भी छिंदवाड़ा ले गई थी, जबकि शिवराज सरकार प्रदेश के प्रत्येक जिले में मेडिकल कॉलेज खोलने के प्रयास कर रही है। वर्तमान में मौजूद मेडिकल कॉलेजों के लिए 400 करोड़ से अधिक की राशि आवंटित की गई है।

सांस्कृतिक पुनरुत्थान पर प्रदेश सरकार का जोर

उज्जैन में भव्य महाकाल महालोक के निर्माण के बाद शिवराज सरकार प्रदेश के अन्य हिस्सों में भी ऐसे ही प्रयास कर रही है। प्रदेश सरकार ने संत रविदास स्मारक एवं मंदिर निर्माण के लिए 100 करोड़ का प्रावधान किया है। इसके अलावा ओरछा, चित्रकूट और सलकनपुर में भी सरकार ऐसे ही प्रयास करने जा रही है, जिनके लिए बजट में प्रावधान किए गए हैं।

कमलनाथ सरकार द्वारा बंद कर दी गई मुख्यमंत्री तीर्थदर्शन योजना को तीर्थयात्रा पर जाने वाले बुजुर्गों की दृष्टि से और सुविधाजनक बनाने के लिए नए बजट में हवाई यात्रा का प्रावधान भी जोड़ा गया है।

अधोसंरचना के विकास को मिलेगी गति

प्रदेश को आत्मनिर्भर बनाने के प्रयासों के अंतर्गत शिवराज सरकार प्रदेश की अधोसंरचना के विकास के लिए हरसंभव प्रयास कर रही है। नए बजट में भी सड़कों और पुलों के निर्माण तथा विकास के लिए 56,256 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

प्रदेश में ऊर्जा की उपलब्धता बढ़ाने तथा पर्यावरण की रक्षा की दृष्टि से सांची समेत प्रदेश के कई अन्य शहरों को सोलर सिटी के तौर पर विकसित किए जाने का प्रावधान किया गया है। सिंचाई सुविधाओं के विकास के लिए 11 हजार करोड़ से अधिक तथा ऊर्जा क्षेत्र के लिए 302 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। इसके अलावा नगरीय एवं ग्रामीण विकास के लिए भी प्रावधान किए गए हैं।

कई मामलों में अनूठा है प्रदेश सरकार का बजट

शिवराज सरकार द्वारा प्रस्तुत नए साल का बजट कई मामलों में अनूठा रहा है। यह पेपरलेस, ई-बजट है, जिसे वित्तमंत्री श्री देवड़ा ने टेबलेट के माध्यम से प्रस्तुत किया।

इस बजट में 414 करोड़ का राजस्व आधिक्य है, जो सरकार के कुशल वित्तीय प्रबंधन को दर्शाता है। बजट में किसी भी नए कर का प्रावधान नहीं है। इसके अलावा यह बजट प्रदेश की जनता द्वारा दिए गए प्रावधान के आधार पर तैयार किया गया है। ▪

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने नवीन भाजपा कार्यालय का भूमिपूजन किया

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जेपी नड्डा जी ने नवरात्र के 5 वें दिन विधि विधान से पूजन-अर्चन कर नवीन आधुनिक भाजपा प्रदेश कार्यालय के निर्माण का भूमिपूजन कर शिलान्यास किया। पूजा में श्री जे पी नड्डा व उनकी पत्नी श्रीमती मल्लिका नड्डा, मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती साधना सिंह चौहान एवं प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती स्तुति शर्मा शामिल हुई। श्री नड्डा ने 5 गेती चलाकर नवीन कार्यालय के निर्माण कार्य का शुभारंभ किया। ▪

बहनों का सम्मान बढ़ाने का महायज्ञ है, लाड़ली बहना योजना - शिवराज सिंह चौहान

योजना में 23 से 60 आयु वर्ग की बहनों को प्रति माह एक हजार रूपए दिए जाएंगे...

25 मार्च से आवेदन भरना शुरू, 10 जून को पहली किस्त बहनों के खातों में जमा की जाएगी...

बहन-बेटियों के साथ भेदभाव को देखकर बचपन से ही वेदना होती थी। सार्वजनिक जीवन में सक्रियता के साथ ही यह प्रयास रहा कि बेटी को बोझ नहीं वरदान समझा जाए।

परिणाम स्वरूप विधायक बनते ही साथियों के सहयोग से बेटियों का विवाह कराना शुरू किया और मुख्यमंत्री बनते ही सबसे पहले कन्या विवाह योजना बना कर उसका क्रियान्वयन सुनिश्चित किया।

लाड़ली बहना योजना मेरे दिल से निकली योजना है। बहनें सशक्त होंगी तो परिवार, समाज, प्रदेश और देश सशक्त होगा। बहनों के जीवन को सरल, सुखद बनाना ही मेरे जीवन का ध्येय है। बहनें अपनी छोटी-मोटी जरूरतों और पैसों की आवश्यकता के लिए परेशान न हो, इसलिए हर महीने बहनों को एक-एक हजार रूपए उपलब्ध कराने की व्यवस्था योजना में की गई है। जिन परिवारों की वार्षिक आय ढाई लाख रूपए से कम है, जिनके पास 5 एकड़ से कम भूमि है और जिन परिवारों में कोई आयकर दाता नहीं हो, ऐसे परिवारों की 23 से 60 आयु वर्ग की बहनें योजना के लिए पात्र हैं। योजना में परिवार का अर्थ है, पति, पत्नी और बच्चे। बहनों को यह राशि उपलब्ध कराने से बहनों के साथ पूरे परिवार का भी कल्याण होगा। जिन बहनों के बैंक खाते नहीं हैं, उनके खाते खुलवाने में भी मदद की जाएगी।

हमारे देश में माँ, बहन, बेटी का हमेशा सम्मान रहा

योजना के क्रियान्वयन में महिलाओं को कोई दिक्कत न आए, इसके लिए राज्य शासन द्वारा विशेष व्यवस्था की गई है। हमारे देश में माँ, बहन, बेटी का हमेशा सम्मान रहा है। बेटियों और बहनों को हमारे यहाँ दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती माना जाता है। देवता और भगवान के नाम लेने में भी, पहले लक्ष्मी जी और सीता जी का नाम लिया जाता है अर्थात महिला सर्वप्रथम है। कालांतर में परिस्थितियाँ बदली और महिलाएँ भेदभाव का शिकार हो गई।

बहन-बेटियों के लिए योजनाओं के सफल क्रियान्वयन से मुख्यमंत्री बनना हुआ सार्थक

बहन-बेटियों के साथ भेदभाव को देखकर बचपन से ही वेदना होती थी। सार्वजनिक जीवन में सक्रियता के साथ ही यह प्रयास रहा कि बेटी को बोझ नहीं वरदान समझा जाए। परिणाम स्वरूप विधायक बनते ही साथियों के सहयोग से बेटियों का विवाह कराना शुरू किया और मुख्यमंत्री बनते ही सबसे पहले कन्या विवाह योजना बना कर उसका क्रियान्वयन सुनिश्चित किया। प्रण था कि मध्यप्रदेश की धरती पर जो बेटी पैदा हो वह लखपति हो। इस प्रण से लाड़ली लक्ष्मी योजना

लाड़ली बहना योजना, बहनों का सम्मान बढ़ाने का महायज्ञ है। बहनों को आवेदन करने के लिए कहीं जाने की जरूरत नहीं है। सभी गाँव व वार्ड में शिविर लगाए जाएंगे और आवेदन भरने में मदद करने की कर्मचारियों को जिम्मेदारी दी जाएगी।

ने मूर्त रूप लिया। इसके बाद बेटियों को पढ़ाई में मदद के लिए किताबें, यूनिफार्म, साइकिल आदि की व्यवस्था की गई। मजदूर बहन, बेटा- बेटी के जन्म के बाद आराम कर सके, इसके लिए संबल योजना में जन्म से पहले 4 हजार और जन्म के बाद 12 हजार रुपए देने की व्यवस्था की गई। बहनों के लिए गाँव की बेटी, प्रतिभा किरण और प्रसूति सहायता योजना बनाई गई। बहन-बेटियों को प्रगति के समान अवसर उपलब्ध कराना सपना था। इन योजनाओं के सफल क्रियान्वयन से मुख्यमंत्री बनना सार्थक हुआ।

आवेदन के लिए हर गाँव और वार्ड में लगेंगे शिविर

लाड़ली बहना योजना, बहनों का सम्मान बढ़ाने का महायज्ञ है। बहनों को योजना में आवेदन करने के लिए कहीं जाने की जरूरत नहीं है। हर गाँव और हर वार्ड में शिविर लगाए जाएंगे और आवेदन भरने में मदद करने के लिए कर्मचारियों को जिम्मेदारी दी जाएगी। ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के वार्डों में शिविरों की जानकारी पहले से दी जाएगी। बहनें योजना का लाभ लेने के लिए किसी भी बिचौलिए और दलाल के झाँसे में न आएँ। कोई भी कठिनाई होने पर फोन नम्बर 181 पर सूचना दी जाए।

बहनों की सुरक्षा के लिए बनाई जाएगी ''लाड़ली बहना सेना''

राज्य सरकार बहन-बेटियों की सुरक्षा, मान-सम्मान और उन्हें प्रगति के सभी अवसर उपलब्ध कराने दृढ़ प्रतिज्ञ है। बहन-बेटियों को परेशान करने वालों पर कठोर कार्यवाही की जा रही है। इसी क्रम में शराब की दुकान के पास के अहाते बंद किए गए हैं। महिला सशक्तिकरण की ओर अगला कदम बढ़ाते हुए बहन-बेटियों की सुरक्षा के लिए ''लाड़ली बहना सेना'' भी बनाई जाएगी। बारहवीं कक्षा में शासकीय शाला में प्रथम आने वाली बेटी को ई-स्कूटी उपलब्ध कराई जाएगी। ▪

मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना सामाजिक परिवर्तन का सूत्रपात करेगी - विष्णुदत्त शर्मा

मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना महिला सशक्तिकरण की दिशा में मील का पत्थर है, जिस तरह लाड़ली लक्ष्मी योजना प्रदेश में सामाजिक बदलाव का आधार बनी है, उसी तरह लाड़ली बहना योजना भी एक और सामाजिक परिवर्तन का सूत्रपात करेगी।

मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना महिला सशक्तीकरण की दिशा में मील का पत्थर है, जिस तरह लाड़ली लक्ष्मी योजना प्रदेश में सामाजिक बदलाव का आधार बनी है, उसी तरह लाड़ली बहना योजना भी एक और सामाजिक परिवर्तन का सूत्रपात करेगी।

प्रदेश में भाजपा सरकारों का पूरा जोर महिलाओं तथा बालिकाओं की बेहतरी, उनके सशक्तिकरण तथा उनके लिए विकास के समान अवसर उपलब्ध कराने पर रहा है। बेटियों के जन्म से लेकर उनके सुपोषण, शिक्षा, विवाह और आजीविका तक की चिंता प्रदेश की शिवराज सरकार को है और सरकार अपनी विभिन्न योजनाओं के जरिए यह काम कर रही है। बालिकाओं के प्रति समाज के दृष्टिकोण में बदलाव लाने के उद्देश्य से मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने लाड़ली लक्ष्मी योजना शुरू की थी। इस योजना के अंतर्गत अब तक 43 लाख से अधिक बेटियां लाड़ली लक्ष्मी बन चुकी हैं। प्रत्येक मध्यप्रदेशवासी के लिए गर्व का विषय है कि इस योजना ने बेटियों के प्रति परिवार और समाज की सोच ही नहीं बदली, बल्कि यह एक बड़े सामाजिक बदलाव का माध्यम भी बन गई है। इस योजना ने प्रदेश में तेजी से असंतुलित हो रहे लिंगानुपात को थामा है और अब प्रदेश में प्रति एक हजार बालकों पर 956 बेटियां जन्म ले रही हैं, जो एक शुभ संकेत है। मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने अपने जन्मदिन पर प्रदेश की करोड़ों बहनों को लाड़ली बहना योजना का जो उपहार दिया है, वह प्रदेश की वयस्क बहनों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाकर अगले चरण के सामाजिक बदलावों का सूत्रपात करेगी। ▪

बूथ अध्यक्षों का सम्मेलन

कांग्रेस का मतलब - करप्शन, कमीशन और डिवीजन - नड्डा

कांग्रेस का मतलब है करप्शन, कमीशन और डिवीजन। भाई भतीजावाद, परिवारवाद इनकी पहचान है। हमारी संस्कृति समाजसेवा की, समाज के सशक्तीकरण की और रिपोर्ट कॉर्ड की संस्कृति है। जो कहेंगे वो करेंगे और जो कहा है, वो किया है। कांग्रेसियों के भाषण सुनिये, उनमें से वोट बैंक संस्कृति की झलक दिखाई देती है। हमें कांग्रेस की यह संस्कृति जनता को बताना है। भाजपा की सरकारें देश और प्रदेश को लगातार आगे बढ़ा रही हैं, यह जनता को समझाना है और भारतीय जनता पार्टी को यशस्वी बनाना है। हर बूथ का अध्यक्ष यह संकल्प ले कि मेरे बूथ पर सिर्फ जीत ही होगी।

ऑफिस नहीं, संस्कार केंद्र होगा नया कार्यालय भवन

2014 में चुनाव जीतने के बाद प्रधानमंत्री श्री मोदी जी पार्टी कार्यालय आए थे और उन्होंने यह पूछा था कि कितने जिलों में पार्टी के अपने कार्यालय भवन है? उन्होंने कहा कि हमें यह संकल्प लेना चाहिए कि हर जिले में हमारे अपने कार्यालय भवन होंगे। उस संकल्प का ही परिणाम है कि आज देश के 290 जिलों में पार्टी के कार्यालय भवन बन चुके हैं। 115 कार्यालयों का काम चालू है। 123 कार्यालयों के लिए जमीन ले ली गई है और काम चालू होने वाला है। इसी कड़ी में पार्टी के नए प्रदेश कार्यालय भवन का भूमिपूजन हुआ है, जो वर्ल्ड क्लास और आधुनिक तकनीक से युक्त होगा। उसमें 4 बैठक कक्ष होंगे और 1005 की क्षमता वाला ऑडिटोरियम होगा। इस सबके बावजूद हमारा कार्यालय भवन ऑफिस नहीं होगा, बल्कि वो एक संस्कार केंद्र होगा, जहां आकर कार्यकर्ता अपने नेताओं से सीखते हैं, पढ़ते हैं और पार्टी के लिए जीवन को खपा देने का संकल्प लेते हैं।

लोगों का उत्साह कह रहा, एक बार फिर भाजपा

हमने उत्तर पूर्वी राज्यों मेघालय, नागालैंड और त्रिपुरा में सरकारें बनाई। महत्वपूर्ण बात यह है कि दोबारा से सरकार बनाई। चुनाव परिणाम के बाद हमारे प्रधानमंत्री जी ने कहा था कि यह एक त्रिवेणी का प्रभाव है। त्रिवेणी का वो मंत्र है- सरकार का काम, संगठन व सरकार की संस्कृति तथा कार्यकर्ताओं का समर्पित सेवा भाव।

मध्यप्रदेश में भी पार्टी कार्यकर्ता और सरकार पूरे सेवा भाव के साथ काम कर रहे हैं। विचारों की यही त्रिवेणी मध्यप्रदेश में भी दिखाई देती है। कार्यकर्ताओं में जो उत्साह दिखाई दे रहा है, वह आने वाले समय के लिए यह संदेश दे रहा है कि एक बार फिर भाजपा सरकार।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश लगातार आगे बढ़ रहा है। हमें तर्कों, मुद्दों और विषयों को लेकर जनता के बीच जाना है और उन्हें यह बात समझाना है। आज भारत स्मार्टफोन के उपयोग में नं.1 है। ग्लोबल फाइनेंस टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में नं.1 है। कांग्रेस ने जिस डिजिटाइजेशन का विरोध किया था, उसी के रास्ते पर चलकर देश का यूपीआई दुनिया में सबसे आगे है।

मोदी जी के नेतृत्व में आगे बढ़ रहा देश

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में देश लगातार आगे बढ़ रहा है। हमें तर्कों, मुद्दों और विषयों को लेकर जनता के बीच जाना है और उन्हें यह बात समझाना है। आज भारत स्मार्टफोन के उपयोग में नं.1 है। ग्लोबल फाइनेंस टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में नं.1 है। कांग्रेस ने जिस डिजिटाइजेशन का विरोध किया था, आज उसी के रास्ते पर चलकर देश का यूपीआई दुनिया में सबसे आगे है। इस्पात के उत्पादन में हम नं. 2 हैं।

ऑटो इंडस्ट्री में जापान को पीछे छोड़कर हम तीसरे नंबर पर पहुंच गए हैं। ऐसे समय में जब दुनिया की अर्थव्यवस्था कोरोना संकट और रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण सुस्त पड़ रही है, हमारे प्रधानमंत्री जी ने सही समय पर कठोर निर्णय लिये और आज हम ब्रिटेन को पीछे छोड़कर पांचवी बड़ी अर्थव्यवस्था बन गए हैं।

मोदी जी जो चिंतन करते हैं, शिवराज जी उसे जमीन पर उतारते हैं

प्रधानमंत्री मोदी जी विकास की, गरीब कल्याण की दिशा में जो चिंतन करते हैं, जो योजनाएं लाते हैं, प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज जी उन्हें साकार करते हैं। मध्यप्रदेश के इंदौर में प्रवासी दिवस का सफल आयोजन किया गया, जिससे इंदौर और मध्यप्रदेश दुनिया के नक्शे पर आ गए हैं। प्रदेश में रेलवे की 33 परियोजनाएं चल रही हैं और 5872 कि.मी. रेल लाइन का काम चल रहा है। इस पर 84460 करोड़ रुपये खर्च होंगे। रानी कमलापति स्टेशन का उन्नयन किया गया है और अमृत भारत योजना में 80 रेलवे स्टेशनों का कायाकल्प किया जाएगा। बजट एलोकेशन में म. प्र. देश के शीर्ष राज्यों में शामिल है। प्रदेश में 25 नए मेडिकल कॉलेज खोले जा रहे हैं जो अपने-अपने क्षेत्रों की तस्वीर बदल देंगे। सड़क निर्माण के काम 27000 करोड़ की लागत से किए जा रहे हैं। प्रदेश में 15 लाख करोड़ का निवेश आया है और 1.24 लाख नौकरियां दी जाएंगी। देश के जीडीपी में प्रदेश का योगदान 4.8 प्रतिशत हो गया है। रीवा में एशिया का सबसे बड़ा सोलर प्लांट लगा है। इन बातों को जनता के बीच रखना हमारी जिम्मेदारी है।

कमलनाथ नहीं चाहते थे गरीबों, किसानों, महिलाओं का कल्याण हो

मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान प्रधानमंत्री आवास योजना में 37 लाख मकान बनवाते हैं, लेकिन कमलनाथ ने मुख्यमंत्री रहते हुए लाखों प्रधानमंत्री आवास वापस कर दिए थे। उन्होंने आयुष्मान भारत योजना को लंबे समय तक लागू नहीं होने दिया। किसान सम्मान निधि योजना के नाम नहीं दिये। हमारी सरकार उज्जवला योजना लाई, स्वच्छता अभियान शुरू किया, गरीब कल्याण अन्न योजना लाई। जिससे देश में अति गरीबी की दर 1 प्रतिशत से भी नीचे चली गई है। लेकिन कमलनाथ ने हमारी जनहित की सारी योजनाएं रोक दीं, क्योंकि वो नहीं चाहते थे कि प्रदेश के गरीब, किसान और महिलाएं आगे बढ़ें।

अहंकार में डूबे हैं कांग्रेस के नेता

कांग्रेस के नेता अहंकार में डूबे हैं और उनमें समझदारी बहुत कम हो गई है। अभी कांग्रेस सत्याग्रह कर रही है। सत्याग्रह 1906 और 1919 में महात्मा गांधी जी ने भी किया था, लेकिन उनका वो सत्याग्रह भारत के सम्मान, उसकी अस्मिता और भारतीयों के राज को लेकर था। कांग्रेस किसलिए सत्याग्रह कर रही है? सिर्फ अपने नेताओं के अहंकार को बचाने के लिए? वो हर परंपरा को तोड़ देते हैं, एक पिछड़े समाज को गाली देते हैं, अदालत के कहने पर भी माफी नहीं मांगते और जब सजा हो जाती है तो सत्याग्रह करते हैं। अरे, देश के संविधान, कानून, अदालत किसी से तो डरो। याद रखना, ये देश किसी को माफ नहीं करेगा। पार्टी कार्यकर्ता कांग्रेसियों की यह करतूत जनता को बताएं और अपने नेताओं के संदेश को गांव-गांव तक पहुंचाकर भाजपा को यशस्वी बनाएं।

हम सौभाग्यशाली हैं कि मोदी जी के युग में पैदा हुए: शिवराजसिंह चौहान

हम सौभाग्यशाली हैं कि भाजपा के कार्यकर्ता हैं और उस युग में पैदा हुए जब मोदी जी भारत के प्रधानमंत्री हैं। आज का भारत इस बात का उदाहरण है कि किसी देश का कायाकल्प कैसे हो सकता है। कांग्रेस के जमाने में छोटे-छोटे देश हमें आंखें दिखाते थे और भारत घोटालों के देश के रूप में जाना जाता था। लेकिन आज हमारे दुश्मन देश पाकिस्तान के लोग भी कह रहे हैं कि हमें मोदी जी चाहिए। सारी दुनिया में भारत का सम्मान बढ़ा है। रूस-यूक्रेन युद्ध के बीच भारतीय छात्रों को सुरक्षित रास्ता देने के लिए लड़ाई रोक दी जाती है और तुर्की में जब भूकंप आता है, सबसे पहले भारतीय डॉक्टर और सहायता सामग्री वहां पहुंच जाती है।

कमलनाथ ने बंद की योजनाएं, बना दिया घोटाला प्रदेश

कमलनाथ सरकार ने प्रदेश को घोटालों का प्रदेश बना दिया था, भ्रष्टाचार और दलालों का अड्डा बना दिया था। उस सरकार ने जनहित की सारी योजनाएं बंद कर दी थी। जल जीवन मिशन लागू नहीं होने दिया। कन्या विवाह योजना की राशि 51 हजार करने की बात कही, एक पैसा नहीं दिया। संबल योजना बंद कर दी, बच्चों से लेपटॉप छीन लिए। हमारे कार्यकर्ताओं का उत्पीड़न किया। किसानों से कर्ज माफी का झूठा वादा करके उन पर ब्याज का बोझ चढ़ा दिया, अब उस बोझ को भी हमारी सरकार उतार रही है।

लगातार हो रहे विकास और गरीब कल्याण के काम

सरकार ने प्रदेश में सड़कों का जाल बिछा दिया है। पहले 7.5 लाख हेक्टेयर में सिंचाई होती थी, जिसे बढ़ाकर 45 लाख हेक्टेयर कर दिया है। लाड़ली लक्ष्मी के बाद अब लाड़ली बहना योजना लांच की है, जो परिवारों की हालत बदल देगी। अपने स्कूल में जो बेटी पहले नंबर पर आएगी,सरकार उसे ई- स्कूटी देगी। हमने नई युवा नीति लांच की है, जिसमें काम सीखने के लिए युवाओं को एक साल तक 8000 रुपये प्रतिमाह देने का प्रावधान है। हमारी सरकार माफियाओं का सफाया कर रही है। दुराचारियों को फांसी दी जा रही है और 01 अप्रैल से सारे अहाते बंद कर दिये जाएंगे। बूथ अध्यक्ष अपने-अपने बूथ के योद्धा हैं। वो प्रदेश सरकार की योजनाओं को ठीक से समझ लें और लोगों को उनका लाभ दिलवाएं, क्योंकि ये सेवा का काम है।

अबकी बार 200 पार के नारे को यथार्थ में बदलेंगे: विष्णुदत्त शर्मा

प्रदेश में इन दिनों सभी 64100 बूथों को डिजिटल बनाकर पन्ना प्रमुख और पन्ना समितियों के गठन का काम चल रहा है और सारे कार्यकर्ता इस काम में उत्साहपूर्वक भाग ले रहे हैं। दूसरी तरफ प्रधानमंत्री जी और मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में हमारी सरकारें गरीब कल्याण के काम में जुटी हैं। ऐसे में अबकी बार, 200 पार के नारे को साकार करने का संकल्प लिया है। हर बूथ पर 51 प्रतिशत वोट पाने के संकल्प को पूरा करेंगे और 2023 तथा 2024 में जीत का इतिहास बनाएंगे। गुजरात के चुनाव में पार्टी ने 53 प्रतिशत वोट प्राप्त किए थे और 182 में से 156 सीटें जीती थीं। उस समय हमारे प्रधानमंत्री जी ने जीत का श्रेय बूथों के अध्यक्ष और कार्यकर्ताओं को दिया था। बूथ अध्यक्ष और बूथ के कार्यकर्ता हमारी ताकत हैं और उन्हीं के परिश्रम से हम मध्यप्रदेश में भी जीत का परचम फहराएंगे। ▪

संगठन को युगानुकूल सामर्थ्य देने वाला नेतृत्व

विष्णुदत्त शर्मा

नरेंद्र मोदी के चमत्कारिक नेतृत्व और उनके विजन ने कार्यकर्ताओं को चौगुनी ताकत दी है। यही कारण है कि आज देश के हर कोने में भाजपा का झंडा उठाने वाला कैडर तैयार हो गया है। यही नहीं पार्टी ने जिन विचारों को लेकर यात्रा शुरु की थी, उनको सुदृढ़ करने का सामर्थ्य भी मिला है। आज देश में पार्टी ने एक ऐसी सरकार दी है जो दीर्घकालिक विजन के साथ काम कर रही है।

राष्ट्रीय राजनीति में भारतीय जनता पार्टी का सफर महज 2 सीटों से शुरु हुआ था और आज 303 सीटें हैं। 1984 से लेकर 2023 तक की यात्रा में चार पक्षों की सबसे बड़ी भूमिका रही है- **विजन, संगठन, नेतृत्व और कार्यकर्ता**। इन चारों बातों के कारण जनता का विश्वास बढ़ा और उसने लोकतांत्रिक व्यवस्था में भाजपा को सिरमौर बनाया। स्पष्ट विजन और संगठन बनता है नेतृत्व से और नेतृत्व खड़ा होता है कैडर यानी कार्यकर्ताओं से। अटल बिहारी वाजपेयी, लालकृष्ण आडवानी से लेकर नरेंद्र मोदी, अमित शाह और जय प्रकाश नड्डा तक पार्टी का नेतृत्व करने वाले अनेक लोग इसी कैडर की गंगोत्री से निकले हैं। सभी पार्टी के कार्यकर्ता हैं और सदा कार्यकर्ता बनकर दी गई जिम्मेदारी का निर्वहन करते रहे हैं। यह विशिष्ट संगठन तंत्र ही भाजपा को दूसरे दलों की तुलना में विशेष बनाता है।

वर्तमान दौर का आकलन करें तो नरेंद्र भाई मोदी के चमत्कारिक नेतृत्व ने पार्टी के विजन और संगठन का अदभुत विस्तार किया है। हिन्दी क्षेत्रों से आगे बढ़कर गैर हिन्दी क्षेत्रों और सुदूर पूर्वोत्तर तक पार्टी का विजन और संगठन विस्तारित हुआ है। नेतृत्व की रीढ़ बनकर करोड़ों कार्यकर्ता उनके विजन को आगे बढ़ाते हैं।

कार्यकर्ता ही कैरियर हैं, जो नेतृत्व के विजन को संकल्प सिद्धि में परवर्तित करते हैं। चार दशक पहले जब भाजपा ने मात्र 2 सीटों का खाता खोला था तब भी कार्यकर्ता ही उसकी ताकत थे और आज जब देश में दो बार प्रचंड बहुमत की मोदी सरकार बनी है, तब भी कार्यकर्ता ही उसकी रीढ़ हैं। कई राज्यों में आज सरकारें हैं तो उसकी ताकत भी पार्टी के कार्यकर्ता हैं जो आज नरेंद्र भाई मोदी के विजन को जमीन पर उतार रहे हैं।

नरेंद्र मोदी के चमत्कारिक नेतृत्व और उनके विजन ने कार्यकर्ताओं को चौगुनी ताकत दी है। यही कारण है कि आज देश के हर कोने में भाजपा का झंडा उठाने वाला कैडर तैयार हो गया है। यही नहीं पार्टी ने जिन विचारों को लेकर यात्रा शुरु की थी, उनको सुदृढ़ करने का सामर्थ्य भी मिला है। आज देश में पार्टी ने एक ऐसी सरकार दी है जो दीर्घकालिक विजन के साथ काम कर रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की दूरदर्शिता का परिणाम है कि हमारा देश हर क्षेत्र में नयी ऊंचाई पर है। भारत ही नहीं

बाहर भी देश की शक्ति बढ़ी है। यह शक्ति करोड़ों कार्यकर्ताओं की निष्ठा, सक्रियता और प्रतिबद्धता से आती है।

दरअसल, दीनदयाल उपाध्याय, कुशाभाऊ ठाकरे से लेकर अब तक भाजपा संगठन के प्रमुख नेतृत्व कर्ताओं ने कार्यकर्ता निर्माण की प्रक्रिया को सदा ही सर्वोपरि व गतिमान रखा है। यही कारण है कि तीन दशक आते-आते भाजपा दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी बन गई। भावी पीढ़ी को तैयार करते रहना पार्टी का सहज स्वभाव है। यहां हर कार्यकर्ता किसी भी जिम्मेदारी को निभाने के लिए सदा तैयार रहता है। पार्टी की कार्यशैली, संगठन तंत्र और इसके शीर्ष नेतृत्व के विजन ने देश की करोड़ों जनता का विश्वास हासिल कर अद्‌भुत इतिहास रचा है। इस विश्वास के साथ समाज का हर तबका जुड़ा है। सामान्य गरीब नागरिक से लेकर प्रबुद्धजनों ने भी विपक्षियों के दुष्प्रचार को खारिज करते हुए भाजपा में विश्वास जताया है तो उसके पीछे भी कार्यकर्ताओं की क्रियान्वयनता है। इस क्रियान्वयनता को युगानुकूल संसाधनों से युक्त करना भी आवश्यक है।

2047 में स्वाधीनता के 100 साल पूरे होने पर जिस प्रकार प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी ने भारत के लिए एक विजन रखा है, उसी प्रकार पार्टी ने भी आगामी दशकों में उसकी जरूरतों को ध्यान में रखकर रोडमैप बनाया है। उल्लेखनीय है कि कुछ वर्ष पहले पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष और गृह मंत्री अमित भाई शाह ने भाजपा को आधुनिक संसाधन युक्त, तकनीक युक्तऔर युगानुकूल बनाने की दिशा में कार्यालयों के निर्माण का अभियान चलाया था, जो वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष जय प्रकाश नड्डा के नेतृत्व में लक्ष्य पूर्ति की ओर अग्रसर है। इस कड़ी में मध्य प्रदेश भाजपा का कार्यालय भी भावी पीढ़ियों के लिए नयी आवश्यकताओं के अनुरूप बनने जा रहा है।

गौरतलब है कि आज पार्टी का नेतृत्व जिस संसाधन को खड़ा करने की प्रेरणा दे रहा है, वह स्वयं के लिए नहीं है। ऐसे संसाधन आने वाली पीढ़ियों के लिए तैयार हो रहे हैं। यह पार्टी के शीर्ष नेतृत्वकर्ताओं की दूरदर्शिता का अनूठा उदाहरण है।

भावी पीढ़ी की जरूरतों को समझना, आने वाले युग काल के लिहाज से संसाधनयुक्त होना और उसके लिए वर्तमान कार्यकर्ताओं को प्रेरित करना, यह दलगत राजनीति में दुर्लभ दृश्य है। विश्व की सबसे बड़ी पार्टी होने की जिम्मेदारी का निर्वहन करने के लिए अपनी क्षमता का विस्तार करने की योजना संगठन तंत्र का अद्‌भुत उदाहरण है। विचार को हर युग में प्रासंगिक बनाये रखने, उसके विस्तार और उपयोगिता की तैयारी के लिए तत्परता भाजपा की विशेषता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कुशल नेतृत्व में देश जिस रास्ते पर आगे बढ़ा है, वह राष्ट्र के पुनर्निर्माण का रास्ता है। आज की योजनाएं कल की भविष्य हैं। आज का सुशासन कल सुनहरा आसमान है। वह हमारे आध्यात्मिक सांस्कृतिक उत्थान का मार्ग है।

विश्व में गौरवमयी स्थान पाने का रास्ता है। 70 साल से गरीबी के नकली नारों से मुक्ति का सहज मार्ग है। इन परिवर्तनों में जिन कार्यकर्ताओं की क्रियान्वयनता की भूमिका है, उनको साधन सम्पन्न बनाना एक अपरिहार्य आवश्यकता है।

पार्टी के नेतृत्व में आजादी के 70 साल बाद देश का विमर्श सही रास्ते पर आया है। अभी तक हमारे देश के स्वाधीनता संग्राम का विमर्श नेहरू परिवार और कांग्रेस पार्टी केंद्रित था, जो परिवर्तित होकर सामान्य जनों तक पहुंचा है।

केंद्र एवं राज्य सरकार ने आजादी के अमृत महोत्सव के निमित्त ऐसे प्रयास किये हैं जिससे देश के जनजातीय नायक, जनसाधारण से निकले क्रांतिकारी विमर्श के केंद्र में आये हैं। मीडिया के सभी प्लेटफार्म पर इनकी गाथाएँ दिखाई जा रही हैं। देश का आम नागरिक यह समझने लगा है कि आजादी किसी एक परिवार के कारण नहीं बल्कि देश के कोटि-कोटि नागरिकों के सामूहिक प्रयास से मिली है।

श्रीराम मंदिर निर्माण, कश्मीर में धारा 370 की समाप्ति, कृषि कानून, CAA–NRC जैसे अनेक मुद्दों पर राष्ट्रविरोधी ताकतों को मुंह की खानी पड़ी है। साफ नीयत से चलाई जा रही सरकार के फैसलों को जनता ने सराहा है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक अनेक मुद्दों पर विभाजनकारी ताकतों द्वारा गढ़ा गया विमर्श धराशाही हुआ है। हमारे राजनीतिक और सामाजिक नेतृत्व ने राष्ट्रीय विमर्श को ऐसी दिशा दी है, जिससे देश परम वैभव की ओर बढ़ रहा है। यह संगठन तंत्र की ही शक्ति है। ▪

(लेखक भाजपा मध्यप्रदेश के अध्यक्ष एवं खजुराहो लोकसभा क्षेत्र से संसद सदस्य हैं।)

मेरा बूथ सबसे मजबूत बनाने के लिए जुटें कार्यकर्ता - हितानंद जी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान के नेतृत्व में देश और प्रदेश में चल रही गरीब कल्याण की अनेकों योजनाओं के माध्यम से सरकार ने सभी समाजों को भरपूर सुविधाएं दी हैं। हमें सभी वर्गों के साथ व्यापक और सतत् संपर्क करना है। गत वर्ष की तरह इस वर्ष भी फिर से बूथ विस्तारक योजना अभियान शुरू किया जा रहा है। हमें मेरा बूथ सबसे मजबूत करके दिखाना है। इस अभियान का उद्देश्य बूथों को सक्रिय तथा मजबूत बनाना है और हमें उन बूथों पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है, जहाँ हम कमजोर हैं, इसलिए सभी कार्यकर्ता बूथ सशक्तिकरण के कार्य में जुटें।

परीक्षा की कठिन घड़ी के तीन सालों में प्रदेश ने सभी दिशाओं में नए मापदण्ड स्थापित किए - शिवराज सिंह चौहान

प्रदेश में विकास और जन-कल्याण का चल रहा है महायज्ञ

किसान-कल्याण, युवाओं, बहन-बेटियों के कल्याण के साथ अधो-संरचना, ऊर्जा, सिंचाई, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में हुई प्रगति

सरकार के तीन साल परीक्षा की कठिन घड़ी के साल थे। पहले और दूसरे साल में कोविड के महा संकट का सामना किया। कोविड के संकट से प्रदेश को निकालने के लिए सारी व्यवस्थाएँ करने का दायित्व था। इस दायित्व को पूरा किया और मध्यप्रदेश के विकास की गति को भी रूकने नहीं दिया। साथ ही केवल मध्यप्रदेश के भाई-बहनों की सेवा ही नहीं की अपितु जो मजदूर पैदल आ रहे थे, उन्हें भी हर संभव सुविधा उपलब्ध कराई। मध्यप्रदेश, देश का पहला राज्य था, जिसने तय किया कि कोई भी मजदूर प्रदेश में पैदल नहीं चलेगा।

अपने प्रदेश की सीमा पर उन्हें बस में बैठाते और दूसरे राज्य की सीमा तक छोड़ कर आते। साथ ही मजदूरों के चाय, नाश्ते, भोजन, दवाई और जूते-चप्पल की व्यवस्था जन-सहयोग से की गई। प्रदेश में बनी क्राइसिस मैनेजमेंट कमेटी देश में मिसाल बनी। प्रशासन, जनता और सरकार ने जन-प्रतिनिधियों के साथ मिल कर कोविड की चुनौती का मुकाबला किया।

किसानों के खातों में डाली गई 2 लाख करोड़ से ज्यादा की राशि

संकट के इस दौर में भी राज्य सरकार ने किसानों के फसल बीमा प्रीमियम की 200 करोड़ रूपए की राशि जमा की। पिछले 3 साल में 2 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा की राशि अलग-अलग योजनाओं में किसानों के खातों में डालने में सफल रहे। किसान-कल्याण के लिए सक्रिय रहने के साथ आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश का सपना देखा और इसके लिए अधो-संरचना, सड़कों का जाल फैलाने तथा हाईवेज के अंतर्गत अटल एक्सप्रेस-वे, नर्मदा एक्सप्रेस-वे की योजना बनी। इसी क्रम में विंध्य एक्सप्रेस-वे

सरकार के तीन साल परीक्षा की कठिन घड़ी के साल थे। पहले और दूसरे साल में कोविड के महा संकट का सामना किया। कोविड के संकट से प्रदेश को निकालने के लिए सारी व्यवस्थाएँ करने का दायित्व था। इस दायित्व को पूरा किया और मध्यप्रदेश के विकास की गति को भी रूकने नहीं दिया।

साथ ही केवल मध्यप्रदेश के भाई-बहनों की सेवा ही नहीं की अपितु जो मजदूर पैदल आ रहे थे, उन्हें भी हर संभव सुविधा उपलब्ध कराई। मध्यप्रदेश, देश का पहला राज्य था, जिसने तय किया कि कोई भी मजदूर प्रदेश में पैदल नहीं चलेगा।

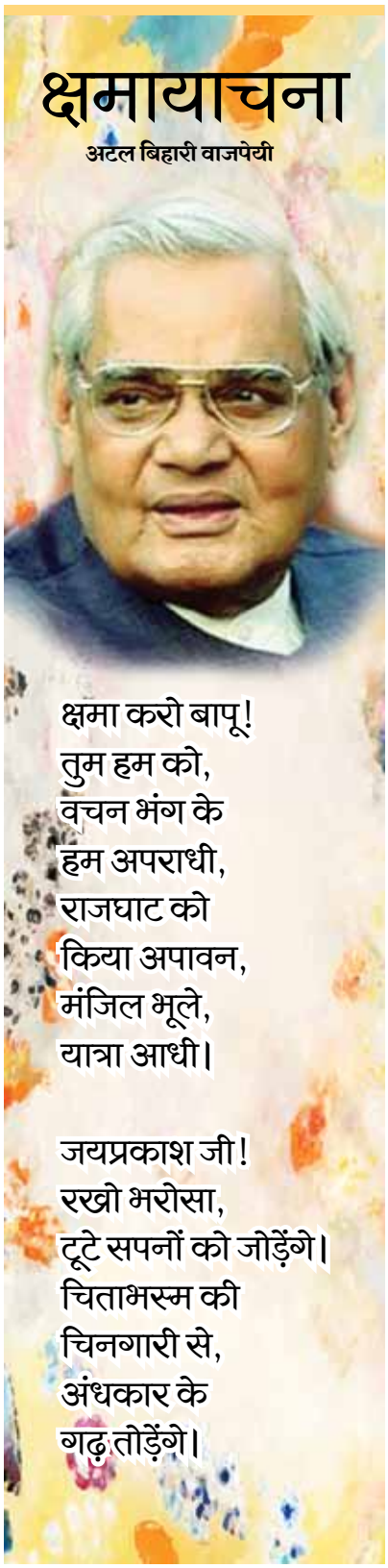

की योजना भी शामिल है। प्रदेश में 4 लाख किलोमीटर सड़कें बन कर तैयार हैं।

आकाश मार्ग के उपयोग के लिए 14 जगह रोप-वे की योजना तैयार

राज्य सरकार ने मध्यप्रदेश में सिंचाई की अनेक परियोजनाओं का शुभारंभ किया। प्रदेश में 45 लाख हेक्टेयर सिंचाई की व्यवस्था करने के बाद अब कदम 65 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में सिंचाई व्यवस्था स्थापित करने की ओर अग्रसर हैं। बिजली के उत्पादन को बढ़ा कर 28 हजार मेगावाट की उपलब्धता कर दी है।

सौर ऊर्जा के क्षेत्र में भी तेजी से काम कर रहे हैं। अधो-संरचना और मेट्रो का काम भी तेजी से चल रहा है। केवल सड़कों का नहीं परिवहन के लिए आकाश मार्ग का उपयोग करने के लिए 14 जगह रोप-वे निर्माण की योजना बन कर तैयार है। उज्जैन में कार्य आरंभ होने वाला है। इसी बीच श्री महाकाल महालोक बन कर तैयार हुआ।

प्रदेश में स्वास्थ्य सुविधाओं का बिछ रहा है जाल

शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र में भी क्रांति करने का फैसला किया। सीएम राइज स्कूल के रूप में गरीब और मध्यम वर्ग के बच्चों को उत्कृष्ट विद्यालय देने का अभियान चला। इनके भवनों का निर्माण तेजी से चल रहा है। शिक्षा की गुणवत्ता ठीक करने के लिए नई शिक्षा नीति लागू की गई। साथ ही उच्च शिक्षा की गुणवत्ता ठीक करने की दिशा में भी प्रयास किए। मध्यप्रदेश की धरती पर मेडिकल की पढ़ाई हिंदी में कराने का ऐतिहासिक फैसला लिया गया।

शिक्षा और स्वास्थ्य क्षेत्र में एक के बाद एक मेडिकल कॉलेज आरंभ हो रहे हैं। उप स्वास्थ्य केंद्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का जाल बिछ रहा है। मेडिकल कॉलेजों के साथ स्वास्थ्य संस्थाओं का उन्नयन स्वास्थ्य की दिशा में एक नई क्रांति कर रहा है। आयुष्मान कार्ड बनाने में देश में प्रथम स्थान पर पहुँच चुके हैं।

शहरी-ग्रामीण विकास और पर्यटन के क्षेत्र में अर्जित की उपलब्धियाँ

शिक्षा हो, स्वास्थ्य या सुशासन, हर क्षेत्र में मध्यप्रदेश आगे बढ़ा है। शहरी विकास, ग्रामीण विकास और पर्यटन के क्षेत्र में भी उपलब्धियाँ अर्जित की हैं। टाइगर, लेपर्ड, वल्चर और घड़ियाल स्टेट होने का गौरव तो पहले से ही प्राप्त था। मध्यप्रदेश अब चीता स्टेट भी बन गया है। मध्यप्रदेश में पर्यटन को नई ऊँचाइयाँ प्राप्त हुई हैं।

अर्थ-व्यवस्था और रोजगार में रिकार्ड स्थापित

अर्थ-व्यवस्था और रोजगार की दृष्टि से देखे तो नए रिकॉर्ड स्थापित किए हैं। लगभग 1 लाख 24 हजार शासकीय नौकरियाँ निकली हैं, जिनमें भर्ती का अभियान लगातार चल रहा है। मुख्यमंत्री उद्यम क्रांति योजना में 1 लाख युवाओं को हर साल स्व-रोजगार के लिए धन उपलब्ध कराया जा रहा है, जिसकी गारंटी और ब्याज सब्सिडी भी सरकार दे रही है।

हर महीने रोजगार दिवस मनाए जा रहे हैं। लगभग ढाई लाख लोगों को बैंकों से जोड़ कर रोजगार के अवसर सृजित किए जा रहे हैं। एक नई योजना भी आरंभ की गई है, जिसमें 1 लाख युवाओं को ''लर्न एंड अर्न'' में काम करना सीखने और राशि प्राप्त करने के अवसर उपलब्ध कराने के लिए बजट में एक हजार करोड़ रूपये का प्रावधान कर अभियान चलाया गया है।

3 लाख 14 हजार करोड़ का है प्रदेश का बजट

प्रदेश में बहन-बेटियों की दृष्टि से भी क्रांति हुई है। मुख्यमंत्री लाड़ली बहना जैसी क्रांतिकारी योजनाएँ बनी, लाड़ली लक्ष्मी बेटियों के लिए भी अलग अलग कई व्यवस्थाएँ की गई। सभी क्षेत्रों में विकास के साथ किसान, युवा, माताओं और बहनों के कल्याण के लिए कार्य हुए हैं। गरीब-कल्याण में 91 लाख नए नाम अनेक हितग्राही मूलक योजनाओं में जुड़े हैं। प्रदेश में विकास और जन-कल्याण का महायज्ञ चल रहा है।

बजट अब बढ़ कर 3 लाख 14 हजार करोड़ रूपए हो चुका है। पर कैपिटा इनकम जो कभी 11 हजार रूपए होती थी, अब बढ़ कर 1 लाख 40 हजार रूपए के आसपास पहुँच गई है। जीएसडीपी का आकार लगातार बढ़ रहा है, आज 13 लाख करोड़ को पार कर गया है। इन तीन कठिन सालों में मध्यप्रदेश में सभी दिशाओं में प्रगति और विकास करने में सफल रहे हैं। ▪

महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण-बजट का आधार

इस वर्ष के बजट को देश ने 2047 तक, विकसित भारत बनाने के लक्ष्य की पूर्ति के एक शुभारंभ के रूप में देखा है। बजट को भावी अमृतकाल की दृष्टि से देखा और परखा गया है। ये देश के लिए शुभ संकेत है कि देश के नागरिक भी अगले 25 वर्षों को, इन्हीं लक्ष्यों से जोड़कर देख रहे हैं।

बीते 9 वर्षों में देश Women Led Development के विजन को लेकर आगे बढ़ा है। भारत ने अपने बीते वर्षों के अनुभव को देखते हुए, Women Development से Women Led Development के प्रयासों को वैश्विक मंच पर भी ले जाने का प्रयास किया है। इस बार भारत की अध्यक्षता में हो रही G20 की बैठकों में भी ये विषय प्रमुखता से छाया हुआ है। इस वर्ष का बजट भी Women Led Development के इन प्रयासों को नई गति देगा

नारी शक्ति की संकल्प शक्ति, इच्छा शक्ति, उनकी कल्पना शक्ति, उनकी निर्णय शक्ति, त्वरित फैसले लेने का उनका सामर्थ्य निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उनकी तपस्या, उनके परिश्रम की पराकाष्ठा, ये हमारी मातृशक्ति की पहचान है, ये एक प्रतिबिंब हैं। जब हम Women Led Development कहते हैं तब उसका आधार यही शक्तियां हैं। मां भारती का उज्ज्वल भविष्य सुनिश्चित करने में, नारी शक्ति का ये सामर्थ्य भारत की अनमोल शक्ति है। यही शक्ति समूह इस शताब्दी में भारत के स्केल और स्पीड को बढ़ाने में बहुत बड़ी भूमिका निभा रही है।

आज हम भारत के सामाजिक जीवन में बहुत बड़ा क्रांतिकारी परिवर्तन महसूस कर रहे हैं। पिछले कुछ वर्षों में भारत ने जिस प्रकार Women Empowerment के लिए काम किया है, आज उसके परिणाम नजर आने लगे हैं। आज हम देख रहे हैं कि भारत में, पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या बढ़ रही है। पिछले 9-10 वर्षों में हाईस्कूल या उसके आगे की पढ़ाई करने वाली लड़कियों की संख्या तीन गुना बढ़ी है। भारत में साइन्स, टेक्नोलॉजी, इंजीनियरिंग और मैथ्स में लड़कियों का enrolment आज 43 परसेंट तक पहुंच चुका है, और ये समृद्ध देश, विकसित देश अमेरिका हो, यूके हो, जर्मनी हो इन सबसे भी ज्यादा है।

नारी शक्ति की संकल्प शक्ति, इच्छा शक्ति, उनकी कल्पना शक्ति, उनकी निर्णय शक्ति, त्वरित फैसले लेने का उनका सामर्थ्य निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए उनकी तपस्या, उनके परिश्रम की पराकाष्ठा, ये हमारी मातृशक्ति की पहचान है, ये एक प्रतिबिंब हैं। जब हम Women Led Development कहते हैं तब उसका आधार यही शक्तियां हैं।

इसी तरह, मेडिकल फील्ड हो या खेल का मैदान हो, बिजनस हो या पॉलटिकल एक्टिविटी हो, भारत में महिलाओं की केवल भागीदारी नहीं बढ़ी है, बल्कि वो हर क्षेत्र में आगे आकर नेतृत्व कर रहीं हैं। आज भारत में ऐसे अनेक क्षेत्र हैं जिनमें महिला शक्ति का सामर्थ्य नजर आता है। जिन करोड़ों लोगों को मुद्रा लोन दिये गए, उनमें से करीब 70 प्रतिशत लाभार्थी देश की महिलाएं हैं। ये करोड़ों महिलाएं अपने परिवार की आय ही नहीं बढ़ा रही हैं, बल्कि अर्थव्यवस्था के नए आयाम भी खोल रही हैं। पीएम स्वनिधि योजना के माध्यम से बिना गारंटी आर्थिक मदद देना हो, पशुपालन को बढ़ावा देना हो, फिशरीज को

बढ़ावा देना हो, ग्रामोद्योग को बढ़ावा देना हो, FPO's हों, खेल-कूद-स्पोर्ट्स हो, इन सभी को जो प्रोत्साहन दिया जा रहा है, उसका सर्वाधिक लाभ और अच्छे से अच्छे परिणाम महिलाओं के द्वारा आ रहे हैं। देश की आधी आबादी के सामर्थ्य से हम देश को कैसे आगे ले जाएं, हम नारी शक्ति के सामर्थ्य को कैसे बढ़ाएं, इसका प्रतिबिंब इस बजट में भी नजर आता है। महिला सम्मान सेविंग सर्टिफिकेट स्कीम, इसके तहत महिलाओं को 7.5 परसेंट इंटरेस्ट रेट दिया जाएगा।

इस बार के बजट में पीएम आवास योजना के लिए करीब 80 हजार करोड़ रुपए रखे गए हैं। ये राशि, देश की लाखों महिलाओं के लिए घर बनाने में काम आएगी। भारत में बीते वर्षों में पीएम आवास योजना के जो 3 करोड़ से अधिक घर बने हैं, उनमें से अधिकांश महिलाओं के ही नाम हैं। आप कल्पना कर सकते हैं वो भी एक जमाना था जब महिलाओं के लिए न तो कभी खेत उनके नाम होते थे, न खलिहान उनके नाम होते थे,ना दुकान होती थी, ना घर होते थे। आज इस व्यवस्था से उन्हें कितना बड़ा सपोर्ट मिला है। पीएम आवास ने महिलाओं को घर के आर्थिक फैसलों में एक नई आवाज दी है।

इस बार के बजट में नए यूनिकॉर्न्स बनाने के लिए, अब हम स्टार्टअप की दुनिया में तो यूनिकार्न सुनते हैं लेकिन क्या सेल्फ हेल्प ग्रुप में भी ये संभव है क्या? ये बजट उस सपने को पूरा करने के लिए सपोर्ट करने वाली घोषणा लेकर के आया है। देश के इस विजन में कितना स्कोप है, ये आप बीते वर्षों की ग्रोथ स्टोरी में देख सकते हैं। आज देश में पाँच में से एक नॉन-फार्म बिजनस महिलाएं संभाल रहीं हैं। बीते 9 वर्षों में सात करोड़ से ज्यादा महिलाएं सेल्फ हेल्प ग्रुप में शामिल हुई हैं, और वो अलग-अलग क्षेत्रों में काम कर रहीं हैं। ये करोड़ों महिलाएं कितना वैल्यू creation कर रहीं हैं, और इसका अंदाजा आप इनकी कैपिटल requirement से भी लगा सकते हैं।

9 वर्षों में इन सेल्फ हेल्प ग्रुप्स ने सवा 6 लाख करोड़ रुपए का लोन लिया है। ये महिलाएं केवल छोटी entrepreneur ही नहीं हैं, बल्कि ये ग्राउंड पर सक्षम रिसोर्स पर्सन्स का काम भी कर रहीं हैं। बैंक सखी, कृषि सखी, पशु सखी के रूप में ये महिलाएं गाँव में विकास के नए आयाम बना रही हैं।

सहकारिता क्षेत्र, उसमें भी महिलाओं की हमेशा बड़ी भूमिका रही है। आज कॉपरेटिव सेक्टर में आमूलचूल बदलाव हो रहा है। आने वाले वर्षों में 2 लाख से ज्यादा मल्टी-पर्पस कॉपरेटिव, डेयरी कॉपरेटिव और फिशरीज कॉपरेटिव बनाये जाने वाले हैं। 1 करोड़ किसानों को नेचुरल फार्मिंग से, प्राकृतिक खेती से जोड़ने का लक्ष्य रखा गया है। इसमें महिला किसानों और producer ग्रुप्स की बड़ी भूमिका हो सकती है। इस समय देश ही नहीं, पूरी दुनिया में मिलेट्स यानी श्री अन्न को लेकर जागरूकता आ रही है। उनकी डिमांड बढ़ रही है। ये भारत के लिए एक बड़ा अवसर है।

हमारे देश में 1 करोड़ आदिवासी महिलाएं सेल्फ हेल्प ग्रुप्स में काम करती हैं। उनके पास ट्राइबल क्षेत्रों में उगाए जाने वाले श्रीअन्न का पारंपरिक अनुभव हैं। हमें श्रीअन्न की मार्केटिंग से लेकर इनसे बने processed foods से जुड़े अवसरों को टैप करना होगा। कई जगहों पर माइनर फारेस्ट produce को प्रोसेस करके मार्केट तक लाने में सरकारी संस्थाएं सहायता कर रही है। आज ऐसे कितने सारे self हेल्प ग्रुप, रिमोट इलाको में बने है, हमें इसे और व्यापक स्तर पर लेकर जाना चाहिए।

ऐसे तमाम प्रयासों में युवाओं के, बेटियों के स्किल डेव्लपमेंट की बहुत बड़ी भूमिका होगी। इसमें विश्वकर्मा योजना एक बड़े ब्रिज का काम करेगी। हमें विश्वकर्मा योजना में महिलाओं के लिए विशेष अवसरों को पहचानकर उन्हें आगे बढ़ाना होगा। GEM पोर्टल और E-कॉमर्स भी महिलाओं के व्यवसाय को विस्तार देने का बड़ा माध्यम बन रहे हैं। आज नई टेक्नोलॉजी का फायदा हर सेक्टर ले रहा है। हमें सेल्फ हेल्प ग्रुप्स को दी जाने वाले ट्रेनिंग में ज्यादा से ज्यादा नई टेक्नोलोजी के प्रयोग पर बल देना चाहिए।

देश आज ''सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास'' की भावना के साथ आगे बढ़ रहा है। जब हमारी बेटियां सेना में जाकर देश की सुरक्षा करती दिखाई देती हैं, राफेल उड़ाती दिखाई देती हैं, तो उनसे जुड़ी सोच भी बदलती है। जब महिलाएं entrepreneurs बनती हैं, फैसले लेती हैं, रिस्क लेती होती हैं, तो उनसे जुड़ी सोच भी बदलती है। अभी कुछ दिन पहले ही नागालैंड में पहली बार दो महिलाएं विधायक बनी हैं। उनमें से एक को मंत्री भी बनाया गया है। महिलाओं का सम्मान बढ़ाकर, समानता का भाव बढ़ाकर ही भारत तेजी से आगे बढ़ सकता है। ▪

हर बूथ को डिजिटल व सशक्त बनाकर इतिहास रचेंगे पार्टी कार्यकर्ता: विष्णुदत्त शर्मा

2003 से पहले बीमारू राज्य कहलाने वाला मध्यप्रदेश आज विकसित राज्य बन गया है। महिला सशक्तिकरण के काम में जुटी हमारी सरकार ने प्रदेश में "लाड़ली बहना योजना" लाकर इतिहास बनाया है।

केन्द्र और प्रदेश सरकार के योजनाओं के कारण आज बेटी बोझ नहीं, बल्कि हमारा अभिमान बन गई हैं। यह महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए भाजपा सरकार द्वारा शुरू की गई योजनाओं का ही प्रभाव है कि प्रदेश में अब 1000 बेटों पर 956 बेटियां जन्म ले रही हैं।

बूथ विस्तारक अभियान-2 कोई सामान्य अभियान नहीं, बल्कि एक बहुआयामी अभियान है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी एवं मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान जी के नेतृत्व में गरीबों का जीवन बदलने वाली जो योजनाएं चल रही हैं, उनके हितग्राहियों से बूथ पर मिलना और जो इन योजनाओं से वंचित हैं, उनको लाभ दिलाने का काम हमें करना है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विचार हैं कि संगठन की मजबूती का आधार हमारे बूथ के कार्यकर्ता हैं। इस अभियान के अंतर्गत 'चलो-बूथ-की-ओर' के ध्येय वाक्य को आत्मसात करते हुए हमारे कार्यकर्ता और 12 हजार विस्तारक हर बूथ को डिजिटल व सशक्त बनाकर नया इतिहास रचेंगे।

गरीबों को लाभ दिलाएं, 51 प्रतिशत वोट शेयर के लक्ष्य को पूर्ण करें कार्यकर्ता

2003 से पहले बीमारू राज्य कहलाने वाला मध्यप्रदेश आज विकसित राज्य बन गया है। महिला सशक्तिकरण के काम में जुटी हमारी सरकार ने प्रदेश में '**लाड़ली बहना योजना**' लाकर इतिहास बनाया है। केन्द्र और प्रदेश सरकार के योजनाओं के कारण आज बेटी बोझ नहीं, बल्कि हमारा अभिमान बन गई हैं। यह महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए भाजपा सरकार द्वारा शुरू की गई योजनाओं का ही प्रभाव है कि प्रदेश में अब 1000 बेटों पर 956 बेटियां जन्म ले रही हैं।

प्रधानमंत्री जी ने आवास योजना में गरीबों को घर देकर अपने घर के सपने को पूरा किया है। आयुष्मान भारत आजादी के बाद गरीबों का जीवन बचाने वाला पहला अभियान बन गया है। भाजपा की प्रदेश सरकार ने संबल योजना के माध्यम से गरीबों को संबल दिया। गरीबों का जीवन स्तर उठाना भाजपा का संकल्प है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय और डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी के विचारों पर चलकर आज भाजपा विश्व का सबसे बड़ा दल बनी है। आज देश के 16 राज्यों में भाजपा की सरकारें हैं। सभी कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी है कि शुरू हो रहे अभियान के अंतर्गत समाज के प्रबुद्ध वर्ग, युवाओं और महिलाओं को संगठन से जोड़ने के साथ ही भाजपा सरकार की गरीब हितैषी योजनाओं का लाभ भी पात्र नागरिकों को दिलाने में जुट जाएं, जिससे हमें बूथों पर 51 प्रतिशत वोट प्राप्त करने में मदद मिलेगी।

बूथ विस्तारक अभियान का मतलब लोगों के बीच रहना, उन्हें पार्टी से जोड़ना है- शिवराजसिंह चौहान

बूथ विस्तारक अभियान-2 का मतलब सिर्फ चुनाव के समय नहीं बल्कि हमेशा लोगों के बीच रहना है। उन्हें केंद्र व राज्य सरकार की जनहितैषी योजनाओं का लाभ दिलाना और पार्टी के साथ जोड़ना भी है।

आमजन को पार्टी से जोड़ें

सरकार का काम लोगों के जीवन को बेहतर बनाना है। इसके लिए केंद्र व राज्य सरकार विभिन्न योजनाएं चला रही हैं, जिनका लाभ सबको मिलता है। हितग्राहियों को इन योजनाओं का लाभ दिलाएं और उन्हें यह समझाएं भी कि

प्रधानमंत्री जी ने आवास योजना में गरीबों को घर देकर अपने घर के सपने को पूरा किया है। आयुष्मान भारत आजादी के बाद गरीबों का जीवन बचाने वाला पहला अभियान बन गया है।

उन्हें इस योजना का लाभ कैसे मिल रहा है। अगर कार्यकर्ता हितग्राहियों को यह बात समझाने में सफल हो गए, तो उनके मन में भारतीय जनता पार्टी के प्रति प्रेम जागेगा।

जब हम आमजन को योजनाओं का लाभ पहुंचायेंगे तो वह हमसे पारिवारिक रूप से जुड़ जाएंगे। फिर कांग्रेस चाहे कितनी भी ताकत लगा ले, लोग भारतीय जनता पार्टी से दूर नहीं जा पाएंगे। हमें घर-घर संपर्क कर लोगों से मित्रवत संबंध बनाना है। किसी भी प्रकार की मुसीबत आने पर उनकी मदद करना है। मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना, जिन परिवारों की सालाना आमदनी ढाई लाख रुपए से कम है, उनके आवेदन भरवाएं। इस योजना का लाभ सभी हितग्राहियों को मिलना चाहिए।

हर बूथ पर जीत हासिल करना है

कांग्रेस ने कभी भी आमजन के बीच काम नहीं किया। लेकिन हमें हर क्षेत्र में, हर वर्ग और समाज के बीच जाना है। प्रत्येक कार्यकर्ता को प्रत्येक बूथ पर अधिकतम वोटों से जीत हासिल करना है और जीत हासिल करेंगे। हम आमजन के साथ मिलकर एक परिवार की तरह काम करेंगे और इतने भाई-बहनों के बीच में रहते हुए हमारी जीत सुनिश्चित है।

प्रधानमंत्री जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष जी के मंत्र को जमीन पर उतारें पार्टी कार्यकर्ता- हितानंद

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी और राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जेपी नड्डा जी ने राष्ट्रीय कार्यसमिति की बैठक में बूथ की मजबूती का मंत्र कार्यकर्ताओं को दिया था। बूथ विस्तारक अभियान-2 के दौरान हमें प्रधानमंत्री जी और राष्ट्रीय अध्यक्ष जी के इसी मंत्र को जमीन पर उतारना है। बूथों को डिजिटल और सशक्त बनाकर संगठन को मजबूती देना है। ▪

बूथ के कार्यकर्ता महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगें - मुरलीधर राव

गत वर्ष हमने बूथ सशक्तिकरण अभियान में बूथों को डिजिटल बनाया और इस काम में मध्यप्रदेश देश में रोल मॉडल बना। तकनीकी के उपयोग में मध्यप्रदेश के कार्यकर्ता दूसरे प्रदेश के कार्यकताओं से कहीं आगे हैं। पिछले चुनाव में वोट शेयर 41 प्रतिशत था जिसे बढ़ाकर संगठन ने हमें 51 प्रतिशत का लक्ष्य दिया है। बूथ के कार्यकर्ता 2023 के विधानसभा चुनाव में ''अब की बार 200 पार'' और 51 प्रतिशत लक्ष्य को हासिल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगें।

हमारे यहां बूथ केन्द्र, शक्ति केन्द्र की संरचना है, इसे हमें और मजबूत करना है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश और मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान के नेतृत्व में प्रदेश में संचालित जन कल्याणकारी योजना का लाभ सभी वर्गों को मिल रहा है। हमें निरंतर बूथ, मंडल और शक्ति केंद्र पर तैनात होकर गरीबों का जीवन बदलने वाली योजनाओं के हितग्राहियों से बूथ पर मिलना और जो लोग योजनाओं से वंचित हैं उनको जोड़ने का काम करना है। सभी कार्यकर्ताओं को पूरी ऊर्जा के साथ कार्य करके चुनाव में विजयश्री दिलानी है। पार्टी ने बूथ सशक्तिकरण अभियान को लेकर जो करणीय कार्य निर्धारित किए है, बूथ स्तर पर उन सभी कार्यों को तय समय सीमा में पूर्ण करें। अगर हम अपने बूथ को सशक्त कर लेंगे तो कोई भी चुनाव जीतना हमारें लिए आसान है। ▪

भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था का भरोसा

नया भारत, अब नए सामर्थ्य से आगे बढ़ रहा है। आज भारत के पास दुनिया का एक मजबूत फाइनेंसियल सिस्टम है। जो बैंकिंग व्यवस्था 8-10 साल पहले डूबने की कगार पर थी, वो अब लाभ में आ गई है। आज ऐसी सरकार है जो लगातार साहसपूर्ण निर्णय कर रही है, नीतिगत निर्णयों में बहुत ही clarity है, conviction है, confidence भी है।

कोरोना वैश्विक महामारी के दौरान भारत की fiscal और monetary policy का प्रभाव पूरा विश्व देख रहा है। ये बीते 9 वर्षों में भारत की इकॉनॉमी के फंडामेंटल्स को मजबूत करने के सरकार के प्रयासों का ही नतीजा है। एक समय था जब भारत पर भरोसा करने से पहले भी सौ बार सोचा जाता था। हमारी Economy हो, हमारा बजट हो, हमारे लक्ष्य हों, जब भी इनकी चर्चा होती थी तो शुरुआत एक Question Mark के साथ होती थी और उसका End भी एक Question Mark से ही होता था। अब जब भारत Financial Discipline, Transparency और Inclusive अप्रोच को लेकर चल रहा है तो एक बहुत बड़ा बदलाव भी हम देख रहे हैं। अब चर्चा की शुरुआत पहले की तरह Question Mark की जगह विश्वास ने ले ली है और चर्चा के अंत वाले समय में भी Question Mark की जगह अपेक्षा ने ले ली है। भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था का Bright Spot कहा जा रहा है। भारत आज जी-20 की प्रेसिडेंसी का दायित्व भी उठा रहा है। 2021-22 में अब तक का सबसे ज्यादा FDI देश को प्राप्त हुआ है। इस निवेश का बड़ा हिस्सा मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में हुआ है। PLI स्कीम का लाभ उठाने के लिए लगातार एप्लिकेशन आ रही हैं। हम ग्लोबल सप्लाई चेन का अहम हिस्सा भी बनते जा रहे हैं। निश्चित तौर पर ये कालखंड भारत के लिए बहुत बड़ा अवसर लेकर आया है।

नया भारत, अब नए सामर्थ्य से आगे बढ़ रहा है। आज भारत के पास दुनिया का एक मजबूत फाइनेंसियल सिस्टम है। जो बैंकिंग व्यवस्था 8-10 साल पहले डूबने की कगार पर थी, वो अब लाभ में आ गई है। आज ऐसी सरकार है जो लगातार साहसपूर्ण निर्णय कर रही है, नीतिगत निर्णयों में बहुत ही clarity है, conviction है, confidence भी है।

आज समय की मांग है कि भारत के बैंकिंग सिस्टम में आई मजबूती का लाभ ज्यादा से ज्यादा आखिरी छोर तक जमीन तक पहुंचे। जैसे हमने MSME's को सपोर्ट किया, वैसे ही भारत के बैंकिंग सिस्टम को ज्यादा से ज्यादा सेक्टर्स की Hand Holding करनी होगी। महामारी के दौरान 1 करोड़ 20 लाख MSME's को सरकार से बहुत बड़ी मदद मिली है। इस वर्ष के बजट में MSME सेक्टर को 2 लाख करोड़ का एडिशनल कोलेटरल फ्री गारंटीड क्रेडिट भी मिला है। अब ये बहुत जरूरी है कि हमारे बैंक उन तक पहुंच बनाएं और उन्हें पर्याप्त फाइनेंस उपलब्ध कराएं।

Financial Inclusion से जुड़ी सरकार की नीतियों ने करोड़ों लोगों को फॉर्मल फाइनेंशियल सिस्टम का हिस्सा बना दिया है। बिना बैंक गारंटी, 20 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा का मुद्रा लोन, सरकार ने ये बहुत बड़ा काम नौजवानों के सपने पूरे करने में सार्थक काम किया है, मदद की है। पीएम स्वनिधि योजना के माध्यम से 40 लाख से ज्यादा रेहड़ी-पटरी वालों, छोटे दुकानदारों को, पहली बार बैंकों से मदद मिलनी संभव हुई है। सभी स्टेकहोल्डर्स को cost of credit कम करने, speed of credit को बढ़ाने और small entrepreneurs तक तेजी से पहुंचाने के लिए भी processes को re-engineer करना बहुत जरूरी है और उसमें technology भी बहुत मदद कर सकती है। और तभी भारत के बढ़ते बैंकिंग सामर्थ्य का ज्यादा से ज्यादा लाभ, भारत के गरीबों को होगा, उन लोगों को होगा जो स्वरोजगार करके अपनी गरीबी दूर करने का तेजी से प्रयास कर रहे हैं।

एक विषय वोकल फॉर लोकल और आत्मनिर्भरता का भी है। ये हमारे लिए choice का मुद्दा नहीं है। महामारी के दौरान हम देख चुके हैं, ये भविष्य को प्रभावित करने वाला मुद्दा है। वोकल फॉर लोकल और आत्मनिर्भरता का विजन, एक national responsibility है। वोकल फॉर लोकल और आत्मनिर्भरता मिशन इसके लिए देश में एक अभूतपूर्व उत्साह हम देख रहे हैं। इस वजह से घरेलू उत्पादन तो बढ़ा ही है, एक्सपोर्ट में भी रिकॉर्ड वृद्धि आई है। सामान हो या सेवा का क्षेत्र हो, हमारा निर्यात 2021-22 में all-time high रहा। एक्सपोर्ट बढ़ रहा है यानि भारत के लिए बाहर ज्यादा से ज्यादा संभावनाएं बन रही हैं। ऐसे में, हर कोई ये जिम्मेदारी ले सकता है कि वो स्थानीय कारीगरों को बढ़ावा देगा, वो को प्रोत्साहित करेगा। अलग-अलग समूह, संगठन, chambers of commerce, industrial associations जितने भी व्यापार, उद्योग जगत के संगठन हैं वे मिलजुल कर के बहुत सारे initiative ले सकते हैं, कदम उठा सकते हैं। जिले के उन उत्पादों की पहचान कर सकते हैं, जिनका बड़े पैमाने पर निर्यात किया जा सकता है।

वोकल फॉर लोकल की बात करते हुए हमें स्पष्टता रखनी होगी। ये सिर्फ भारतीय कुटीर उद्योग से चीजें खरीदने से कहीं ज्यादा बढ़ा है, वरना हम तो दीवाली के दीयों में ही अटक जाते हैं। हमें देखना होगा कि ऐसे कौन से क्षेत्र हैं जहां हम भारत में ही Capacity Building करके, देश का पैसा बचा सकते हैं। अब देखिए Higher Education के नाम पर हर साल देश का हजारों करोड़ रुपए बाहर जाता है। क्या इसे भारत में ही एज्युकेशन सेक्टर में निवेश करके कम नहीं किया जा सकता? Edible oil मंगाने के लिए भी हम हजारों करोड़ रुपए बाहर भेजते हैं। क्या हम इस क्षेत्र में आत्मनिर्भर नहीं बन सकते हैं?

इस साल के बजट में Capital expenditure में भारी बढ़ोत्तरी हुई है। इसके लिए 10 लाख करोड़ का प्रावधान किया गया है। पीएम गति शक्ति की वजह से प्रोजेक्ट की प्लानिंग और उसे लागू करने में अभूतपूर्व तेजी आ गई है। हमें अलग-अलग geographical areas और economic sectors की प्रगति के लिए काम करने वाले प्राइवेट सेक्टर को भी ज्यादा से ज्यादा सपोर्ट करना होगा।

बजट के बाद टैक्स को लेकर के भी काफी बातें होती रही हैं। एक समय तो हर तरफ यही बात छाई रहती थी, भूतकाल में भारत में टैक्स रेट कितना ज्यादा था। आज भारत में स्थिति बिल्कुल अलग है। GST की वजह से, इनकम टैक्स कम होने की वजह से, कॉरपोरेट टैक्स कम होने की वजह से भारत में टैक्स बहुत कम हुआ है, वो burden नागरिकों पर बहुत कम होता जा रहा हैं। लेकिन इसका एक और Aspect भी है। 2013-14 के दरमियान हमारा gross tax revenue करीब 11 लाख करोड़ था। 2023-24 के बजट में अनुमानों के मुताबिक gross tax revenue अब 33 लाख करोड़ से ज्यादा का हो सकता है। ये बढ़ोत्तरी 200 प्रतिशत की है। यानि भारत टैक्स का रेट कम कर रहा है लेकिन इसके बावजूद टैक्स का कलेक्शन लगातार बढ़ रहा हैं। हमने अपना टैक्स, उस टैक्स बेस को भी बढ़ाने की दिशा में काफी कुछ किया हैं। 2013-14 में करीब साढ़े 3 करोड़ individual tax returns फाइल होते थे। 2020-21 में ये बढ़कर साढ़े 6 करोड़ हो चुका है।

टैक्स देना एक ऐसा कर्तव्य है, जो सीधे-सीधे राष्ट्र निर्माण से जुड़ा है। टैक्स बेस में बढ़ोत्तरी इस बात का प्रमाण है कि लोगों को सरकार पर भरोसा है, और वो मानते हैं कि जो टैक्स वो दे रहे हैं, उसे Public Good के लिए ही खर्च किया जा रहा है। उद्योग जगत से जुड़े होने के नाते और economic output के सबसे बड़े generator के तौर पर ये हमारी जिम्मेदारी है कि टैक्स बेस की बढ़ोत्तरी को प्रोत्साहित किया जाए।

भारत के पास ऐसे टैलेंट, इंफ्रास्ट्रक्चर और इनोवेटर्स हैं, जो हमारे फाइनेंशियल सिस्टम को टॉप पर पहुंचा सकते हैं। ''इंडस्ट्री फोर प्वाइंट ओ'' के इस दौर में भारत आज जिस तरह के प्लेटफॉर्म विकसित कर रहा है, वो पूरी दुनिया के लिए मॉडल बन रहा है। GeM यानि गवर्नमेंट ई मार्केट प्लेस ने भारत के दूर-सुदूर में रहने वाले छोटे दुकानदार को भी सरकार को सीधे अपना सामान बेचने का सामर्थ्य दिया है। भारत जिस तरह डिजिटल करेंसी में आगे बढ़ रहा है, वो भी अभूतपूर्व है। आजादी के 75वें वर्ष में डिजिटल तरीके से 75 हजार करोड़ ट्रांजैक्शन ये बताता है कि UPI का विस्तार कितना व्यापक हो चुका है। RuPay और UPI, सिर्फ कम लागत और अत्यधिक सुरक्षित टेक्नोलॉजी भर नहीं है, बल्कि ये दुनिया में हमारी पहचान है। इसे लेकर इनोवेशन की अपार संभावनाएं हैं। UPI पूरी दुनिया के लिए financial inclusion और empowerment का माध्यम बने, हमें इसके लिए मिलकर के काम करना है। हमारे जो financial institutions हैं उन्हें fintechs की reach को बढ़ाने के लिए उनके साथ ज्यादा से ज्यादा partnership भी करनी चाहिए।

अर्थव्यवस्था को मजबूती देने के लिए, कई बार बहुत छोटे-छोटे प्रयासों से बड़ा असर होता है। जैसे एक विषय है, बिना बिल लिए, सामान खरीदने की आदत। लोगों को लगता है कि इससे हमारा तो कोई नुकसान हो नहीं रहा है, इसलिए वो अक्सर बिल के लिए Push भी नहीं करते। जितना ज्यादा लोगों को ये पता चलेगा कि बिल लेने से देश का फायदा होता है, देश प्रगति की राह पर जाने के लिए ये बहुत बड़ी व्यवस्था विकसित होती है और फिर देखिएगा, लोग आगे बढ़कर के बिल की मांग जरूर करेंगे। हमें बस लोगों को ज्यादा से ज्यादा जागरूक करने की जरूरत है।

भारत के आर्थिक विकास का फायदा हर वर्ग तक पहुंचे, हर व्यक्ति को मिले, इसके लिए, हमें well-trained professionals का एक बड़ा पूल भी तैयार करना होगा। हम सबका दायित्व है कि इस बजट का maximum लाभ देश को मिले, समय-सीमा में मिले, एक निश्चित रोडमैप पर हम आगे बढ़े। ▪

प्रौद्योगिकी से जीवन आसान

हमारा प्रयास हर गरीब और वंचित के जीवन को आसान बना रहा है, उनकी Ease of Living बढ़ा रहा है। लोगों के जीवन में सरकार का दखल और दबाव भी कम हो गया है।

21 वीं सदी का बदलता हुआ भारत, अपने नागरिकों को Technology की ताकत से लगातार नागरिकों को Empower कर रहा है। बीते वर्षों में हमारी सरकार के हर बजट में, Technology की मदद से देशवासियों की Ease of Living बढ़ाने पर जोर दिया गया है। इस बार के बजट में भी Technology लेकिन साथ-साथ Human Touch को प्राथमिकता यह हमारा प्रयास हुआ है।

एक जमाना था, जब हमारे देश में सरकार की प्राथमिकताओं में बहुत ज्यादा विरोधाभास नजर आता था। समाज का एक वर्ग ऐसा था, जो चाहता था कि उनके जीवन में हर कदम पर सरकार का कोई न कोई intervention हो, सरकार का प्रभाव हो, यानी सरकार उनके लिए कुछ न कुछ करे। लेकिन पहले की सरकारों के समय इस वर्ग ने हमेशा अभाव ही महसूस किया। अभाव में जिंदगी जूझने में ही निकल जाती थी। समाज में ऐसे लोगों का भी वर्ग था, यह दूसरे प्रकार का था। जो स्वयं के सामर्थ्य से आगे बढ़ना चाहता था, लेकिन पहले की सरकारों के समय ये वर्ग भी हमेशा दबाव, सरकारी दखल भांति-भांति की रूकावटें डगर-डगर पर महसूस करता रहा। हमारी सरकार के बीते कुछ वर्षों के प्रयासों से अब ये स्थिति बदलने लगी है। आज सरकार की नीतियों और निर्णयों का सकारात्मक प्रभाव हर उस जगह दिखने लगा है जहां इसकी सबसे ज्यादा जरूरत है।

हमारा प्रयास हर गरीब और वंचित के जीवन को आसान बना रहा है, उनकी Ease of Living बढ़ा रहा है। लोगों के जीवन में सरकार का दखल और दबाव भी कम हो गया है। आज लोग सरकार को रास्ते की रुकावट नहीं मानते। बल्कि लोग हमारी सरकार को नए अवसरों के catalyst के तौर पर देखते हैं। और निश्चित तौर पर इसमें Technology की बहुत बड़ी भूमिका रही है। Technology, वन नेशन-वन राशन कार्ड का आधार बनी और इससे करोड़ों गरीबों को पारदर्शिता से राशन मिलना सुनिश्चित हुआ। और दूसरे जो प्रवासी मजदूर होते हैं। जो माइग्रेटेड लेबर्स होते हैं, उनके लिए तो एक बहुत बड़ा आशीर्वाद बन गया। Technology, जनधन अकाउंट, आधार और मोबाइल इन तीनों के कारण करोड़ों गरीबों के बैंक खातों में सीधे पैसा भेजना संभव हुआ।

उसी प्रकार से Technology, आरोग्य सेतु और कोविन एप उसका एक महत्वपूर्ण साधन बनी और इससे कोरोना के दौरान ट्रेसिंग और वैक्सीनेशन में बड़ी मदद मिली। Technology ने रेलवे रिजर्वेशन को और आधुनिक बनाया और सामान्य से सामान्य मानवी का इसमें

कितना बड़ा सिरदर्द दूर हो गया है। कॉमन सर्विस सेंटर का नेटवर्क भी गरीब से गरीब व्यक्ति को Technology के माध्यम से सरकारी सेवाओं से बड़ी आसानी से जोड़ रहा है। ऐसे अनेक फैसले लेकर हमारी सरकार ने देशवासियों की Ease of Living बढ़ाई है।

आज भारत का हर नागरिक इस बदलाव को स्पष्ट तौर पर महसूस कर रहा है कि अब सरकार के साथ संवाद करना कितना आसान हो गया है। यानी सरकार तक देशवासी, आसानी से अपनी बात पहुंचा पा रहे हैं, और उसका समाधान भी उन्हें तुरंत मिल रहा है। जैसे, टैक्स से संबंधित शिकायतें पहले बहुत ज्यादा होती थीं, और उसके कारण उसके माध्यम से Tax payers को कई तरीके से परेशान किया जाता था। इसलिए हमने Technology की मदद से टैक्स की पूरी प्रक्रिया को Faceless कर दिया। अब आपकी शिकायतों और उसके निपटारे के बीच कोई व्यक्ति नहीं सिर्फ Technology है। दूसरे विभागों में भी टेक्नॉलाजी की मदद से हम ज्यादा बेहतर तरीके से समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। अलग-अलग विभाग अपनी सेवाओं को Global Standard का बनाने के लिए मिलकर टेक्नॉलाजी का उपयोग कर सकते हैं। इससे एक कदम आगे बढ़ते हुए, हम उन क्षेत्रों की भी पहचान कर सकते हैं जहां सरकार से संवाद को और आसान बनाया जा सकता है।

मिशन कर्मयोगी के द्वारा सरकारी कर्मचारियों को ट्रेनिंग दे रहे हैं। इस ट्रेनिंग के पीछे हमारा उद्देश्य यही है कि कर्मचारियों को citizen-centric बनाया जाए। इस ट्रेनिंग कोर्स को अपडेट करते रहने की जरूरत है। लेकिन इसका बेहतर परिणाम तभी मिलेगा जब इसमें बदलाव लोगों के फीडबैक के आधार पर हो। हम एक ऐसा सिस्टम तैयार कर सकते हैं जिससे ट्रेनिंग कोर्स को बेहतर बनाने के लिए लोगों के सुझाव मिलते रहें।

Technology, हर किसी तक सही और सटीक इन्फॉर्मेशन पहुंचाकर सबको आगे बढ़ने का समान अवसर दे रही है। हमारी सरकार टेक्नॉलाजी को बढ़ावा देने के लिए बड़े पैमाने पर Invest कर रही है। हम भारत में आधुनिक डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार कर रहे हैं। साथ ही ये भी सुनिश्चित कर रहे हैं कि डिजिटल क्रांति का फायदा समाज के हर वर्ग तक पहुंचे। आज GeM पोर्टल ने दूर-दराज के छोटे दुकानदार या रेहड़ी-पटरी वालों को भी ये अवसर दिया है कि वो सरकार को सीधे अपना प्रोडक्ट बेच सकें। e-NAM ने किसानों को अलग-अलग जगहों के खरीदारों से जुड़ने का अवसर दिया है। अब किसान एक ही जगह रहते हुए अपनी उपज का सबसे अच्छा मूल्य पा सकते हैं।

आजकल 5G और AI की चर्चा तो काफी दिनों से हो रही है। ये भी कहा जा रहा है कि इंडस्ट्री, मेडिसिन, एजुकेशन, एग्रीकल्चर और तमाम सेक्टर में बड़े बदलाव आने वाले हैं। लेकिन अब हमें अपने लिए कुछ विशेष लक्ष्य तय करने होंगे। वो कौन से तरीके हैं जिससे इस टेक्नॉलाजी का उपयोग सामान्य मानवी की बेहतरी के लिए किया जा सकता है? वो कौन से सेक्टर्स हैं जिन पर हमें ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है? क्या हम समाज की 10 ऐसी समस्याओं की पहचान कर सकते हैं, जिनका समाधान AI के माध्यम से हो सकता है? जब हैकेतऑन करते हैं देश के नौजवानों के सामने टेक्नोलॉजी के द्वारा solution की बात करते हैं और लाखों नौजवान जुड़ते हैं और बहुत अच्छे solution देते हैं।

टेक्नॉलाजी की मदद से हम, हर व्यक्ति के लिए डिजिलॉकर की सुविधा लेकर आए हैं, अब Digilocker for entities की सुविधा है। यहां कंपनियां, MSME अपनी फाइलों को स्टोर कर सकते हैं, और उसे विभिन्न रेगुलेटर्स और सरकारी विभागों के साथ साझा कर सकते हैं। डिजिलॉकर के कॉन्सेप्ट को और विस्तार देने की जरूरत है, हमें देखना होगा कि और किस तरीके से लोगों तक इसका फायदा पहुंचाया जा सकता है।

पिछले कुछ वर्षों में हमने MSME को सपोर्ट करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इस बात पर मंथन की जरूरत है कि भारत के लघु उद्योगों को बड़ी कंपनी बनने में कौन-कौन सी बाधाएं आती हैं? हम छोटे व्यवसायों और छोटे उद्योगों के लिए compliance cost को कम करना चाहते हैं। बिजनेस में कहा जाता है कि time is money इसलिए compliance में लगने वाले समय की बचत का मतलब है compliance cost की बचत। अगर आप अनावश्यक compliances की लिस्ट बनाना चाहते हैं, तो यही सही समय है, क्योंकि हम पहले ही 40 हजार compliances खत्म कर चुके हैं।

सरकार और लोगों के बीच विश्वास की कमी गुलामी की मानसिकता का परिणाम है। लेकिन आज छोटी गलतियों को de-criminalize करके, और MSME लोन के गारंटर के तौर पर सरकार ने लोगों का भरोसा जीता है। लेकिन हमें रुकना नहीं है, हमें ये भी देखना होगा कि दुनिया के दूसरे देशों में समाज के साथ विश्वास मजबूत करने के लिए क्या किया गया है। हम उनसे सीखकर अपने देश में भी वैसे प्रयास कर सकते हैं।

बजट या किसी सरकारी पॉलिसी की सफलता कुछ हद तक इस बात पर निर्भर करती है कि उसे कितने अच्छे तरीके से तैयार किया गया है। लेकिन इससे ज्यादा उसे लागू करने का तरीका महत्वपूर्ण होता है, इसमें लोगों का सहयोग बहुत अहम है।

मैन्यूफैक्चरिंग हब बनाना है। जीरो डिफेक्ट, जीरो इफेक्ट प्राथमिकता होनी चाहिए। क्वालिटी में कोई कॉम्प्रोमाइज नहीं होना चाहिए। और उसमें टेक्नोलॉजी बहुत मदद कर सकती है। हम टेक्नोलॉजी की मदद से प्रोडक्शन में बहुत बारीकियों तक बहुत ही finish way में प्रोडक्ट ले करके आ सकते हैं। और तभी ग्लोबल मार्केट हम कैप्चर कर सकते हैं।

इस बात को स्वीकार करना होगा कि 21वीं सदी टेक्नोलॉजी ड्रिवन है। जीवन में टेक्नोलॉजी का प्रभाव बहुत बढ़ने वाला है। अपने आप को इंटरनेट और डिजिटल टेक्नोलॉजी तक सीमित न रखे। उसी प्रकार से आज जैसे ऑप्टीकल फाइबर नेटवर्क गांव-गांव पहुंच रहा है। पंचायत तक पहुंचेगा, वेलनेस सेंटर पहुंचेगा, टेली मेडिसन चलेगी, health sector भी पूरी तरह टेक्नोलॉजी ड्रिवन हो रहा है। आज देश बहुत बड़ी मात्रा में जैसे डिफेंस में हम बहुत कुछ आयात करते हैं। हम हेल्थ में भी बहुत कुछ आयात करते हैं।

क्या मेरे देश के उद्योग जगत के लोग टेक्नोलॉजी में upgradation करके उस दिशा में नहीं जा सकते हैं। और इसलिए अब जैसे ऑप्टिकल फाइबर गांव-गांव पहुंच रहा है। जब तक प्राइवेट पार्टी सेवाएं लेने के लिए नहीं आती हैं, नए-नए सॉफ्टवेयर ले करके नहीं आती हैं। सामान्य नागरिक उस ऑप्टिकल फाइबर से क्या सेवाएं ले सकता है, क्या फायदा उठा सकता है। उसके मॉडल को हम डेवलप कर सकते हैं। और हम सब कुछ में जन भागीदारी चाहते हैं। सरकार को ही सब ज्ञान है यह न हमारी सोच है न हमारा दावा है।

21वीं सदी जो कि टेक्नोलॉजी ड्रीवन सदी है जितना जल्दी फैलाएं, जितना जल्दी सरल बनाएं, जितना जल्दी जन सामान्य को empower करने वाला बनाए, उतना देश का भी, लोगों का भी कल्याण होने वाला है और 2047 में विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में टेक्नोलॉजी हमें बहुत बड़ी ताकत देती है। और हम भाग्यवान है कि भारत के पास natural gift है।

हमारे पास talented youth हैं, Skill Menpower है। और भारत के गांव के लोगों को भी टेक्नोलॉजी का एडोप्शन की capability बहुत बड़ी है। हम इसका फायदा उठाएं। ▪

पीएम विश्वकर्मा योजना से कारीगरों, शिल्पकारों की बड़ी मदद होगी

बीते वर्षों में स्किल इंडिया मिशन के माध्यम से, कौशल विकास केंद्रों के माध्यम से करोड़ों युवाओं की स्किल बढ़ाने, उन्हें रोजगार के नए अवसर देने का काम किया है। कौशल जैसे क्षेत्र में हम जितना specific होंगे, जितनी targeted अप्रोच होगी, उतने ही बेहतर परिणाम मिलेंगे।

पीएम विश्वकर्मा कौशल सम्मान योजना अब इसको अगर सरल भाषा में कहना है तो पीएम विश्वकर्मा योजना, ये इसी सोच का नतीजा है। इस बजट में पीएम विश्वकर्मा योजना के एलान से आमतौर पर व्यापक चर्चा हुई है, अखबारों का भी ध्यान गया है, जो अर्थवेत्ता हैं, उनका भी ध्यान गया है। और इसलिए इस योजना की घोषणा ही एक आकर्षण का केंद्र बन गई है। अब इस योजना की आवश्यकता क्या रही, क्यों इसका नाम विश्वकर्मा ही रखा गया, हमारी मान्यताओं में भगवान विश्वकर्मा, सृष्टि के नियंता और निर्माता माने जाते हैं। उन्हें सबसे बड़ा शिल्पकार कहा जाता है और जो विश्वकर्मा की मूर्ति की लोगों ने कल्पना की उनके हाथों में सारे अलग-अलग औजार हैं। हमारे समाज में, अपने हाथ से कुछ ना कुछ सृजन करने वाले और वो भी औजार की मदद से करने वाले, उन लोगों की एक समृद्ध परंपरा रही है। जो टेक्सटाइल के क्षेत्र में काम करते हैं, उनकी तरफ तो ध्यान गया है, लेकिन हमारे लोहार, स्वर्णकार, कुम्हार, बढ़ई, मूर्तिकार, कारीगर, राजमिस्त्री, अनेकों हैं जो सदियों से अपनी विशिष्ट सेवाओं की वजह से समाज का अभिन्न हिस्सा रहे हैं।

इन वर्गों ने बदलती हुई आर्थिक जरूरतों के मुताबिक समय-समय पर खुद में भी बदलाव किया है। साथ ही इन्होंने स्थानीय परंपराओं के अनुसार नई-नई चीजों का विकास भी किया है। अब जैसे महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों में किसान भाई-बहन अनाज को बांस से बने एक स्टोरेज स्ट्रक्चर में रखते हैं। इसे कांगी कहते हैं, और इसे स्थानीय कारीगर ही तैयार करते हैं। इसी तरह, अगर हम कोस्टल एरिया में जाएँ, तटीय इलाकों में जाएं तो समाज की जरूरतों को पूरा करने के लिए तरह-तरह के शिल्प का विकास हुआ है। अब केरल की बात करें तो केरल की

कारीगरों, शिल्पकारों को हम वैल्यू चेन का हिस्सा बनाकर ही उन्हें मजबूत कर सकते हैं। उनमें से कई ऐसे हैं, जो हमारे MSME सेक्टर के लिए सप्लायर और प्रोड्यूसर बन सकते हैं।

उन लोगों को टूल्स और टेक्नोलॉजी की मदद उपलब्ध कराकर उन्हें अर्थव्यवस्था का अहम हिस्सा बनाया जा सकता है।

उरू बोट पूरी तरह हाथ से तैयार की जाती है। मछली पकड़ने वाली इन नौकाओं को वहां के बढ़ई ही तैयार करते हैं। इसे तैयार करने के लिए विशेष तरह का कौशल, दक्षता और विशेषज्ञता चाहिए होती है।

स्थानीय शिल्प के छोटे पैमाने पर उत्पादन और उनके प्रति लोगों का आकर्षण बनाए रखने में कारीगरों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। लेकिन दुर्भाग्य से, हमारे यहां उनकी भूमिका एक प्रकार से समाज के भरोसे ही छोड़ दी गई, और उनकी भूमिका को सीमित कर दिया गया। स्थिति तो ये बना दी गई कि इन कार्यों को छोटा बताया जाने लगा, कम महत्व का बताया जाने लगा। जबकि एक समय ऐसा भी था कि इसी से दुनिया भर में हमारी पहचान थी। ये निर्यात का एक ऐसा प्राचीन मॉडल था, जिसमें बहुत बड़ी भूमिका हमारे कारीगरों की ही थी। लेकिन गुलामी के लंबे कालखंड में ये मॉडल भी चरमरा गया, इसको

बहुत बड़ा नुकसान भी हो गया। आजादी के बाद भी हमारे कारीगरों को सरकार से एक जो intervention की आवश्यकता थी, बहुत ही सुघड़ तरीके से intervention की आवश्यकता थी, जहां जरूरत पड़े मदद की आवश्यकता थी, वो नहीं मिल पाई। नतीजा ये हुआ कि आज अधिकांश लोग इस unorganized सेक्टर से सिर्फ अपना जीवन यापन करने के लिए कुछ न कुछ जुगाड़ करके गुजारा कर लेते हैं। कई लोग अपना पुश्तैनी और पारंपरिक व्यवसाय छोड़ रहे हैं। उनके पास आज की आवश्यकताओं के अनुसार ढलने के लिए सामर्थ्य कम पड़ रहा है।

हम इस वर्ग को ऐसे ही अपने हाल पर नहीं छोड़ सकते हैं। ये वो वर्ग है, जो सदियों से पारंपरिक तरीकों के उपयोग से अपने शिल्प को बचाए हुए हैं। ये वो वर्ग है, जो अपने असाधारण कौशल और यूनिक क्रिएशन्स से अपनी पहचान बनाए हुए हैं। ये आत्मनिर्भर भारत की सच्ची भावना के प्रतीक हैं। हमारी सरकार ऐसे लोगों को, ऐसे वर्गों को नए भारत का विश्वकर्मा मानती है। और इसलिए उनके लिए विशेष तौर पर पीएम विश्वकर्मा कौशल सम्मान योजना शुरू की जा रही है। ये योजना नई है, लेकिन महत्वपूर्ण है।

आमतौर पर हम एक बात सुनते रहते हैं मनुष्य तो सामाजिक प्राणी है। और समाज की विभिन्न शक्तियों के माध्यम से समाज व्यवस्था विकसित होती है, समाज व्यवस्था चलती है। कुछ ऐसी विधाएं होती हैं, जिनके बिना समाज का जीवन बसना भी मुश्किल होता है, बढ़ने का तो सवाल ही नहीं होता है। इसकी कल्पना ही नहीं कर सकते। हो सकता है उन कार्यों को आज टेक्नोलॉजी की मदद मिली हो, उनमें और आधुनिकता आई हो, लेकिन उन कार्यों की प्रासंगिकता पर कोई सवाल नहीं खड़ा कर सकता। जो लोग भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को जानते हैं, वो ये भी जानते हैं कि किसी परिवार में फैमिली डॉक्टर भले हो या ना हो लेकिन आपने देखा होगा, फैमिली सुनार जरूर होता है। यानी हर परिवार पीढ़ी दर पीढ़ी एक खास सुनार परिवार के यहां से ही गहने बनवाते हैं, गहने खरीदते हैं। ऐसे ही गांव में, शहरों में विभिन्न कारीगर हैं जो अपने हाथ के कौशल से औजार का उपयोग करते हुए जीवन यापन करते हैं। पीएम विश्वकर्मा योजना का फोकस ऐसे एक बहुत बड़े बिखरे हुए समुदाय की तरफ है।

महात्मा गांधी जी के ग्राम स्वराज की कल्पना को देखें तो गांव के जीवन में खेती-किसानी के साथ ही अन्य व्यवस्थाएं भी उतनी ही महत्वपूर्ण होती हैं। गांव के विकास के लिए गांव में रहने वाले हर वर्ग को सक्षम बनाना, आधुनिक बनाना, ये हमारी विकास यात्रा के लिए आवश्यक है। आदिवासी जनजातीय क्षेत्र के हस्तकला में और अन्य कामों में जो उन लोगों की महारत है, वहां जो लाख से चूड़ी बनाने वाले, ये लाख से चूड़ी कैसे बनाते हैं, उसकी प्रिंटिंग कैसे करते हैं, और गांव की महिलाएं कैसे कर रही हैं। साइज के विषय में उनके पास क्या टेक्नोलॉजी है।

उसी प्रकार से हमारे जो लोहे का काम करने वाले हमारे लोहार भाई-बहन हैं, मिट्टी के बर्तन बनाने वाले हमारे कुम्हार भाई-बहन हैं, लकड़ी का काम करने वाले हमारे लोग हैं, सोने का काम करने वाले हमारे सुनार हैं, इन सभी को अब सपोर्ट किया जाना आवश्यक है। जैसे हमने छोटे दुकानदारों के लिए, रेहड़ी-पटरी वालों के लिए पीएम स्वनिधि योजना बनाई, इसका उन्हें लाभ मिला, वैसे ही पीएम विश्वकर्मा योजना के माध्यम से करोड़ों लोगों की बड़ी मदद होने जा रही है। यूरोप में जो गुजराती वहां ज्वैलरी के बिजनेस में हैं, ऐसे लोगों से मिलना हुआ। तो मैंने कहा आजकल क्या है, उन्होंने कहा ज्वैलरी में तो इतनी टेक्नोलॉजी आई है, इतनी मशीन आई हैं, लेकिन आमतौर पर जो हाथ से बनी हुई ज्वैलरी है, उसका बहुत आकर्षण है और बहुत बड़ा मार्केट है, यानी इस विधा का भी सामर्थ्य है। ऐसे कई अनुभव हैं और इसलिए इस योजना के द्वारा केंद्र सरकार, हर विश्वकर्मा साथी को होलिस्टिक इंस्टीट्यूशनल सपोर्ट प्रदान करेगी। विश्वकर्मा साथियों को आसानी से लोन मिले, उनका कौशल बढ़े, उन्हें हर तरह का टेक्निकल सपोर्ट मिले, ये सब सुनिश्चित किया जाएगा। इसके अलावा, digital empowerment, ब्रांड प्रमोशन और उत्पादों के बाजार तक पहुंच बनाने की व्यवस्था भी की जाएगी। रॉ-मैटेरियल भी सुनिश्चित किया जाएगा। इस योजना का उद्देश्य पारंपरिक कारीगरों और शिल्पकारों की समृद्ध परंपरा को संरक्षित तो करना ही करना है, उसका बहुत विकास करना है।

अब हमें स्किल इंफ्रास्ट्रक्चर सिस्टम को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार नए सिरे से तैयार करने की जरूरत है। सरकार आज मुद्रा योजना के जरिए, करोड़ों रुपए का लोन बिना बैंक गारंटी दे रही है। इस योजना का भी हमारे विश्वकर्मा साथियों को ज्यादा से ज्यादा लाभ देना है। हमारे जो डिजिटल साक्षरता वाले अभियान हैं, उनमें भी हमें अब विश्वकर्मा साथियों को प्राथमिकता देनी है। हमारा उद्देश्य आज के विश्वकर्मा साथियों को कल का बड़ा entrepreneur बनाने का है। इसके लिए उनके उप-बिजनेस मॉडल में स्थायित्व जरूरी है। इसे ध्यान में रखते हुए, हम उनके बनाए प्रोडक्ट को बेहतर बनाने, आकर्षक डिजाइनिंग, पैकेजिंग और ब्रांडिंग पर भी काम कर रहे हैं। इसमें ग्राहकों की जरूरतों का भी ध्यान रखा जा रहा है। हमारी नजर सिर्फ स्थानीय बाजार पर ही नहीं है, बल्कि हम ग्लोबल मार्केट को भी टारगेट कर रहे हैं। कारीगरों, शिल्पकारों को हम वैल्यू चेन का हिस्सा बनाकर ही उन्हें मजबूत कर सकते हैं। उनमें से कई ऐसे हैं, जो हमारे MSME सेक्टर के लिए सप्लायर और प्रोड्यूसर बन सकते हैं। उन लोगों को टूल्स और टेक्नोलॉजी की मदद उपलब्ध कराकर उन्हें अर्थव्यवस्था का अहम हिस्सा बनाया जा सकता है।

उद्योग जगत इन लोगों को अपनी जरूरतों के साथ MSME करके उत्पादन बढ़ा सकता है। उद्योग जगत उन्हें स्किल और क्वालिटी की ट्रेनिंग भी दे सकता है। सरकारें अपनी योजनाओं में बेहतर तालमेल बना सकती हैं और बैंक इन प्रोजेक्ट्स को फाइनेंस कर सकते हैं। इस तरह, ये हर stakeholder के लिए win-win Situation हो सकती है। कॉर्पोरेट कंपनियों को competitive प्राइस पर क्वालिटी प्रोडक्ट मिल सकता है। बैंकों का पैसा ऐसी योजनाओं में लगेगा जिस पर भरोसा किया जा सकता है। और इससे सरकार की योजनाओं का व्यापक असर दिखेगा। हमारे स्टार्टअप्स भी ई-कॉमर्स मॉडल के द्वारा शिल्प उत्पादों के लिए बड़ा बाजार तैयार कर सकते हैं। इन उत्पादों को बेहतर टेक्नोलॉजी, डिजाइन, पैकेजिंग और फाइनेंसिंग में भी स्टार्टअप्स से मदद मिल सकती है। पीएम-विश्वकर्मा के द्वारा प्राइवेट सेक्टर के साथ साझेदारी और मजबूत होगी। इससे प्राइवेट सेक्टर की इनोवेशन की ताकत और बिजनेस कौशल का हम पूरा फायदा उठा सकेंगे।

हम उन लोगों तक पहुंचने की कोशिश कर रहे हैं जो बहुत दूर-सुदूर क्षेत्रों में भी रहते हैं। उनमें कई लोगों को पहली बार सरकारी योजना का लाभ मिलने की संभावना है। ज्यादातर हमारे भाई-बहन दलित, आदिवासी, पिछड़े, महिला और दूसरे कमजोर वर्गों से ही हैं। इसलिए एक व्यावहारिक और प्रभावशाली रणनीति बनाने की जरूरत है। जिसके द्वारा हम जरूरतमंदों तक पहुंच सकें और उन्हें पीएम विश्वकर्मा योजना के बारे में बता सकें। उन तक योजना का लाभ पहुंचा सकें। एक समय सीमा तय करके हमें मिशन मोड में काम करना ही है। ▪

मिशन मोड में पर्यटन का विकास

आज का नया भारत, नए Work-Culture के साथ आगे बढ़ रहा है। इस बार भी बजट की खूब वाहवाही हुई है, देश के लोगों ने इसे बहुत पॉजिटिव तरीके से लिया है। अगर पुराना वर्क कल्चर होता, तो इस तरह के बजट के बारे में कोई सोचता ही नहीं। लेकिन आज हमारी सरकार बजट के पहले भी और बजट के बाद भी हर स्टेकहोल्डर के साथ विस्तार से चर्चा करती है, उनको साथ लेकर के चलने का प्रयास करती है। बजट का Maximum Outcome कैसे आए, बजट का Implementation तय समय सीमा के भीतर कैसे हो, जो लक्ष्य बजट में तय किए गए हैं, उन्हें प्राप्त करना है।

Head of the Government के तौर पर काम करते हुए 20 साल से भी अधिक समय के अनुभव का एक निचोड़ ये भी है कि जब किसी नीतिगत निर्णय से सभी स्टेकहोल्डर्स जुड़ते हैं तो रिजल्ट भी मनचाहा आता है, समय सीमा के भीतर आता है।

भारत में हमें टूरिज्म सेक्टर को नई ऊंचाई देने के लिए Out of The Box सोचना होगा और Long Term Planning करके चलना होगा। जब भी कोई टूरिस्ट डेस्टिनेशन को विकसित करने की बात आती है तो कुछ बातें बहुत महत्वपूर्ण होती हैं, जैसे उस स्थान का Potential क्या है? Ease of Travel के लिए वहां की Infrastructural Need क्या है, उसे कैसे पूरा करेंगे? इस पूरे टूरिस्ट डेस्टिनेशन को प्रमोशन के लिए हम और क्या-क्या नए तरीके अपना सकते हैं। इन सारे सवालों का जवाब आपको भविष्य का रोडमैप बनाने में बहुत मदद करेगा। अब जैसे हमारे देश में टूरिज्म का पोटेंशियल बहुत ज्यादा है। कोस्टल टूरिज्म, Beach टूरिज्म, Mangrove टूरिज्म, हिमालयन टूरिज्म, एडवेंचर टूरिज्म, वाइल्डलाइफ टूरिज्म, Eco टूरिज्म, हेरीटेज टूरिज्म, स्पीरिचुअल टूरिज्म, वेडिंग डेस्टिनेशन, कॉन्फ्रेंसस के द्वारा टूरिज्म, स्पोर्टस के द्वारा टूरिज्म ऐसे अनेक क्षेत्र हैं। अब देखिए रामायण सर्किट, बुद्ध सर्किट, कृष्णा सर्किट, नार्थ ईस्ट सर्किट, गांधी सर्किट, हमारे यहां महान गुरू परंपरा हुई उनके सारे तीर्थ क्षेत्र से पूरा पंजाब भरा पड़ा है। हमें इन सभी को ध्यान में रखते हुए मिलकर के काम करना ही है। इस वर्ष के बजट में देश में कंपीटिटिव स्पीरिट से, चैलेंज रूट से देश के कुछ टूरिस्ट डेस्टिनेशन्स को डेवलपमेंट के लिए select करने की बात कही गई है। ये चैलेंज हर स्टेकहोल्डर को साथ मिलकर प्रयास करने के लिए प्रेरित करेगा। बजट में टूरिस्ट डेस्टिनेशन्स इसके एक holistic development पर भी फोकस किया गया है। इसके लिए अलग-अलग स्टेकहोल्डर्स को हम कैसे एंगेज कर सकते हैं, इस पर विस्तार से चर्चा होनी चाहिए।

जब हम टूरिज्म की बात करते हैं, तो कुछ लोगों को लगता है कि एक फैंसी सा शब्द है, समाज के High Income Group से और उन्हीं लोगों को Represent करता है। लेकिन भारत के संदर्भ में देखें तो टूरिज्म का दायरा बहुत बड़ा है, बहुत पुराना है। सदियों से हमारे यहां यात्राएं होती रही हैं, ये हमारे सांस्कृतिक-सामाजिक जीवन का हिस्सा रहा है। और वो भी जब संसाधन नहीं थे, यातायात की व्यवस्था ही नहीं थी, बहुत कठिनाई होती थी। तब भी कष्ट उठाकर लोग यात्राओं पर निकल पड़ते थे। चारधाम यात्रा हो, द्वादश ज्योर्लिंग की यात्रा हो, 51 शक्तिपीठ की यात्रा हो, ऐसी कितनी ही यात्राएं हमारे आस्था के स्थलों को जोड़ती थीं। हमारे यहां होने वाली यात्राओं ने देश की एकता को मजबूत करने का भी काम किया है। देश के कितने ही बड़े-बड़े शहरों की पूरी अर्थव्यवस्था, उस पूरे जिले की पूरी अर्थव्यवस्था यात्राओं पर ही निर्भर थी। यात्राओं की इस पुरातन परंपरा के बावजूद, दुर्भाग्य ये रहा कि इन स्थानों पर समय के अनुकूल सुविधाएं बढ़ाने पर ध्यान नहीं दिया गया। पहले सैकड़ों वर्षों की गुलामी और फिर आजादी के बाद के दशकों में इन स्थानों की राजनीतिक उपेक्षा ने देश का बहुत नुकसान किया।

अब आज का भारत इस स्थिति को बदल रहा है। जब यात्रियों के लिए सुविधाएं बढ़ती हैं, तो कैसे यात्रियों में आकर्षण बढ़ता है, उनकी संख्या में भारी वृद्धि होती है और ये भी हम देश में देख रहे हैं। जब वाराणसी में काशी विश्वनाथ धाम का पुनर्निमाण नहीं हुआ था, तो उस समय साल में 70-80 लाख के आसपास ही लोग मंदिर के दर्शन के लिए आते थे। काशी विश्वनाथ धाम का पुनर्निमाण होने के बाद पिछले साल वाराणसी जाने वाले लोगों की संख्या 7 करोड़ को पार कर गई है। इसी तरह जब केदारघाटी में पुनर्निमाण का काम नहीं हुआ था, तो वहां भी सालाना 4-5 लाख लोग ही दर्शन के लिए आते थे। लेकिन पिछले साल 15 लाख से ज्यादा श्रद्धालु बाबा केदार के दर्शन के लिए गए।

गुजरात में पावागढ़ तीर्थ क्षेत्र है। जब वहां का पुनर्निमाण नहीं हुआ था, पुरानी हालत थी, तो मुश्किल से 2 हजार, 5 हजार, 3 हजार इतनी संख्या में लोग आते थे लेकिन वहां जीर्णोद्धार हुआ, कुछ इंफ्रास्ट्रक्चर बना, सुविधाएं बनी तो उस पावागढ़ मंदिर के पुनर्निमाण के बाद, नव निर्माण के बाद करीब-करीब 80 हजार लोग वहां औसतन आते हैं। यानि सुविधाएं बढ़ीं तो इसका सीधा प्रभाव, यात्रियों की संख्या पर पड़ा, टूरिज्म को बढ़ाने के लिए उसके surrounding जो चीजें होती हैं वो भी बढ़ने लग गई हैं। और ज्यादा संख्या में लोगों के आने का अर्थ है, स्थानीय स्तर पर कमाई के ज्यादा अवसर, रोजगार-स्वरोजगार के ज्यादा मौके। अब देखिए दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा- स्टैच्यू ऑफ यूनिटी का भी उदाहरण। ये प्रतिमा बनने के बाद एक साल के भीतर ही 27 लाख लोग उसे देखने के लिए पहुंचे। ये दिखाता है कि भारत के विभिन्न स्थलों में अगर Civic Amenities बढ़ाई जाएं, वहां डिजिटल कनेक्टिविटी अच्छी हो, होटल-हॉस्पिटल अच्छे हों, गंदगी का नामो-निशान ना हो, बेहतरीन इंफ्रास्ट्रक्चर हो, तो भारत के टूरिज्म सेक्टर में कई गुना वृद्धि हो सकती है।

अहमदाबाद शहर में एक कांकरिया तालाब है। अब ये कांकरिया lake प्रोजेक्ट शुरू होने से पहले वहां आमतौर पर लोग जाते नहीं थे, ऐसे हीं वहां से गुजरना पड़े तो गुजरे, नहीं तो वहां कोई जाता ही नहीं था। हमने वहां ना सिर्फ lake का re-development किया बल्कि फूड स्टॉल्स में काम करने वालों का Skill Development भी किया। आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर के साथ ही हमने वहां स्वच्छता पर भी बहुत जोर दिया। आप कल्पना कर सकते हैं कि आज वहां Entry Fees होने के बावजूद भी औसतन प्रतिदिन 10 हजार लोग जाते हैं। ऐसे ही तरीकों से हर टूरिस्ट डेस्टिनेशन, अपना एक Revenue Model भी विकसित कर सकता है।

ये वो समय है जब हमारे गांव भी टूरिज्म का केंद्र बन रहे हैं। बेहतर होते इंफ्रास्ट्रक्चर के कारण हमारे दूर-सुदूर के गांव, अब टूरिज्म के मैप पर आ रहे हैं। केंद्र सरकार ने बॉर्डर किनारे पर बसे जो गांव हैं वहां वाइब्रेंट बार्डर विलेज योजना शुरू की है। ऐसे में होम स्टे, छोटे होटल, छोटे रेस्टोरेंट हो ऐसे अनेक बिजनेस के लिए लोगों को ज्यादा से ज्यादा सपोर्ट करने का काम हम

सबको मिलकर के करना है। आज जिस तरह दुनिया में भारत के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है, भारत आने वाले विदेशी टूरिस्टों की संख्या भी बढ़ रही है। पिछले साल जनवरी में सिर्फ 2 लाख विदेशी टूरिस्ट ही आए थे। जबकि इस साल जनवरी में 8 लाख से ज्यादा विदेशी टूरिस्ट भारत आए। विदेश से जो टूरिस्ट भारत आ रहे हैं, हमें उन्हें भी Profile करके अपना टारगेट ग्रुप तय करना होगा। विदेश में रहने वाले वो लोग जिनमें ज्यादा से ज्यादा खर्च करने की क्षमता होती है, हमें उन्हें ज्यादा से ज्यादा संख्या में भारत लाने के लिए विशेष रणनीति बनाने की आवश्यकता है। ऐसे टूरिस्ट भले ही कम दिन भारत में रहेंगे लेकिन ज्यादा राशि खर्च करके जाएंगे। आज जो विदेशी टूरिस्ट भारत आते हैं वो औसतन 1700 डॉलर खर्च करते हैं। जबकि अमेरिका में international traveler औसतन 2500 डॉलर और ऑस्ट्रेलिया में करीब 5 हजार डॉलर खर्च करते हैं। भारत में भी high spend tourists को ऑफर करने के लिए बहुत कुछ है। हर राज्य को इस सोच के साथ भी अपनी टूरिज्म पॉलिसी में बदलाव करने की जरूरत है।

सामान्य तौर पर कहा जाता है कि सबसे ज्यादा किसी स्थान पर रूकने वाला जो टूरिस्ट होता है- वो Bird Watcher है। ये लोग महीनों-महीनों किसी देश में डेरा डाले रहते हैं। भारत में इतने भांति-भांति प्रकार के पक्षी हैं। हमें ऐसे Potential Tourists को भी Target करके अपनी नीतियां बनानी होंगी।

इन सब प्रयासों के बीच, टूरिज्म सेक्टर की एक बेसिक चुनौती पर भी काम करना है। ये है हमारे यहां प्रोफेशनल टूरिस्ट गाइड्स की कमी। गाइड्स के लिए स्थानीय कॉलेजों में सर्टिफिकेट कोर्स हो, कांपटीशन हो, बहुत अच्छे नौजवान इस प्रोफेशन में आगे आने के लिए मेहनत करें और हमें शानदार अनेक भाषा बोलने वाले अच्छे टूरिस्ट गाइड मिलेंगे। उसी प्रकार से डिजिटल टूरिस्ट गाइड भी तो अवेलेबल है, टेक्नोलॉजी का उपयोग करके भी कर सकते हैं। किसी एक विशेष टूरिस्ट डेस्टिशन में जो गाइड्स काम कर रहे हैं, उनकी एक Specific Dress या वर्दी भी होनी चाहिए। इससे लोगों को पहली नजर में ही पता चल जाएगा कि सामने वाला जो व्यक्ति है वो टूरिस्ट गाइड है और वो हमारी इस काम में मदद करेगा। हमें ये याद रखना होगा कि जब कोई भी टूरिस्ट किसी स्थान पर पहुंचता है तो उसके मन में सवालों का भंडार भरा होता है। वो अनेक सवालों के तत्काल समाधान चाहता है। ऐसे में गाइड उन सभी सवालों के जवाब खोजने में उनकी मदद कर सकता हैं।

टूरिज्म के लिए मान लीजिए हर राज्य एक या दो बहुत ही अच्छे टूरिस्ट डेस्टिनेशन पर जोर लगाता है, एक शुरूआत कैसे कर सकते हैं। हम तय करें कि स्कूल से बच्चे जो टूरिस्ट के रूप में निकलते हैं, हर स्कूल यात्रा के लिए निकलते ही हैं 2 दिन, 3 दिन के कार्यक्रम बनाते हैं। तो आप तय कर सकते हैं के भई फलाने डेस्टिनेशन में शुरू में हर दिन 100 स्टूडेंट्स आएंगे, फिर per day 200 आएंगे, फिर per day 300 आएंगे, फिर per day 1000 आएंगे। अलग-अलग स्कूल के आए वो खर्चा करते ही हैं। यहां जो लोग हैं, उनको लगेगा कि इतनी बड़ी संख्या में लोग आ रहे हैं चलो ये व्यवस्था खड़ी करो, ये दुकान खड़ी करो, पानी की व्यवस्था करो, अपने आप शुरू हो जाएगा। अगर मान लीजिए हमारे सभी राज्य तय करें कि नार्थ-ईस्ट के अष्ट लक्ष्मी हमारे 8 राज्य हैं। हम हर वर्ष 8 यूनिवर्सिटी हर राज्य में तय करें और हर यूनिवर्सिटी नार्थ-ईस्ट के एक राज्य में 5 दिन, 7 दिन टूर करेगी, दूसरी यूनिवर्सिटी दूसरे राज्य में टूर करेगी, तीसरी यूनिवर्सिटी तीसरे राज्य में टूर करेगी। आपके राज्य में 8 यूनिवर्सिटी ऐसी होगी जहां के हमारे युवकों को नार्थ-ईस्ट के 8 राज्यों का पूरा अता-पता होगा।

उसी प्रकार से आजकल वेडिंग डेस्टिनेशन एक बहुत बड़ा बिजनेस हुआ है, बहुत बड़ा टूरिस्ट डेस्टिनेशन बना है। विदेशों में लोग जाते हैं, क्या हमारे राज्यों में वेडिंग डेस्टिनेशन के रूप में स्पेशल पैकेज घोषित कर सकते हैं, हमारे देश में एक वातावरण बनाना चाहिए कि गुजरात के लोगों को लगना चाहिए कि भई 2024 में अगर हमारे यहां से शादियों के लिए वेडिंग डेस्टिनेशन होगा तो तमिलनाडु में होगा और तमिल पद्धति से हम शादी करवाएंगे। घर में 2 बच्चें हैं तो कोई सोचेगा कि एक हम असमिया पद्धति से शादी करवाना चाहते हैं, दूसरे कि हम पंजाबी पद्धति से शादी करवाना चाहते हैं। वेडिंग डेस्टिनेशन वहां बना देंगे। वेडिंग डेस्टिनेशन इतने बड़े कारोबार की संभावना है। हमारे देश के टॉप क्लास के लोग विदेश जाते होंगे, लेकिन मिडिल क्लास अपर मिडिल क्लास के लोग आजकल वेडिंग डेस्टिनेशन पर जाते हैं और उसमें भी जब नयापन होता है तो उनकी जिंदगी में यादगार हो जाता है। हम इस दिशा का अभी तक उपयोग नहीं कर रहे, कुछ गिने-चुने स्थान अपने तरीके से करते हैं। उसी प्रकार से कॉन्फ्रेंसेस आज दुनिया के लोग कॉन्फ्रेंस के लिए आते हैं। हम ऐसा इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करें public private partnership से करें, लोगों को कहे जमीन की कुछ ऐसी व्यवस्थाएं करें तो कॉन्फ्रेंसेस के लिए लोग आएंगे, आएंगे तो वो होटल में भी रूकेंगे hospitality industry भी बढ़ेगी। यानि एक पूरा eco-system develop हो जाएगा। उसी प्रकार से sports tourism बहुत बड़ा क्षेत्र है, हम invite करें। कतर में फुटबाल मैच हुआ पूरी दुनिया का कतर की economy में बहुत बड़ा प्रभाव हुआ उसका, दुनिया भर के लोग आए लाखों लोग आए। हम छोटे से शुरू करें, बहुत बड़ा हो सकता है। हमें इन तरीकों को ढूंढना होगा, उसके लिए फिर इंफ्रास्ट्रक्चर, शुरू में लोग आए न आए, हम अपने स्कूल के बच्चों, कॉलेज के बच्चों हमारे सरकार की मीटिंगों के लिए वहां जाना। अगर हम अपने एक डेस्टिनेशन को महत्व देना शुरू करेंगे तो अपने आप और लोग भी आना शुरू करेंगे और फिर वहां की व्यवस्थाएं बनेंगी।

भारत में कम से कम 50 टूरिस्ट डेस्टिनेशन ऐसे हमें डेवलप करने चाहिए कि दुनिया के हर कोने में पता हो कि अगर भारत जाते हैं तो इस जगह पर तो जाना ही चाहिए। हर राज्य को गर्व होना चाहिए कि दुनिया के इतने देश के लोग मेरे यहां आते हैं। दुनिया के इतने देशों को हम टारगेट करेंगे। हम वहां की एम्बेसी को लिटरेचर भेजेंगे, वहां की एम्बेसी को हम कहेंगे कि देखिए आप टूरिस्टों के लिए मदद चाहते हैं तो हम ये-ये मदद करते हैं।

हमें पूरी व्यवस्था हमारे जो टूर ऑपरेटर्स हैं उनको नए सिरे से सोचना होगा, हमारी एप्स, हमारी डिजिटल कनेक्टिविटी इन सबको बहुत आधुनिक बनाना होगा और कोई टूरिस्ट डेस्टिनेशन ऐसा नहीं होना चाहिए जिसकी एप्स यूएन की सभी languages में न हो और भारत की सभी languages में न हो। अगर हम सिर्फ अंग्रेजी और हिंदी में हमारी वेबसाइट बना देंगे तो संभव नहीं होगा। इतना ही नहीं हमारे टूरिस्ट डेस्टिनेशन पर साइनेजिज सभी भाषाओं के होने चाहिए। अगर तमिल का कोई सामान्य परिवार आया है, बस लेकर के चला है और वहां पर उसको तमिल में अगर साइनेजिज मिल जाते हैं तो वह बड़ी आसानी से पहुँच जाता है। हम एक बार अगर इसके महात्मय को समझेंगे तो हम अवश्य रूप से टूरिज्म को वैज्ञानिक तरीके से आगे बढ़ा सकते हैं।

रोजगार के बहुत सारे अवसर जैसे agriculture में है, जैसे real estate development और infrastructure में है, textile में है उतनी ही ताकत टूरिज्म के अंदर रोजगार की है, बहुत अवसर है। ▪

परमार्थ से संकोच नहीं

चर्चा को शुरू करते हुए मन-मस्तिष्क में कितने ही भाव उमड़ रहे हैं। हमारा और आपका 'मन की बात' का ये साथ, अपने निन्यानवें (99वें) पायदान पर आ पहुँचा है। आम तौर पर हम सुनते हैं कि निन्यानवें (99वें) का फेर बहुत कठिन होता है। क्रिकेट में तो 'Nervous Nineties' को बहुत मुश्किल पड़ाव माना जाता है। लेकिन, जहाँ भारत के जन-जन के 'मन की बात' हो, वहाँ की प्रेरणा ही कुछ और होती है। मुझे इस बात की भी खुशी है कि 'मन की बात' के सौवें (100वें) episode को लेकर देश के लोगों में बहुत उत्साह है। जब हम आजादी का अमृतकाल मना रहे हैं, नए संकल्पों के साथ आगे बढ़ रहे हैं, तो सौवें (100वें) 'मन की बात' को लेकर, आपके सुझावों, और विचारों को जानने के लिए मैं भी बहुत उत्सुक हूँ। आपके सुझावों का बेसब्री से इंतजार है। वैसे तो इंतजार हमेशा होता है लेकिन इस बार जरा इंतजार ज्यादा है। आपके ये सुझाव और विचार ही 30 अप्रैल को होने वाले सौवें (100वें) 'मन की बात' को और यादगार बनाएँगे।

'मन की बात' में हमने ऐसे हजारों लोगों की चर्चा की है, जो दूसरों की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित कर देते हैं। कई लोग ऐसे होते हैं जो बेटियों की शिक्षा के लिए अपनी पूरी पेंशन लगा देते हैं, कोई अपने पूरे जीवन की कमाई पर्यावरण और जीव-सेवा के लिए समर्पित कर देता है। हमारे देश में परमार्थ को इतना ऊपर रखा गया है कि दूसरों के सुख के लिए, लोग, अपना सर्वस्व दान देने में भी संकोच नहीं करते। इसलिए तो हमें बचपन से शिवि और दधीचि जैसे देह-दानियों की गाथाएँ सुनाई जाती हैं।

आधुनिक Medical Science के इस दौर में Organ Donation, किसी को जीवन देने का एक बहुत बड़ा माध्यम बन चुका है। कहते हैं, जब एक व्यक्ति मृत्यु के बाद अपना शरीर दान करता है तो उससे 8 से 9 लोगों को एक नया जीवन मिलने की संभावना बनती है। संतोष की बात है कि आज देश में Organ Donation के प्रति जागरूकता भी बढ़ रही है। साल 2013 में, हमारे देश में, Organ Donation के 5 हजार से भी कम cases थे, लेकिन 2022 में, ये संख्या बढ़कर, 15 हजार से ज्यादा हो गई है। Organ Donation करने वाले व्यक्तियों ने, उनके परिवार ने, वाकई, बहुत पुण्य का काम किया है।

मेरा बहुत समय से मन था कि मैं ऐसा पुण्य कार्य करने वाले लोगों के 'मन की बात' जानूं और इसे देशवासियों के साथ भी share करूं। इसलिए आज 'मन की बात' में हमारे साथ एक प्यारी सी बिटिया, एक सुंदर गुड़िया के पिता और उनकी माता जी हमारे साथ जुड़ने जा रहे हैं। पिता जी का नाम है सुखबीर सिंह संधू जी और माता जी का नाम है सुप्रीत कौर जी, ये परिवार पंजाब के अमृतसर में रहते हैं। बहुत मन्नतों के बाद उन्हें, एक बहुत सुंदर गुड़िया, बिटिया हुई थी। घर के लोगों ने बहुत प्यार से उसका नाम रखा था - अबाबत कौर। अबाबत का अर्थ, दूसरे की सेवा से जुड़ा है, दूसरों का कष्ट दूर करने से जुड़ा है। अबाबत जब सिर्फ उनतालीस (39) दिन की थी, तभी वो यह दुनिया छोड़कर चली गई। लेकिन सुखबीर सिंह संधू जी और उनकी पत्नी सुप्रीत कौर जी ने, उनके परिवार ने, बहुत ही प्रेरणादायी फैसला लिया। ये फैसला था - उनतालीस (39) दिन की उम्र वाली बेटी के अंगदान का, Organ Donation का। हमारे साथ इस समय phone line पर सुखबीर सिंह और उनकी श्रीमती जी मौजूद हैं। आइये, उनसे बात करते हैं।

प्रधानमंत्री जी – सुखबीर जी नमस्ते।

सुखबीर जी – नमस्ते माननीय प्रधानमंत्री जी। सत श्री अकाल

प्रधान मंत्री जी – सत श्री अकाल जी, सत श्री अकाल जी, सुखबीर जी मैं आज 'मन की बात' के सम्बन्ध में सोच रहा था तो मुझे लगा कि अबाबत की बात इतनी प्रेरक है वो आप ही के मुँह से सुनुं क्योंकि घर में बेटी का जन्म जब होता है तो अनेक सपने अनेक खुशियाँ लेकर आता है, लेकिन बेटी इतनी जल्दी चली जाए वो कष्ट कितना भयंकर होगा उसका भी मैं अंदाज लगा सकता हूँ। जिस प्रकार से आपने फैसला लिया, तो मैं सारी बात जानना चाहता हूँ जी।

सुखबीर जी – सर भगवान ने बहुत अच्छा बच्चा दिया था हमें, बहुत प्यारी गुड़िया हमारे घर में आई थी। उसके पैदा होते ही हमें पता चला कि उसके दिमाग में एक ऐसा नाड़ियों का गुच्छा बना हुआ है जिसकी वजह से उसके दिल का आकार बड़ा हो रहा है। तो हम हैरान हो गए कि बच्चे की सेहत इतनी अच्छी है, इतना खुबसूरत बच्चा है और इतनी बड़ी समस्या लेकर पैदा हुआ है तो पहले 24 दिन तक तो बहुत ठीक रहा बच्चा बिल्कुल normal रहा। अचानक उसका दिल एकदम काम करना बंद हो गया, तो हम जल्दी से उसको हॉस्पिटल ले के गए, वहाँ, डॉक्टरों ने उसको revive तो कर दिया लेकिन समझने में टाईम लगा कि इसको क्या दिक्कत आई इतनी बड़ी दिक्कत की छोटा सा बच्चा और अचानक दिल का दौरा पड़ गया तो हम उसको इलाज के लिए PGI चंडीगढ़ ले गए। वहां बड़ी बहादुरी से उस बच्चे ने इलाज के लिए संघर्ष किया। लेकिन बीमारी ऐसी थी कि उसका इलाज इतनी छोटी उम्र में संभव नहीं था। डॉक्टरों ने बहुत कोशिश की कि उसको revive करवाया जाए अगर छः महीने के आस-पास बच्चा चला जाए तो उसका operation करने की सोची जा सकती थी। लेकिन भगवान को कुछ और मंजूर था, उन्होंने, केवल 39 days की जब हुई तब डॉक्टर ने कहा कि इसको दोबारा दिल का दौरा पड़ा है अब उम्मीद बहुत कम रह गई है। तो हम दोनों मियाँ-बीवी रोते हुए इस निर्णय पे पहुंचे कि हमने देखा था उसको बहादुरी से जूझते हुए बार बार ऐसे लग रहा था जैसे अब चली जाएगी लेकिन फिर revive कर रही थी तो हमें लगा कि इस बच्चे का यहाँ आने का कोई मकसद है तो उन्होंने जब बिल्कुल ही जवाब दे दिया तो हम दोनों ने decide किया कि क्यों न हम इस बच्चे

के organ donate कर दे। शायद किसी और की जिंदगी में उजाला आ जाए, फिर हमने PGI के जो administrative block है उनमे संपर्क किया और उन्होंने हमें guide किया कि इतने छोटे बच्चे की केवल kidney ही ली जा सकती है। परमात्मा ने हिम्मत दी गुरु नानक साहब का फलसफा है इसी सोच से हमने decision ले लिया।

प्रधान मंत्री जी- गुरुओं ने जो शिक्षा दी है जी उसे आपने जीकर के दिखाया है जी। सुप्रीत जी है क्या? उनसे बात हो सकती है?

सुखबीर जी- जी सर।

सुप्रीत जी- हेलो।

प्रधानमंत्री जी- सुप्रीत जी मैं आपको प्रणाम करता हूँ

सुप्रीत जी- नमस्कार सर नमस्कार, सर ये हमारे लिए बड़ी गर्व की बात है कि आप हमसे बात कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री जी- आपने इतना बड़ा काम किया है और मैं मानता हूँ देश ये सारी बातें जब सुनेगा तो बहुत लोग किसी की जिंदगी बचाने के लिए आगे आयेंगे। अबाबत का ये योगदान है, ये बहुत बड़ा है जी।

सुप्रीत जी- सर ये भी गुरु नानक बादशाह जी शायद बक्शीश थी कि उन्होंने हिम्मत दी ऐसा decision लेने में।

प्रधानमंत्री जी- गुरुओं की कृपा के बिना तो कुछ हो ही नहीं सकता जी।

सुप्रीत जी- बिलकुल सर, बिलकुल।

प्रधानमंत्री जी- सुखबीर जी जब आप अस्पताल में होंगे और ये हिला देने वाला समाचार जब डॉक्टर ने आपको दिया, उसके बाद भी आपने स्वस्थ मन से आपने और आपकी श्रीमती जी ने इतना बड़ा निर्णय किया, गुरुओं की सीख तो है ही है कि आपके मन में इतना बड़ा उदार विचार और सचमुच में अबाबत का जो अर्थ सामान्य भाषा में कहें तो मददगार होता है। ये काम कर दिया ये उस पल को मैं सुनना चाहता हूँ।

सुखबीर जी- सर actually हमारे एक family friend हैं प्रिया जी उन्होंने अपने organ donate किये थे उनसे भी हमें प्रेरणा मिली तो उस समय तो हमें लगा कि शरीर जो है पचं तत्वों में विलीन हो जाएगा। जब कोई बिछड़ जाता है चला जाता है तो उसके शरीर को जला दिया जाता है या दबा दिया जाता है, लेकिन, अगर उसके organ किसी के काम आ जाएँ, तो ये भले का ही काम है, और उस समय हमें, और गर्व महसूस हुआ, जब doctors ने, ये बताया हमें, कि आपकी बेटी, India की youngest donar बनी है जिसके organ successfully transplant हुए, तो हमारा सर गर्व से ऊँचा हो गया, कि जो नाम हम अपने parents का, इस उम्र तक नहीं कर पाए, एक छोटा सा बच्चा आ के इतने दिनों में हमारा नाम ऊँचा कर गया और इससे और बड़ी बात है कि आज आपसे बात हो रही है इस विषय पे। हम proud feel कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री जी - सुखबीर जी, आज आपकी बेटी का सिर्फ एक अंग जीवित है, ऐसा नहीं है। आपकी बेटी मानवता की अमर-गाथा की अमर यात्री बन गई है। अपने शरीर के अंश के जरिए वो आज भी उपस्थित है। इस नेक कार्य के लिए, मैं, आपकी, आपकी श्रीमती जी की, आपके परिवार की, सराहना करता हूं।

सुखबीर जी- Thank You sir.

Organ donation के लिए सबसे बड़ा जज्बा यही होता है कि जाते-जाते भी किसी का भला हो जाए, किसी का जीवन बच जाए। जो लोग, organ donation का इंतजार करते हैं, वो जानते हैं, कि, इंतजार का एक-एक पल गुजरना, कितना मुश्किल होता है। और ऐसे में जब कोई अंगदान या देहदान करने वाला मिल जाता है, तो उसमें, ईश्वर का स्वरूप ही नजर आता है। झारखंड की रहने वाली स्नेहलता चौधरी जी भी ऐसी ही थी जिन्होंने ईश्वर बनकर दूसरों को जिंदगी दी। 63 वर्ष की स्नेहलता चौधरी जी, अपना heart, kidney और liver, दान करके गईं। आज 'मन की बात' में, उनके बेटे भाई अभिजीत चौधरी जी हमारे साथ हैं। आइये उनसे सुनते हैं।

प्रधानमंत्री जी- अभिजीत जी नमस्कार।

अभिजीत जी- प्रणाम सर।

प्रधानमंत्री जी- अभिजीत जी आप एक ऐसी माँ के बेटे हैं जिसने आपको जन्म देकर एक प्रकार से जीवन तो दिया ही, लेकिन और जो अपनी मृत्यु के बाद भी आपकी माता जी कई लोगों को जीवन देकर गईं। एक पुत्र के नाते अभिजीत आप जरूर गर्व अनुभव करते होंगे

अभिजीत जी - हाँ जी सर।

प्रधानमंत्री जी- आप, अपनी माता जी के बारे में जरा बताइये, किन परिस्थितियों में organ donation का फैसला लिया गया?

अभिजीत जी- मेरी माता जी सराइकेला बोलकर एक छोटा सा गाँव है झारखंड में, वहां पर मेरे मम्मी पापा दोनों रहते हैं। ये पिछले पच्चीस साल से लगातार morning walk करते थे और अपने habit के अनुसार सुबह 4 बजे अपने morning walk के लिए निकली थी। उस समय एक motorcycle वाले ने इनको पीछे से धक्का मारा और वो उसी समय गिर गई जिससे उनको सर पे बहुत ज्यादा चोट लगा। तुरंत हम लोग उनको सदर अस्पताल सराइकेला ले गए जहाँ डॉक्टर साहब ने उनकी मरहम पट्टी की पर खून बहुत निकल रहा था। और उनको कोई sense नहीं था। तुरंत हम लोग उनको Tata main hospital लेकर चले गए। वहां उनकी सर्जरी हुई, 48 घंटे के observation के बाद डॉक्टर साहब ने बोला कि वहां से chances बहुत कम हैं। फिर हमने उनको Airlift कर के AIIMS Delhi लेकर आये हम लोग। यहाँ पर उनकी treatment हुई तकरीबन 7-8 दिन। उसके बाद position ठीक था एकदम उनका blood pressure काफी गिर गया उसके बाद पता चला उनकी brain death हो गई है। तब फिर डॉक्टर साहब हमें प्रोटोकॉल के साथ brief कर रहे थे organ donation के बारे में। हम अपने पिताजी, को शायद ये नहीं बता पाते कि, organ donation type का भी कोई चीज होता है, क्योंकि हमें लगा, वो उस बात को absorb नहीं कर पायेंगे, तो, उनके दिमाग से हम ये निकालना चाहते थे कि ऐसा कुछ चल रहा है। जैसे ही हमने उनको बोला की organ donation की बातें चल रही हैं। तब उन्होंने ये बोला की नहीं- नहीं ये मम्मी का बहुत मन था और हमें ये करना है। हम काफी निराश थे उस समय तक जब तक हमें ये पता चला था कि मम्मी नहीं बच सकेंगें, पर जैसे ही ये organ donation वाला discussion चालू हुआ वो निराशा एक बहुत ही positive side चला गया और हम काफी अच्छे एक बहुत ही positive environment में आ गए। उसको करते-करते फिर हम लोग रात में 8 बजे counseling हुई। दूसरे दिन हम लोगों ने organ donation किया । इसमें मम्मी का एक सोच बहुत बड़ा था कि पहले वो काफी नेत्रदान और इन चीजों में social activities में ये बहुत active थी। शायद यही सोच को लेकर के ये इतना बड़ा चीज हम लोग कर पाए, और मेरे पिताजी का जो decision making था इस चीज के बारे में, इस कारण से ये चीज हो पाया।

प्रधानमंत्री जी- कितने लोगों को काम आया अंग?

अभिजीत जी- इनका heart, दो kidney, liver और दोनों आँख ये donation हुआ था तो

चार लोगों की जान और दो जनों को आँख मिला है।

प्रधानमंत्री जी– अभिजीत जी, आपके पिता जी और माताजी दोनों नमन के अधिकारी हैं। मैं उनको प्रणाम करता हूँ और आपके पिताजी ने इतने बड़े निर्णय में, आप परिवार जनों का नेतृत्व किया, ये वाकई बहुत ही प्रेरक है और मैं मानता हूँ कि माँ तो माँ ही होती है। माँ एक अपने आप में प्रेरणा भी होती है। लेकिन माँ जो परम्पराएँ छोड़ कर के जाती हैं, वो पीढ़ी-दर-पीढ़ी, एक बहुत बड़ी ताकत बन जाती हैं। अंगदान के लिए आपकी माता जी की प्रेरणा आज पूरे देश तक पहुँच रही है। मैं आपके इस पवित्र कार्य और महान कार्य के लिए आपके पूरे परिवार को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। अभिजीत जी धन्यवाद जी, और आपके पिताजी को हमारा प्रणाम जरूर कह देना।

अभिजीत जी– जरूर-जरूर, thank you.

39 दिन की अबाबत कौर हो या 63 वर्ष की स्नेहलता चौधरी, इनके जैसे दानवीर, हमें, जीवन का महत्व समझाकर जाते हैं। हमारे देश में, आज, बड़ी संख्या में ऐसे जरूरतमंद हैं, जो स्वस्थ जीवन की आशा में किसी organ donate करने वाले का इंतजार कर रहे हैं। मुझे संतोष है कि अंगदान को आसान बनाने और प्रोत्साहित करने के लिए पूरे देश में एक जैसी policy पर भी काम हो रहा है। इस दिशा में राज्यों के domicile की शर्त को हटाने का निर्णय भी लिया गया है, यानी, अब देश के किसी भी राज्य में जाकर मरीज organ प्राप्त करने के लिए register करवा पाएगा। सरकार ने organ donation के लिए 65 वर्ष से कम आयु की आयु-सीमा को भी खत्म करने का फैसला लिया है। इन प्रयासों के बीच, मेरा देशवासियों से आग्रह है, कि organ donor, ज्यादा से ज्यादा संख्या में आगे आएं। आपका एक फैसला, कई लोगों की जिंदगी बचा सकता है, जिंदगी बना सकता है।

ये नवरात्र का समय है, शक्ति की उपासना का समय है। आज, भारत का जो सामर्थ्य नए सिरे से निखरकर सामने आ रहा है, उसमें बहुत बड़ी भूमिका हमारी नारी शक्ति की है। हाल-फिलहाल ऐसे कितने ही उदाहरण हमारे सामने आये हैं। आपने सोशल मीडिया पर, एशिया की पहली महिला लोको पायलट सुरेखा यादव जी को जरुर देखा होगा। सुरेखा जी, एक और कीर्तिमान बनाते हुये वंदे भारत एक्सप्रेस की भी पहली महिला लोको पायलट बन गई हैं। इसी महीने, producer गुनीत मोंगा और Director कार्तिकी गोंजाल्विस उनकी Documentary 'Elephant Whisperers' ने Oscar जीतकर देश का नाम रौशन किया है। देश के लिए एक और उपलब्धि Bhabha Atomic Reseach Centre की Scientist, बहन ज्योतिर्मयी मोहंती जी ने भी हासिल की है। ज्योतिर्मयी जी को Chemistry और Chemical Engineering की field में IUPAC का विशेष award मिला है। इस वर्ष की शुरुआत में ही भारत की Under-19 महिला क्रिकेट टीम ने T-20 World cup जीतकर नया इतिहास रचा। अगर आप राजनीति की ओर देखेंगे, तो एक नई शुरुआत नागालैंड में हुई है। नागालैंड में 75 वर्षों में पहली बार दो महिला विधायक जीतकर विधानसभा पहुंची है। इनमें से एक को नागालैंड सरकार में मंत्री भी बनाया गया है, यानि, राज्य के लोगों को पहली बार एक महिला मंत्री भी मिली हैं।

कुछ दिनों पहले मेरी मुलाकात, उन जांबांज बेटियों से भी हुई, जो, तुर्किए में विनाशकारी भूकंप के बाद वहां के लोगों की मदद के लिए गयी थीं। ये सभी NDRF के दस्ते में शामिल थी। उनके साहस और कुशलता की पूरी दुनिया में तारीफ हो रही है। भारत ने UN Mission के तहत शांतिसेना में Women-only Platoon की भी तैनाती की है।

आज, देश की बेटियाँ, हमारी तीनों सेनाओं में, अपने शौर्य का झंडा बुलंद कर रही हैं। Group Captain शालिजा धामी Combat Unit में Command Appointment पाने वाली पहली महिला वायुसेना अधिकारी बनी हैं। उनके पास करीब 3 हजार घंटे का flying experience है। इसी तरह, भारतीय सेना की जांबाज captain शिवा चौहान सियाचिन में तैनात होने वाली पहली महिला अधिकारी बनी हैं। सियाचिन में जहाँ पारा माइनस सिक्सटी (-60) डिग्री तक चला जाता है, वहां शिवा तीन महीनों के लिए तैनात रहेंगी।

यह list इतनी लम्बी है कि यहाँ सबकी चर्चा करना भी मुश्किल है। ऐसी सभी महिलाएं, हमारी बेटियां, आज, भारत और भारत के सपनों को ऊर्जा दे रही हैं। नारी शक्ति की ये ऊर्जा ही विकसित भारत की प्राणवायु है।

इन दिनों पूरे विश्व में स्वच्छ ऊर्जा, renewable energy की खूब बात हो रही है। मैं, जब विश्व के लोगों से मिलता हूँ, तो वो इस क्षेत्र में भारत की अभूतपूर्व सफलता की जरुर चर्चा करते हैं। खासकर, भारत, Solar energy के क्षेत्र में जिस तेजी से आगे बढ़ रहा है, वो अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। भारत के लोग तो सदियों से सूर्य से विशेष रूप से नाता रखते हैं। हमारे यहाँ सूर्य की शक्ति को लेकर जो वैज्ञानिक समझ रही है, सूर्य की उपासना की जो परंपराएँ रही हैं, वो अन्य जगहों पर, कम ही देखने को मिलते हैं। आज हर देशवासी सौर ऊर्जा का महत्व भी समझ रहा है, और clean energy में अपना योगदान भी देना चाहता है। 'सबका प्रयास' की यही spirit आज

भारत के Solar Mission को आगे बढ़ा रही है। महाराष्ट्र के पुणे में, ऐसे ही एक बेहतरीन प्रयास ने, मेरा ध्यान अपनी ओर खींचा है। यहाँ MSR-Olive Housing Society के लोगों ने तय किया कि वे society में पीने के पानी, लिफ्ट और लाईट जैसे सामूहिक उपयोग की चीजें, अब, solar energy से ही चलाएंगे। इसके बाद इस society में सबने मिलकर Solar Panel लगवाए। आज इन Solar Panels से हर साल करीब 90 हजार किलोवाट Hour बिजली पैदा हो रही है। इससे हर महीने लगभग 40,000 रूपये की बचत हो रही है। इस बचत का लाभ Society के सभी लोगों को हो रहा है।

पुणे की तरह ही दमन-दीव में जो दीव है, जो एक अलग जिला है, वहाँ के लोगों ने भी, एक अदभुत काम करके दिखाया है। आप जानते ही होंगे कि दीव, सोमनाथ के पास है। दीव भारत का पहला ऐसा जिला बना है, जो, दिन के समय सभी जरूरतों के लिए शत-प्रतिशत Clean Energy का इस्तेमाल कर रहा है। दीव की इस सफलता का मंत्र भी सबका प्रयास ही है। कभी यहाँ बिजली

उत्पादन के लिए संसाधनों की चुनौती थी। लोगों ने इस चुनौती के समाधान के लिए Solar Energy को चुना। यहाँ बंजर जमीन और कई Buildings पर Solar Panels लगाए गए। इन Panels से, दीव में, दिन के समय, जितनी बिजली की जरुरत होती है, उससे ज्यादा बिजली पैदा हो रही है। इस Solar Project से, बिजली खरीद पर खर्च होने वाले करीब, 52 करोड़ रूपये भी बचे हैं। इससे पर्यावरण की भी बड़ी रक्षा हुई है।

पुणे और दीव उन्होंने जो कर दिखाया है, ऐसे प्रयास देशभर में कई और जगहों पर भी हो रहे हैं। इनसे पता चलता है कि पर्यावरण और प्रकृति को लेकर हम भारतीय कितने संवेदनशील हैं, और हमारा देश, किस तरह भविष्य की पीढ़ी के लिए बहुत जागृत है। मैं इस तरह के सभी प्रयासों की हृदय से सराहना करता हूँ।

हमारे देश में समय के साथ, स्थिती-परिस्थितियों के अनुसार, अनेक परम्पराएँ विकसित होती हैं। यही परम्पराएँ, हमारी संस्कृति का सामर्थ्य बढ़ाती हैं और उसे नित्य नूतन प्राण शक्ति भी देती हैं। कुछ महीने पहले ऐसी ही एक परंपरा शुरू हुई काशी में।

काशी-तमिल संगमम के दौरान, काशी और तमिल क्षेत्र के बीच सदियों से चले आ रहे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों को Celebrate किया गया। 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की भावना हमारे देश को मजबूती देती है। हम जब एक-दूसरे के बारे में जानते हैं, सीखते हैं, तो, एकता की ये भावना और प्रगाढ़ होती है। Unity की इसी Spirit के साथ अगले महीने गुजरात के विभिन्न हिस्सों में **'सौराष्ट्र -तमिल संगमम'** होने जा रहा है। **'सौराष्ट्र -तमिल संगमम'** 17 से 30 अप्रैल तक चलेगा। 'मन की बात' के कुछ श्रोता जरुर सोच रहे होंगे, कि, गुजरात के सौराष्ट्र का तमिलनाडु से क्या संबंध है? दरअसल, सदियों पहले सौराष्ट्र के अनेकों लोग तमिलनाडु के अलग-अलग हिस्सों में बस गए थे। ये लोग आज भी 'सौराष्ट्री तमिल' के नाम से जाने जाते हैं। उनके खान-पान, रहन-सहन, सामाजिक संस्कारों में आज भी कुछ-कुछ सौराष्ट्र की झलक मिल जाती है। मुझे इस आयोजन को लेकर तमिलनाडु से बहुत से लोगों ने सराहना भरे पत्र लिखे हैं।

मदुरै में रहने वाले जयचंद्रन जी ने एक बड़ी ही भावुक बात लिखी है। उन्होंने कहा है कि - **''हजार साल के बाद, पहली बार किसी ने सौराष्ट्र-तमिल के इन रिश्तों के बारे में सोचा है, सौराष्ट्र से तमिलनाडु आकर के बसे हुए लोगों को पूछा है।''** जयचंद्रन जी की बातें, हजारों तमिल भाई-बहनों की अभिव्यक्ति हैं।

'मन की बात' के श्रोताओं को, मैं, असम से जुड़ी हुई एक खबर के बारे में बताना चाहता हूँ। ये भी 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की भावना को मजबूत करती है। आप सभी जानते हैं कि हम वीर लासित बोरफुकन जी की 400वीं जयंती मना रहे हैं। वीर लासित बोरफुकन ने अत्याचारी मुगल सल्तनत के हाथों से, गुवाहाटी को आजाद करवाया था। आज देश, इस महान योद्धा के अदम्य साहस से परिचित हो रहा है। कुछ दिन पहले लासित बोरफुकन के जीवन पर आधारित निबंध लेखन का एक अभियान चलाया गया था। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इसके लिए करीब 45 लाख लोगों ने निबंध भेजे। आपको, ये जानकर भी खुशी होगी कि अब यह एक Guinness Record बन चुका है। और सबसे बड़ी बात है और जो ज्यादा प्रसन्नता की बात ये है, कि, वीर लासित बोरफुकन पर ये जो निबंध लिखे गए है उसमें करीब-करीब 23 अलग-अलग भाषाओं में लिखा गया है और लोगों ने भेजा है। इनमें, असमिया भाषा के अलावा, हिंदी, अंग्रेजी, बांग्ला, बोडो, नेपाली, संस्कृत, संथाली जैसी भाषाओं में लोगों ने निबंध भेजे हैं। मैं इस प्रयास का हिस्सा बने सभी लोगों की हृदय से प्रशंसा करता हूँ।

जब कश्मीर या श्रीनगर की बात होती है, तो सबसे पहले, हमारे सामने, उसकी वादियाँ और डल झील की तस्वीर आती है। हम में से हर कोई डल झील के नजारों का लुत्फ उठाना चाहता है, लेकिन, डल झील में एक और बात खास है। डल झील, अपने स्वादिष्ट Lotus Stems - कमल के तनों या कमल ककड़ी, के लिये भी जानी जाती है। कमल के तनों को देश में अलग-अलग जगह, अलग-अलग नाम से, जानते हैं। कश्मीर में इन्हें नादरू कहते हैं। कश्मीर के नादरू की demand लगातार बढ़ रही है।

इस demand को देखते हुए डल झील में नादरू की खेती करने वाले किसानों ने एक FPO बनाया है। इस FPO में करीब 250 किसान शामिल हुए हैं। आज ये किसान अपने नादरू को विदेशों तक भेजने लगे हैं। अभी कुछ समय पहले ही इन किसानों ने दो खेप UAE भेजी हैं। ये सफलता कश्मीर का नाम तो कर ही रही है, साथ ही इससे, सैकड़ों किसानों की, आमदनी भी बढ़ी है।

कश्मीर के लोगों का कृषि से ही जुड़ा हुआ ऐसा ही एक और प्रयास इन दिनों अपनी कामयाबी की खुशबू फैला रहा है। आप सोच रहे होंगे कि मैं कामयाबी की खुशबू क्यों बोल रहा हूँ - बात है ही खुशबू की, सुगंध की ही तो बात है! दरअसल, जम्मू-कश्मीर के डोडा जिले में एक कस्बा है 'भदरवाह'! यहाँ के किसान, दशकों से मक्के की पारंपरिक खेती करते आ रहे थे, लेकिन, कुछ किसानों ने, कुछ अलग, करने की सोची। उन्होंने, floriculture, यानी फूलों की खेती का रुख किया। आज, यहाँ के करीब 25 सौ किसान (ढाई हजार किसान) लैवेंडर (lavender) की खेती कर रहे हैं। इन्हें केंद्र सरकार के aroma mission से मदद भी मिली है। इस नई खेती ने किसानों की आमदनी में बड़ा इजाफा किया है, और आज, लैवेंडर के साथ-साथ, इनकी सफलता की खुशबू भी, दूर-दूर तक फैल रही है।

जब कश्मीर की बात हो, कमल की बात हो, फूल की बात हो, सुगंध की बात हो, तो, कमल के फूल पर विराजमान रहने वाली माँ शारदा का स्मरण आना बहुत स्वाभाविक है। कुछ दिन पूर्व ही कुपवाड़ा में माँ शारदा के भव्य मंदिर का लोकार्पण हुआ है। ये मंदिर उसी मार्ग पर बना है, जहां से कभी शारदा पीठ के दर्शनों के लिये जाया करते थे। स्थानीय लोगों ने इस मंदिर के निर्माण में बहुत मदद की है। मैं, जम्मू-कश्मीर के लोगों को इस शुभ कार्य के लिये बहुत-बहुत बधाई देता हूं। ▪

सामाजिक नवोत्थान के पुरोधा महात्मा ज्योतिबा फुले

महात्मा ज्योतिबा फुले (ज्योतिराव गोविंदराव फुले) को 19वीं सदी का प्रमुख समाज सेवक माना जाता है। उन्होंने भारतीय समाज में फैली अनेक कुरूतियों को दूर करने के लिए सतत संघर्ष किया। अछूतोद्धार, नारी-शिक्षा, विधवा-विवाह और किसानों के हित के लिए ज्योतिबा ने उल्लेखनीय कार्य किया है। उनका जन्म 11 अप्रैल 1827 को सतारा महाराष्ट्र, में हुआ था। परिवार बेहद गरीब था और जीवनयापन के लिए बाग-बगीचों में माली का काम करता था। ज्योतिबा जब मात्र एक वर्ष के थे तभी उनकी माता का निधन हो गया था। ज्योतिबा का लालन-पालन सगुनाबाई नामक एक दाई ने किया। सगुनाबाई ने ही उन्हें माँ की ममता और दुलार दिया।

7 वर्ष की आयु में ज्योतिबा को गांव के स्कूल में पढ़ने भेजा गया। जातिगत भेद-भाव के कारण उन्हें विद्यालय छोड़ना पड़ा। स्कूल छोड़ने के बाद भी उनमे पढ़ने की ललक बनी रही। सगुनाबाई ने बालक ज्योतिबा को घर में ही पढ़ने में मदद की। घरेलू कार्यो के बाद जो समय बचता उसमे वह किताबें पढ़ते थे। ज्योतिबा पास-पड़ोस के बुजुर्गो से विभिन्न विषयों में चर्चा करते थे। लोग उनकी सूक्ष्म और तर्क संगत बातों से बहुत प्रभावित होते थे। अरबी-फारसी के विद्वान गफार बेग मुंशी एवं फादर लिजीट साहब ज्योतिबा के पड़ोसी थे। उन्होंने बालक ज्योतिबा की प्रतिभा एवं शिक्षा के प्रति रुचि देखकर उन्हें पुनः विद्यालय भेजने का प्रयास किया। ज्योतिबा फिर से स्कूल जाने लगे। वह स्कूल में सदा प्रथम आते रहे। धर्म पर टीकाटिप्पणी सुनने पर उनके अन्दर जिज्ञासा हुई कि हिन्दू धर्म में इतनी विषमता क्यों है? जाति भेद और वर्ण व्यवस्था क्या है? वह अपने मित्र सदाशिव बल्लाल गोंडवे के साथ समाज, धर्म और देश के बारे में चिंतन किया करते।

उन्हें इस प्रश्न का उत्तर नहीं सूझता कि इतना बड़ा देश गुलाम क्यों है? गुलामी से उन्हें नफरत होती थी। उन्होंने महसूस किया कि जातियों और पंथो पर बंटे इस देश का सुधार तभी संभव है जब लोगो की मानसिकता में सुधार होगा। उस समय समाज में वर्गभेद अपनी चरम सीमा पर था। स्त्री और दलित वर्ग की दशा अच्छी नहीं थी। उन्हें शिक्षा से वंचित रखा जाता था। ज्योतिबा को इस स्थिति पर बड़ा दुःख होता था। उन्होंने स्त्री एवं

7 वर्ष की आयु में ज्योतिबा को गांव के स्कूल में पढ़ने भेजा गया। जातिगत भेद-भाव के कारण उन्हें विद्यालय छोड़ना पड़ा। स्कूल छोड़ने के बाद भी उनमे पढ़ने की ललक बनी रही।

दलितों की शिक्षा के लिए सामाजिक संघर्ष का बीड़ा उठाया। उनका मानना था कि माताएँ जो संस्कार बच्चो पर डालती हैं, उसी में उन बच्चो के भविष्य के बीज होते है। इसलिए लड़कियों को शिक्षित करना आवश्यक है। उन्होंने निश्चय किया कि वह वंचित वर्ग की शिक्षा के लिए स्कूलों का प्रबंध करेंगे। उस समय जातपात, ऊँच-नीच की दीवारे बहुत ऊँची थी। दलितों एवं स्त्रियों की शिक्षा के रास्ते बंद थे। ज्योतिबा इस व्यवस्था को तोड़ने हेतु दलितों और लड़कियों को अपने घर में पढ़ाते थे। वह बच्चो को छिपाकर लाते और वापस पहुंचाते थे। जैसे-जैसे उनके समर्थक बढ़े उन्होंने खुलेआम स्कूल चलाना प्रारंभ कर दिया।

स्कूल प्रारंभ करने के बाद ज्योतिबा को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उनके विद्यालय में पढ़ाने को कोई तैयार न होता। कोई पढ़ाता भी तो सामाजिक दवाब में उसे जल्दी ही यह कार्य बंद करना पड़ता। इन स्कूलों में पढ़ायें कौन? यह एक गंभीर समस्या थी। ज्योतिबा ने इस समस्या के हल हेतु अपनी पत्नी सावित्री को पढ़ना सिखाया और फिर मिशनरीज के नार्मल स्कूल में प्रशिक्षण दिलाया। प्रशिक्षण के बाद वह भारत की प्रथम प्रशिक्षित महिला शिक्षिका बनीं। उनके इस कार्य से समाज के लोग कुपित हो उठे। जब सावित्री बाई स्कूल जाती तो लोग उनको तरह-तरह से अपमानित करते। परन्तु वह महिला अपमान का घूँट पीकर भी अपना कार्य करती रही। इस पर लोगो ने ज्योतिबा को समाज से बहिष्कृत करने की धमकी दी और उन्हें उनके पिता के घर से बाहर निकलवा दिया।

गृह त्याग के बाद पति-पत्नी को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। परन्तु वह अपने लक्ष्य से डिगे नहीं। अँधेरी काली रात थी। बिजली चमक रही थी। महात्मा ज्योतिबा को घर लौटने में देर हो गई थी। वह सरपट घर की ओर बढ़े जा रहे थे। बिजली चमकी उन्होंने देखा आगे रास्ते में दो व्यक्ति हाथ में चमचमाती तलवारें लिए जा रहे है। वह अपनी चाल तेज कर उनके समीप पहुंचे। महात्मा ज्योतिबा ने उनसे उनका परिचय व इतनी रात में चलने का कारण जानना चाहा। उन्होने बताया हम ज्योतिबा को मारने जा रहे है। महात्मा ज्योतिबा ने कहा उन्हें मार कर तुहे क्या मिलेगा? उन्होंने कहा पैसा मिलेगा, हमें पैसे की आवश्यकता है। महात्मा ज्योतिबा ने क्षण भर सोचा फिर कहा मुझे मारो, मैं ही ज्योतिबा हूँ, मुझे मारने से अगर तुहारा हित होता है, तो मुझे खुशी होगी। इतना सुनते ही उनकी तलवारें हाथ से छूट गई। वह ज्योतिबा के चरणों में गिर पड़े, और उनके शिष्य बन गए।

महात्मा ज्योतिबा फुले ने 'सत्य शोधक समाज' नामक संगठन की स्थापना की। सत्य शोधक समाज उस समय के अन्य संगठनो से अपने सिद्धांतो व कार्यक्रमो के कारण भिन्न था। सत्य शोधक समाज पूरे महाराष्ट्र में शीघ्र ही फैल गया। सत्य शोधक समाज के लोगो ने जगह-जगह दलितों और लड़कियों की शिक्षा के लिए स्कूल खोले। छूआछूत का विरोध किया। किसानों के हितों की रक्षा के लिए आन्दोलन चलाया। महात्मा ज्योतिबा व उनके संगठन के संघर्ष के कारण सरकार ने 'एग्रीकल्चर एक्ट' पास किया। धर्म, समाज और परंपराओं के सत्य को सामने लाने हेतु उन्होंने अनेक पुस्तकें भी लिखी। 28 नंवबर सन 1890 को उनका देहावसान हो गया। ▪

ब्रिटिश शासन के खात्मे की शुरूआत हुई जलियाँवाला बाग से

जलियाँवाला बाग अमृतसर के स्वर्ण मंदिर के पास का एक छोटा सा बगीचा है जहाँ 13 अप्रैल 1919 को ब्रिगेडियर जनरल रेजिनाल्ड एडवर्ड डायर के नेतृत्व में अंग्रेजी फौज ने गोलियां चला के निहत्थे, शांत बूढ़ों, महिलाओं और बच्चों सहित सैकड़ों लोगों को मार डाला था और हजारों लोगों को घायल कर दिया था। यदि किसी एक घटना ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर सबसे अधिक प्रभाव डाला था तो वह घटना यह जघन्य हत्याकाण्ड ही था। जलियाँवाला बाग अमृतसर के स्वर्ण मंदिर के पास ही स्थित है। बैसाखी के दिन 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जलियाँवाला बाग में रोलेट एक्ट, अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों व दो नेताओं सत्यपाल और सैफुद्दीन किचलू की गिरफ्तारी के विरोध में एक सभा रखी गई, जिसमें कुछ नेता भाषण देने वाले थे। शहर में कर्फ्यू लगा हुआ था, फिर भी इसमें सैंकड़ों लोग ऐसे भी थे, जो बैसाखी के मौके पर परिवार के साथ मेला देखने और शहर घूमने आए थे और सभा की खबर सुन कर वहां जा पहुंचे थे। करीब 5,000 लोग जलियाँवाला बाग में इकट्ठे थे। ब्रिटिश सरकार के कई अधिकारियों को यह 1857 के गदर की पुनरावृत्ति जैसी परिस्थिति लग रही थी जिसे न होने देने के लिए और कुचलने के लिए वो कुछ भी करने के लिए तैयार थे।

जब नेता बाग में पड़ी रोड़ियों के ढेर पर खड़े हो कर भाषण दे रहे थे, तभी ब्रिगेडियर जनरल रेजीनॉल्ड डायर 90 ब्रिटिश सैनिकों को लेकर वहां पहुँच गया। उन सब के हाथों में भरी हुई राइफलें थीं। सैनिकों ने बाग को घेर कर बिना कोई चेतावनी दिए निहत्थे लोगों पर गोलियाँ चलानी शुरु कर दीं। 10 मिनट में कुल 1650 राउंड गोलियां चलाई गईं। जलियाँवाला बाग उस समय मकानों के पीछे पड़ा एक खाली मैदान था। वहां तक जाने या बाहर निकलने के लिए केवल एक संकरा रास्ता था और चारों ओर मकान थे। भागने का कोई रास्ता नहीं था। कुछ लोग जान बचाने के लिए मैदान में मौजूद एकमात्र कुएं में कूद गए, पर देखते ही देखते वह कुआं भी लाशों से पट गया।

अमृतसर के डिप्टी कमिश्नर कार्यालय में 484 शहीदों की सूची है, जबकि जलियाँवाला बाग में कुल 388 शहीदों की सूची है। ब्रिटिश

राज के अभिलेख इस घटना में 200 लोगों के घायल होने और 379 लोगों के शहीद होने की बात स्वीकार करते है जबकि अनाधिकारिक आँकड़ों के अनुसार 1000 से अधिक लोग मारे गए और 2000 से अधिक घायल हुए। इस घटना के प्रतिघात स्वरूप सरदार उधमसिंह ने 13 मार्च 1940 को उन्होंने लंदन के कैक्सटन हॉल में इस घटना के समय ब्रिटिश लेफ्टिनेण्ट गवर्नर मायकल ओ ड्वायर को गोली चला के मार डाला। उन्हें 31 जुलाई 1940 को फाँसी पर चढ़ा दिया गया। यदि किसी एक घटना ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर सबसे अधिक प्रभाव डाला था तो वह घटना यह जघन्य हत्याकाण्ड ही था। माना जाता है कि यह घटना ही भारत में ब्रिटिश शासन के अंत की शुरुआत बनी।

1997 में महारानी एलिजाबेथ ने इस स्मारक पर मृतकों को श्रद्धांजलि दी थी। 2013 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री डेविड कैमरॉन भी इस स्मारक पर आए थे। विजिटर्स बुक में उन्होंनें लिखा कि 'ब्रिटिश इतिहास की यह एक शर्मनाक घटना थी।'

13 अप्रैल 1919 को बैसाखी का दिन था। बैसाखी वैसे तो पूरे भारत का एक प्रमुख त्योहार है परंतु विशेषकर पंजाब और हरियाणा के किसान सर्दियों की रबी की फसल काट लेने के बाद नए साल की खुशियाँ मनाते हैं। इसी दिन, 13 अप्रैल 1699 को दसवें और अंतिम गुरु गोविंद सिंह ने खालसा पंथ की स्थापना की थी। इसीलिए बैसाखी पंजाब और आस-पास के प्रदेशों का सबसे बड़ा त्योहार है और सिख इसे सामूहिक जन्मदिवस के रूप में मनाते हैं। अमृतसर में उस दिन एक मेला सैकड़ों साल से लगता चला आ रहा था जिसमें उस दिन भी हजारों लोग दूर-दूर से आए थे। आज भी जलियाँवाला बाग में शहीदों की आवाज गूंजित होती है कि - 'जलियाँवाला बाग है देखों, जहां चली थी गोलियां, मरने वाले बोल रहे थे इंकलाब की बोलियाँ।'

अंग्रेजों की मंशा

प्रथम विश्व युद्ध (1914-1918) में भारतीय नेताओं और जनता ने खुल कर ब्रिटिशों का साथ दिया था। 13 लाख भारतीय सैनिक और सेवक यूरोप, अफ्रीका और मिडिल ईस्ट में ब्रिटिशों की तरफ से तैनात किए गए थे जिनमें से 43,000 भारतीय सैनिक युद्ध में शहीद हुए थे। युद्ध समाप्त होने पर भारतीय नेता और जनता ब्रिटिश सरकार से सहयोग और नरमी के रवैये की आशा कर रहे थे परंतु ब्रिटिश सरकार ने मॉण्टेगू-चेम्सफोर्ड सुधार लागू कर दिए जो इस भावना के विपरीत थे।

लेकिन प्रथम विश्व युद्ध के दौरान पंजाब के क्षेत्र में ब्रिटिशों का विरोध कुछ अधिक बढ़ गया था जिसे भारत प्रतिरक्षा विधान (1915) लागू कर के कुचल दिया गया था। उसके बाद 1918 में एक ब्रिटिश जज सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता में एक सेडीशन समिति नियुक्त की गई थी जिसकी जिम्मेदारी ये अध्ययन करना था कि भारत में, विशेषकर पंजाब और बंगाल में ब्रिटिशों का विरोध किन विदेशी शक्तियों की सहायता से हो रहा था। इस समिति के सुझावों के अनुसार भारत प्रतिरक्षा विधान (1915) का विस्तार कर के भारत में रॉलट एक्ट लागू किया गया था, जो आजादी के लिए चल रहे आंदोलन पर रोक लगाने के लिए था, जिसके अंर्तगत ब्रिटिश सरकार को और अधिक अधिकार दिए गए थे जिससे वह प्रेस पर सेंसरशिप लगा सकती थी, नेताओं को बिना मुकदमें के जेल में रख सकती थी, लोगों को बिना वॉरण्ट के गिरफ्तार कर सकती थी, उन पर विशेष ट्रिब्यूनलों और बंद कमरों में बिना जवाबदेही दिए हुए मुकदमा चला सकती थी, आदि। इसके विरोध में पूरा भारत उठ खड़ा हुआ और देश भर में लोग गिरफ्तारियां दे रहे थे। ▪

शिवाजी ने कहा मेरा नहीं धर्म का राज्याभिषेक है

19 फरवरी सन् 1630, नवीन मत/16 अप्रैल 1627 प्राचीन मत की कोख से ज्योति-श्लाका का प्रस्फुटन वह भाग्यशाली दिन, जिसने इतिहास के एक अद्वितीय व्यक्तित्व शिवाजी को इस धर्मभूमि पर अवतीर्ण किया- शून्य से सृष्टि का निर्माण करने वाले कर्तृत्व के सूत्रपात का पावन दिवस।

संसार के गुण-सम्पन्न अनेकानेक महापुरूषों की शिवाजी से तुलना की जा सकती हैः सेना संचालन की दृष्टि से सिकन्दर, सीजर, हानिबाल और नेपोलियन दारूण निराशा की घड़ियों में जनता का मनोधैर्य टिकाए रखने की क्षमता की दृष्टि से लिंकन और चर्चिल, प्रखर राष्ट्रभाव को जागृत और संगठित करने में मैजिनी, वाशिंगटन तथा बिस्मार्क, राष्ट्र-निर्माण-कार्य में आत्मविसर्जन की दृष्टि से कमालपाशा और लेनिन, आसक्ति रहित शासन करने मे मार्क्स आरेलियस तथा चार्ल्स पंचम। किन्तु सम्पूर्ण गुण समुच्चय की दृष्टि से शिवाजी की तुलना किससे करें? कल्याण के सूबेदार की लावण्यमयी पुत्रवधू को मातृवत् सम्मानित करने वाले छत्रपति के चरित्र की तुलना हम अन्य किस सत्ताधीश से करें?

माओ और चे-ग्वेबेरा से लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व शिवाजी ने गुरिल्ला युद्धतंत्र का निर्माण किया। नेपोलियन और हिटलर के मास्को अभियान के अनुभवों के सैकड़ो वर्ष पहले, युद्ध के दौरान संभाव्य आपातकाल में आश्रय स्थान के नाते, सुदूर दक्षिण में उपयुक्त प्रदेश सम्पादित करने की दूरदर्शिता उन्होंने दिखायी। शास्त्र के नाते 'जिओपोलिटिक्स' का विकास होने के 250 वर्ष पूर्व उन्होंने सागरीय सत्ता का सूत्रपात प्रयास पूर्वक किया। इतिहास के जिस कालखण्ड में 'सेक्युलर' राज्य की कल्पना पश्चिम में लोकप्रिय नहीं थी, उस समय शिवाजी ने हिन्दू परम्परा के अनुकूल सम्प्रदाय निरपेक्ष धर्मराज्य की स्थापना की।

अपने कर्तृत्व से सम्पादित राज्य के प्रति पूर्ण अनासक्ति, आध्यात्म-प्रवण होने के कारण अर्जित राज्य छोड़कर संत तुकाराम के समक्ष हरि-संकीर्तन में ही शेष जीवन व्यतीत करने की इच्छा प्रकट करना। एक अन्य अवसर पर तो उन्होंने अपना सम्पूर्ण राज्य ही समर्थ गुरू रामदास स्वामी के चरणों में समर्पित कर दिया था। 6 जून, 1674 के दिन सम्पन्न हुआ शिवाजी का राज्यारोहण किसी व्यक्ति का नहीं, धर्म का राज्यारोहण माना गया। हिन्दवी स्वराज्य की स्थापना, हिन्दू राष्ट्र के सफल प्रत्याक्रमण और हिन्दू संस्कृति के पुनरूत्थान, और विश्व-धर्म की पुनः प्रतिष्ठापना की घोषणा थी।

माओ और चे-ग्वेबेरा से लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व शिवाजी ने गुरिल्ला युद्धतंत्र का निर्माण किया। नेपोलियन और हिटलर के मास्को अभियान के अनुभवों के सैकड़ो वर्ष पहले, युद्ध के दौरान संभाव्य आपातकाल में आश्रय स्थान के नाते, सुदूर दक्षिण में उपयुक्त प्रदेश सम्पादित करने की दूरदर्शिता उन्होंने दिखायी।

शास्त्र के नाते "जिओपोलिटिक्स" का विकास होने के 250 वर्ष पूर्व उन्होंने सागरीय सत्ता का सूत्रपात प्रयास पूर्वक किया।

सनातन काल से हिन्दू राष्ट्र ने जिस आदर्श का संगोपन किया, वही आदर्श मानव रूप धारण कर सिंहासनारूढ़ हो रहा है, यही भावना जनमानस में उस समय थी। स्वयं शिवाजी ने भी समय-समय पर इसी धारणा का उद्घोष किया-

'हिन्दवी स्वराज्य स्थापन होना चाहिए, यह श्री भगवती की इच्छा है। राज्य धर्म का है, शिवबा का नहीं।'

यह तीन सौ साल पूर्व की घटना है। हिन्दुस्थान में चारों ओर पराये आक्रामकों का राज्य, साम्राज्य और धर्म पर आक्रमण, हिन्दुओं में आत्मविश्वास का अभाव, पराये आक्रामकों को हम परास्त कर नहीं सकते, इस तरह का मन का भाव और इन परिस्थितियों में एक बालक मन में निश्चय कि 'मैं पराये आक्रमण का मुकाबला करूगा उनको पीछे हटाऊंगा, अपने स्वराज्य की स्थापना करूंगा, धर्मराज्य की स्थापना करूंगा।' जबकि विरोध में बड़े राज्य और साम्राज्य, बड़ी-बड़ी सेनाएं और सेनापति, राज्य कार्य-धुरंधर लोग और अपार कोष था। उस बालक के पास कुछ नहीं, केवल पांच-पचास अपने समवयस्क लड़कों की लगन। इतनी ही साधन सम्पत्ति थी उसके पास, किन्तु निश्चय के आधार पर इस अवस्था में भी उसने 'रावण रथी बिरथ रघुबीरा' की नाई साधन सम्पन्न राज्यों, साम्राज्यों का मुकाबला करते हुए उनको परास्त करके धर्मराज्य की स्थापना की, जिसकी घोषणा ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी पर हुई। उसको कहा गया 'हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव'। आज की स्थिति में भी इस घटना को, वे ही सिद्धान्त, वे ही आदर्श, वे ही स्वप्न, वे ही लक्ष्य सामने रखकर काम करने वाले राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझना भी आवश्यक है।

किन्तु ऐसा दिखता है कि दोनों बातों में लोगों को काफी कठिनाई हो रही है। हमारी हालत यह है कि आदमी जितना अधिक अध्ययन करता है पराये लोगों और पराये सिद्धान्तों के बारे में उसकी उतनी ही अधिक जानकारी बढ़ती जाती है, किन्तु अपने बारे में उसकी जानकारी धीरे-धीरे कम होने लगती है। अपने आदर्श, अपने सिद्धान्त, अपनी व्यवस्था आदि के विषय में जानकारी रखने की इच्छा नहीं रखता और इसके कारण अपनी बात, अपनी कल्पना, अपनी रचना को समझ पाना हमारे भाइयों के लिए बहुत कठिन हो जाता है। यह वर्तमान शिक्षा पद्धति और प्रचार का परिणाम है। उदाहरण के लिए यदि हमने हिन्दू साम्राज्य का नाम लिया तो लोगों के दिमाग में वह कल्पना नहीं आयेगी जो कल्पना हिन्दू साम्राज्य स्थापित करने वाले छत्रपति शिवाजी के मन में थी। हिन्दू होते हुए भी नये पढ़े-लिखे लोगों का पाश्चिमात्य कल्पनाओं से तो परिचय है किन्तु हिन्दू शब्द में निहित कल्पना से परिचय नहीं है। उनका अध्ययन हिन्दू नहीं, पाश्चिमात्य है। वे 'हिन्दू साम्राज्य' शब्द का अर्थ लगाएंगे, उसका अनुवाद करेंगे और कहेंगे साम्राज्य माने राज्य, वह साम्राज्यवाद है। गलत अर्थ, गलत भाषान्तर, गलत समकक्ष शब्द। केवल उधर की एक कल्पना, इधर की एक कल्पना, थोड़ा सा ऊपर से सादृश्य दिखाई दिया तो कहा कि वही बात है, कोई अन्तर नहीं है। वे यह सत्य जानने का प्रयास नहीं करते कि हिन्दुओं की प्राचीन संस्कृति, प्राचीन परम्परा और प्राचीन इतिहास है। आज के अति प्रगत राष्ट्र जिस समय वन्य अवस्था में थे, उस समय सुसभ्य और दुनिया का नेतृत्व करने वाला राष्ट्र हमारा ही रहा है। इसलिए इस तरह की अनेक कल्पनाएं, कई रचनाएं हमारे यहां हैं जो पश्चिम में देखने के लिए नहीं मिल सकती। उनका स्वतंत्र अध्ययन न करके कुछ इधर का, कुछ उधर का सादृश्य दिखाते हुए भाषान्तर कर दिया जाता है, और कहा जाता है कि साम्राज्यवाद खराब है और साम्राज्यवाद शब्द का प्रयोग गलत है। जैसे अब लोग मानने लगे है कि 'भई! धर्म माने रिलिजन नहीं, रिलिजन माने धर्म नहीं।' लेकिन अब तक वे कहते थे धर्म यानी रिलिजन है, 'रिलिजन यानी धर्म है। यह कहने वाले न रिलिजन को जानते है, न धर्म को।' इस प्राचीन और सनातन राष्ट्र की अपनी कुछ विशेषताएं हैं। यहां के हमारे विशेष शब्दों के लिए अंग्रेजी में कोई समकक्ष शब्द नहीं है। उनका अंग्रेजी पर्याय नहीं हो सकता, ठीक-ठीक भाषान्तर भी नहीं हो सकता। उन्हें अपने प्रकृत रूप में ही जाना जा सकता हैं। यह बात न समझते हुए पश्चिम में जो-जो चीजें है, वहीं चीज यहां भी होनी और दिखाई देनी चाहिए यह दुराग्रह रखते हुए यहां की बातों और विचारों पर वही दोषारोपण किया जाता है जो दोषारोपण पश्चिम की कल्पनाओं पर होता है।

हिन्दू शब्द को यदि समझना है तो इसकी परम्परागत अर्थ-सम्पदा, अर्थच्छाया को समझना होगा। जिसके राज्यारोहण दिवस को हिन्दू साम्राज्य दिनोत्सव के रूप में मनाया जाता है, उस शिवाजी के बारे में क्या हम जानते नहीं कि प्रारम्भ में ही स्पष्ट रूप से उन्होंने कहा था कि 'यह व्यक्ति का नहीं, कुल का नहीं, जाति का नहीं, धर्म का राज्य है।' राज्य स्थापना का प्रयास उन्होंने सत्ता के मोह में नहीं किया। हिन्दू स्वराज्य का निर्माण उन्होंने धर्म के संस्थापक के एक साधन और माध्यम के रूप में किया था। यही कारण है कि हम देखते है कि शिवाजी ने अपने जीवन में तीन बार स्वकष्टार्जित, स्वपराक्रामार्जित सत्ता छोड़ दी थी। अपने गुरू रामदास को उन्होंने गुरूदक्षिणा के रूप में उनकी झोली में अपना स्वकष्टार्जित स्वराज्य समर्पित कर दिया था। जिसके मन में केवल राजनीतिक आकांक्षाएं होती हैं वह ऐसा नहीं कर सकता। जो यह मानता है कि यह मेरा नहीं धर्म का राज्य है, अर्थात् राजसत्ता अपने पास होते हुए भी सत्ता की पिपासा नहीं, सत्ता का मोह नहीं, और जो धर्म स्थापना के एक साधन के रूप में सत्ता सम्पादन की ओर देखता है वही आदमी यह कार्य कर सकता है। किन्तु इस हिन्दू पृष्ठभूमि, मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि, वायुमण्डल की पृष्ठभूमि को न जानते हुए यदि पश्चिम के तौर-तरीकों के संदर्भ में अर्थ लगाए गए तो हिन्दू बातों को समझना बहुत मुश्किल होगा।

शिवाजी के ही संदर्भ में मैं केवल उदाहरण के लिए बताता हूं कि किस तरह हिन्दू अर्थच्छाया न समझने के कारण गलतफहमियां हो सकती है। कम्युनिस्ट पार्टी ऑफ इण्डिया के नेता कामरेड डांगे का कहना है कि हिन्दुओं के हर एक शब्द का कुछ अर्थच्छाया (कनोटेशन) है। उस अर्थच्छाया को न समझने के कारण गड़बड़ होती है, उसे ठीक ढंग से समझा नहीं जा सकता। इसलिए जिन एक-दो कल्पनाओं के बारे में हमारे तथाकथित प्रगतिवादी, प्रोग्रेसिव लोग 'प्रोग्रेसिव' का मतलब, जिसको खुद के बारे में जानकारी नहीं, किन्तु दुनियां के बारे में जानकारी होती है, टीका करते थे। उसका उदाहरण डांगे ने दिया 'यह ठीक है कि अवतार भगवान का ही होता है।'

कई प्रगतिवादी लोगों ने इसका मखौल उड़ाना शुरू किया कि यह दकियानूसी विचार है कैसा अवतार? अवतार की बात गलत है। डांगे ने कहा, 'यह कहने वाले जानते ही नहीं कि अवतार शब्द की विशेष परम्परागत अर्थच्छाया क्या है? उन्होंने बताया कि जब समाज की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में विकृतियां और दोष निर्माण होने के कारण समाज का पतन होने लगता है। उस समय जो महापुरूष सामने आकर उन विकृतियों और दोषों को दूर करके नई परिस्थिति के अनुकूल समाज की रचना करता है, उसे अवतार माना जाता है।' इसका मर्म न समझते हुए, स्वयं को एकमेव प्रगतिवादी और 'प्रगमनशील' बताने वाले लोग यदि कहते है कि अवतार वगैरह क्या है, यह सब पोंगापंथी है, तो ऐसे लोगों के अभिप्राय को हमें कोई महत्व नहीं देना चाहिए। उनको न तो परम्परागत शब्दों का अर्थ ज्ञात है, न उनको ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा ही है। वे पूर्वाग्रह ग्रस्त लोग हैं। वे अपने अतिरिक्त शेष लोगों को बुद्धू समझते है। जिनके मन में इस तरह की एक सस्ती और एक लड़कपन की भावना है, हिन्दू कल्पनाओं के बारे में उनके विचारों को महत्व देना हम आवश्यक नहीं समझते। ▪

कट्टर देशभक्त
डॉ. भीमराव अम्बेडकर

भारत शताब्दियों बाद स्वाधीन हुआ है। हम केवल 150 वर्ष गुलाम थे- पं. नेहरू की यह मान्यता उन्हें पूर्ण रूप से अस्वीकार थीं। अब इस स्वराज्य की रक्षा हमारा प्रथम कर्तव्य हैं।

अपने समाज में भी मानवीय स्वभावों की प्रक्रियानुसार कुछ लोगों ने स्वयं ही जन्मजात बड़प्पन धारण किया था। अतः वे पिछड़े, अविकसित, निर्धन लोगों को निम्न या छोटे समझना अपना अधिकार मानते थे। ऐसे पाखंडी तथाकथित समाज-धुरीणों की बाबासाहेब ने बहुत ही कड़े शब्दों में आलोचना की तथा उनके तर्कों का जोरदार खंडन किया। उनकी इस आलोचना का स्तर देखकर ही उनकी कट्टर देशभक्ति तथा विद्वता का परिचय मिलता है। इस दृष्टि से संविधान-सभा में 5 फरवरी 1950 को दिया गया उनका महत्वपूर्ण भाषण अध्ययन एवं मनन योग्य हैं। उसमें उन्होंने स्पष्ट रूप से व्यक्त किया था कि 'भारत शताब्दियों बाद स्वाधीन हुआ है। हम केवल 150 वर्ष गुलाम थे- पं. नेहरू की यह मान्यता उन्हें पूर्ण रूप से अस्वीकार थीं। अब इस स्वराज्य की रक्षा हमारा प्रथम कर्तव्य हैं। अपने समाज में किसी प्रकार की फूट पुनः हमसे स्वराज्य को छीन लेगी। शताब्दियों की गुलामी के परिणामस्वरूप हममें कुछ विकृतियाँ, उच्च-नीच भेद, आर्थिक विषमता, पिछड़ापन, जातिवाद आदि उत्पन्न हुए हो सकते हैं, परन्तु इसे अपना हथियार बनाकर कोई विदेशी हमारे स्वत्वों का अपहरण करना चाहेंगे तो हम उसे सहन नहीं करेंगे। हम उनकी यह आकांक्षा मिट्टी में मिला देंगे। यह हमारा घरेलू मामला है, इसलिए हम इससे आपस में निबटेंगे। अपने लाभ मात्र या सामाजिक दृष्टि से अनवट स्थिति से निकलने की इच्छा से हम किसी विदेशी के हस्तक नहीं बनेंगे। हमें अपने में उत्पन्न होने वाले जयचंदों से सावधान रहना होगा। अपने जिस राष्ट्र एवं समाज के हम अंग-उपांग हैं, उसके हित को ठीक प्रकार से पहचानें।'

दो महापुरूष-दो दृष्टिकोण

पथभ्रष्ट अहंकारारूढ़ सवर्ण हिन्दू बंधुओं का हृदय-परिवर्तन करने का उन्होंने बहुत प्रयत्न किया। उन दिनों यही काम एक और भी महापुरूष अपने विशेष ढंग से कर रहे थे। वे थे पूज्य महात्मा गांधी। उनकी प्रामाणिकता, निष्ठा, असीम प्रयत्नशीलता तो उनके विरोधियों में भी शंका से परे थी। उन्होंने भी शब्द का नव मूल्यांकन करने के लिए स्वयं को भंगी बताना, उन्हीं के मुहल्ले-मकानों में ठहरना, खाना-पीना प्रारंभ किया। समाज के नामसझ स्वयंभू नेताओं ने जिन्हें अस्पृश्य कहा था, महात्मा जी ने उन्हें हरिजन कहा। यद्यपि भड़काने वाले अनेक निहित स्वार्थी नेता विद्यमान थे, फिर भी इन दोनों महापुरूषों के प्रयत्नों के फलस्वरूप यह दलित-पीड़ित वर्ग विक्षुब्ध होते हुए भी अपनी सामाजिक, आर्थिक, उन्नति के लिए ही प्रयत्नशील रहा। साथ ही इन महापुरूषों के प्रयत्नों के परिणामस्वरूप ही अपना विवेक न खोते हुए उसने अत्याचार सहे, पर अपने हिन्दू समाज के प्रति आत्मीयता में कमी न आने दी।

वैसे यह बात अलग है कि इन दोनों के विचार पूरी तरह आपस में न मिलते हों। डॉ. अम्बेडकर 'हरिजन' शब्द-प्रयोग के विरूद्ध थे। महात्मा जी की सदाशयता को स्वीकार करने के बाद भी वे अनुभव करते थे कि हरिजन नाम देने के लिए सवर्ण अपने को सदैव उपकारकर्ता ही मानते रहेंगे। अतः परस्पर भेद तथा उच्च-नीचता की बात तो बनी ही रही।

यह स्थिति अत्यंत अपमानजनक है, ऐसा वे मानते थे। अतः उन्हें इस हरिजन नामाभिधान से अत्यंत चिढ़ थी। महात्मा गांधी और डॉ. अम्बेडकर दोनों के प्रयत्नों का लक्ष्य समान होने पर भी भूमिका एवं प्रक्रिया (Approach) भिन्न थी। दोनों महान थे। परन्तु एक का प्रयास बाहर से था तो दूसरा स्वयं भुक्तभोगी होने के कारण स्वानुभव से उत्पन्न कसक से मर्माहत होकर प्रयत्नरत था। इतना होने पर भी श्रद्धेय बाबा साहेब प्रतिक्रिया की भावना से सर्वथा अलिप्त थे। महात्मा जी का प्रयास मानवीय भावना से प्रेरित था। जैसे अमेरिका में नीग्रो लोगों के उद्धार के लिए किये जाने वाले प्रयासों में लिंकन का स्थान था, उसी प्रकार भारत में अस्पृश्योद्धार के प्रयासों में महात्मा जी का था। परन्तु डॉ. अम्बेडकर का प्रयास बुकर टी वाशिंगटन, मार्टिन लूथरकिंग के समान था। महानता में समान होने पर भी दोनों की भूमिका में उनकी स्वयं की भिन्न स्थिति के कारण अंतर था-वैसे ही भारत में भी दोनों की भावनाओं को मिले शब्दों के रूप में भिन्नता होने पर भी उनकी अपने समाज के प्रति समान आत्मीयता थी। ▪

समाज और विचारधारा

पं. दीनदयाल उपाध्याय

जो तथाकथित समाजवादी विचारधाराएं हैं, उनमें सबसे बड़ी खराबी है कि व्यक्ति के स्वरूप का और समाज के स्वरूप का जो सही ज्ञान होना चाहिए, वह उनके पास नहीं।

इनमें भी लोग सब ताकत अपने हाथ में लेकर बाकी के समाज को सुख-सुविधाओं से वंचित रखते हैं।

यह तो स्पष्ट है कि समाजवाद के नाम से जो विषय चल रहा है तथा बहुत ही व्यापक और एक प्रकार से प्रभावी रूप से जिन कम्युनिस्ट देशों में इसका प्रसार होता दिख रहा है, उसमें व्यक्ति का और समाज का भी जैसा भला होना चाहिए, वैसा न होकर दूसरी ओर बुरा हाल है। यह बात अलग है कि देशों ने भौतिक दृष्टि से प्रगति कर ली होगी, लेकिन भौतिक प्रगति को समाजवादी पद्धति से जोड़ नहीं सकते। दुनिया के और भी देश हैं, जैसे अमरीका, उसने भी प्रगति की है। कुछ क्षेत्र ऐसे हैं, जिनमें अमरीका ने रूस से अधिक प्रगति की है। कुछ क्षेत्रों में रूस भी आगे निकल गया है। परंतु इन चीजों से विचारधारा के बारे में कोई निष्कर्ष निकालें तो वह गलत होगा। ये निष्कर्ष प्रचार की दृष्टि से निकाले जाते हैं।

पिछले दिनों एकाएक समाचार आया कि चीनी लोग एवरेस्ट पर चढ़ गए। कैसे चढ़ गए, इसका पता नहीं। वह पहले चढ़ रहे थे, इसकी भी खबर नहीं। फिर समाचार आया कि रात के एक बजे चढ़े। यह भी बताया गया कि उनकी यह विजय कम्युनिस्ट विचारधारा की विजय है। पर जानकार लोगों ने बताया कि इन समाचारों से ही पता लगता है कि ये गलत हैं। संभव भी हो तो विचारधारा के साथ तो इसको नहीं जोड़ा जा सकता। लेकिन लोग जोड़ते हैं। अभी अंतरिक्ष में यात्री को भेजा गया, फिर एक महिला को भेजा गया। उसके बारे में भी इसी प्रकार का विचार करते हैं। हमें वास्तविकता का गंभीरता से विचार करना चाहिए। इसके पीछे तर्क या वैज्ञानिक ढंग के साधन नहीं। ये आधुनिक ढंग की रूढ़ियां हैं। जैसे छींक आ गई और लाभ नहीं हुआ तो धारणा हो जाती है कि छींक आ जाने से ही काम बिगड़ा है। यद्यपि इसमें कोई कारण-कार्य संबंध जोड़ा नहीं जा सकता। अनेक बार ऐसे भी हुआ होगा, जब छींक आने पर भी काम हुआ होगा, परंतु उसको कौन ध्यान में रखता है। एक जगह समुद्र में एक मंदिर था। उसके पुजारी ने मंदिर में उन सज्जनों की सूची बनाकर टांगी हुई थी, जिनका समुद्र यात्रा से मंदिर दर्शनार्थ आने पर कुछ न बिगड़ा हो अर्थात् जो डूबे नहीं तथा सकुशल लौट आए थे। इसका मन पर प्रभाव पड़ता है। एक बार एक दार्शनिक ने पुजारी से पूछा, ''जो समुद्र यात्रा पर गए और डूब गए, उनका नाम नहीं लिखा। क्यों?'' वे नाम तो उसके पास नहीं थे। इस प्रकार कुछ को छिपा लिया जाता है और कुछ को प्रकट किया जाता है और फिर गलत तरीके से उनमें कारण-कर्म भाव ढूंढ़ लिया जाता है। वैसे ही आज भी बहुत सी चीजें होती हैं।

हिटलर पिछली बार रूस के खिलाफ लड़ा और रूस जीत गया। इससे पहले वह जापान से हार गया था। तो एकमेव कारण कि रूस में साम्यवाद के कारण यह विजय हुई, ऐसा बताया जाने लगा। परंतु यदि यही तर्क लगाया जाए तो इंग्लैंड और अमरीका में तो साम्यवाद नहीं था। वे कैसे जीत गए और अमरीका वाले कह सकते हैं कि पिछली लड़ाई में अमरीका के आने के बाद जो हिटलर लड़ा तो वह हारा। तो यह सब हुआ अमरीका के पूंजीवाद के कारण। वह यह

समाज की एक सत्ता मानने के बाद समाज की शक्ति का अंकन इस प्रकार नहीं होगा। वह भिन्न वस्तु है। हम उसके एक अंग हैं, परंतु वैसे ही हैं जैसे शरीर का हाथ से संबंध होता है।

हम उसके एक अवयव हैं, परंतु हमारी एक स्वतंत्र सत्ता भी है। एक प्रकार के लोग तो यह मानते हैं कि समाज एक सत्ता है और मनुष्य एक पुर्जा मात्र है।

कह सकता है, पर इसमें भी कोई बल नहीं।

इन चीजों को हटाकर देखें तो पता लगेगा कि जो तथाकथित समाजवादी विचारधाराएं हैं, उनमें सबसे बड़ी खराबी है कि व्यक्ति के स्वरूप का और समाज के स्वरूप का जो सही ज्ञान होना चाहिए, वह उनके पास नहीं। इनमें भी लोग सब ताकत अपने हाथ में लेकर बाकी के समाज को सुख-सुविधाओं से वंचित रखते हैं।

यह विचारधारा वहीं आकर खड़ी हो गई, जहां से इसने प्रारंभ किया था। व्यक्ति जितना गुलाम पूंजीवादी यूरोप में था, संभवतः उससे अधिक गुलाम समाजवादी व्यवस्था में आज है। जितनी विषमताएं पूंजीवादी यूरोप में थीं, उससे अधिक विषमताएं समाजवादी यूरोप में हैं। विषमताओं का मापदंड बदल लिया गया है, लेकिन उससे अधिक विषमताएं लाई गई हैं। विषमताओं का रूप बदल गया है। जैसे किसी को रुपया मासिक मिले और किसी को दस हजार रुपए तो यह कितनी बड़ी विषमता है। यह विषमता कम होनी चाहिए। लेकिन यदि कोई दस हजार रुपए को यह रूप दे कि वेतन मिलेगा दो हजार शेष की बाकी चीजें मुफ्त, जैसे मकान, यातायात व्यय आदि। ये सब सरकार उसे मुफ्त देगी। नतीजा यही होगा कि विषमता शायद और बढ़ जाएगी। जब अंग्रेज यहां थे तो उनके वायसराय के एक्जीक्यूटिव के जो मेंबर थे, उनको साढ़े तीन या चार हजार तनख्वाह मिलती थी। इनकम टैक्स देने के बाद बाईस सौ-तेईस सौ रुपया बचता था। नई सरकार ने तनख्वाह को कम कर दिया। तनख्वाह दो हजार सात सौ पचास रुपए कर दी, लेकिन इनकम टैक्स माफ कर दिया। यदि आप देखेंगे कि खुश्चेव पर कितना खर्च होता है तो अनुमान लगेगा कि उसकी तनख्वाह तो बढ़ी नहीं है। रूस में आज भी आय का अनुपात कुछ के कहने के अनुसार एक और दौ सौ है। एक और अस्सी तो स्वीकार किया ही जाएगा।

वे शोषण समाप्त करने की बात कहते हैं। लेकिन आर्थिक क्षेत्र में शोषण समाप्त हुआ मान लिया जाए तो भी राजनीतिक दृष्टि से शोषण प्रारंभ कर दिया है कि मार्क्स ने जो अपने सारे निष्कर्ष निकाले थे तो उसमें 'सरप्लस वैल्यू' का सिद्धांत रखा था। उस अर्थव्यवस्था का आधार था जहां मंडी में मूल्य मांग और पूर्ति के संतुलन में तय होता है। फिर वास्तविक मूल्य क्या है, विनियम मूल्य क्या है। वह कितनी मात्रा में सही है। इन सबके पचड़े में मैं नहीं पड़ता। लेकिन कम्युनिस्ट देशों में 'मार्केट इकोनॉमी' नाम की चीज है ही नहीं। यह 'सरप्लस वैल्यू' मजदूर के पास जाती है, यह सच नहीं। यह आज राज्य के पास पहुंच जाती है और फिर कुछ व्यक्तियों के पास जाती है। आरंभ में शक्ति सुविधाएं कुछ हाथों में केंद्रित थीं। झगड़ा यहीं से प्रारंभ हुआ था कि शक्ति सुविधा कुछ हाथों में नहीं रहनी चाहिए, परंतु शक्ति कुछ ही हाथों में केंद्रित रही और बाकी के लोगों में अंतर नहीं आया, बल्कि जिन देशों में कम्युनिस्ट पद्धति नहीं, वहां अवश्य कुछ अंतर आया है।

गलती यह है कि व्यक्ति और समाज का वास्तविक संबंध क्या है, स्वरूप क्या है, इसको लोग समझ नहीं पाए। समाज लोगों को मिलाकर बना है, यह गलत है। व्यक्तियों का समूह समाज नहीं, समाज की अपनी एक सत्ता है, जीवमान सत्ता है उतनी ही, जितनी एक प्राणी की होती है। प्राणी उसका अंग जरूर है लेकिन यह एक निर्जीव अंग जैसा नहीं, जैसे कि मोटर के पुर्जे होते हैं। यह वैसा ही है जैसा एक पूरा पेड़ होता है और उस पेड़ का एक पत्ता। पत्तों को मिलाकर पेड़ नहीं बनता। कोई यह कहेगा क्या कि हाथ, पैर, नाक, कान मिलाकर व्यक्ति बन जाता है? पुर्जों को मिलाकर मोटर बनेगी, पर मनुष्य शरीर के लिए ऐसा नहीं। 19वीं सदी में यही लोग बोलते थे कि जैसी मशीन है, शरीर भी वैसा ही है, जरा जटिल है। परंतु मशीन तो पुर्जे मिलाने से तैयार हो जाती है, शरीर नहीं हो पाता। क्योंकि उसमें प्राण फूंकना जरा टेढ़ा काम है। अभी तक किसी विज्ञानवेत्ता ने इसमें सफलता नहीं पाई।

पंचतंत्र में एक कहानी है कि कुछ पढ़ने वालों में एक को प्राण फूंकने की विद्या आती थी। उसने रास्ते में हड्डियों को देखा तो जोड़-जोड़कर उसका ढांचा खड़ा कर दिया। वह व्याघ्र था। जब प्राण फूंकने लगा तो उसका दूसरा साथी जो व्यावहारिक था, उसे मना करने लगा कि यह जीवित हो जाएगा तो तुझे खा जाएगा। उसके न मानने पर साथी तो पेड़ पर चढ़ गया और इधर जैसे ही व्याघ्र में जान आई। उसने सबसे पहले इसी का शिकार किया। यह कहानी केवल इसलिए है कि विद्या के साथ व्यावहारिकता भी चाहिए। व्यावहारिकता ने उसकी जान बचा दी। लेकिन यह तो एक कहानी है। वस्तुतः कोई प्राण फूंक नहीं सकता।

यह तो सत्य है कि शरीर में एक प्राण है। वास्तव में तभी इसके अंग-प्रत्यंग शरीर के सुख-दुःख को अनुभव करते हैं और इसी नाते सब काम करते हैं। समाज भी एक प्राणवान चीज है। समाज में भी वह गुण है, जो व्यक्ति के अंदर है। मनोवैज्ञानिक तो इसको स्वीकार भी करने लगे हैं कि समाज का मस्तिष्क होता है, जिसे group mind नाम दिया गया है। क्योंकि व्यक्तिगत रूप से जो खून देखकर भी घबराएगा, वह भी राष्ट्र के लिए लड़ता है और फौरन उत्साह से लड़ने के लिए तैयार हो जाता है। जैसे व्यक्ति में भाव होते हैं, कर्म होते हैं, वैसे ही समाज की भावनाएं होती हैं, कर्म होते हैं। यह समाज के सभी व्यक्तियों के भावों या कर्मों का कुल जोड़ नहीं होता। इसके लिए गणित के अनुसार कैलकुलेशन का विचार नहीं किया जा सकता। यदि सबकी ताकत को जोड़ दिया जाए, जैसे राष्ट्रीय आय के लिए करते हैं कि प्रत्येक की आय का योग औसत निकाल लिया, वैसे समाज की शक्ति के लिए नहीं होगा।

समाज की एक सत्ता मानने के बाद समाज की शक्ति का अंकन इस प्रकार नहीं होगा। वह भिन्न वस्तु है। हम उसके एक अंग हैं, परंतु वैसे ही हैं जैसे शरीर का हाथ से संबंध होता है। हम उसके एक अवयव हैं, परंतु हमारी एक स्वतंत्र सत्ता भी है। एक प्रकार के लोग तो यह मानते हैं कि समाज एक सत्ता है और मनुष्य एक पुर्जा मात्र है। दूसरे मानते हैं कि व्यक्ति सत्ता है, समाज समूह मात्र है। दोनों गलत हैं। व्यक्ति की अपनी सत्ता है, समाज की भी उतनी ही प्राणवान सत्ता है। दोनों एक-दूसरे से संबंधित हैं। हाथ शरीर से संबंधित है, परंतु हाथ की अपनी विशेषता है। प्रत्येक जीवाणु की अपनी सत्ता है। वह शरीर की सत्ता से मिलकर काम करते हैं। ▪

भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने मध्यप्रदेश राज्य कोर कमेटी की बैठक की।

केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी ने छिंदवाड़ा में 'महाविजय उद्घोष जनसभा' को संबोधित किया।

केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने छिंदवाड़ा के आँचल कुंड में पूजन किया।

संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने बूथ विस्तारक अभियान-2 के अंतर्गत विधानसभा क्षेत्र की प्रबंध समिति की बैठक ली।

संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने बूथ सशक्तिकरण अभियान टोली की कार्यशाला को संबोधित किया।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान जी तथा प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने आँचलकुंड धाम में पूजा की।

सह संगठन महामंत्री श्री शिवप्रकाश जी, प्रदेश प्रभारी श्री मुरलीधर राव जी, प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी, संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने विधानसभा संयोजकों की बैठक को संबोधित किया।

सह संगठन महामंत्री श्री शिवप्रकाश जी, प्रदेश प्रभारी श्री मुरलीधर राव जी, प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी एवं प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानन्द जी ने सभी प्रकोष्ठों की संयुक्त बैठक को संबोधित किया।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA
वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH · ONE FAMILY · ONE FUTURE

मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना